MPPSC FORESTRY MAIN EXAM 2023

TRIBOLOGY

2024

Module - 5

Hornbill Classes

Congratulations

To all our successful candidates in

MADHYA PRADESH FOREST SERVICE 2020

Assistant Conservator of Forest (ACF)

1 Ashish Vijaywar

2 Ankit Kumar Jain

3 Sachindra Singh Tomar

4 Shubham Soni

6 Rahul Chouhan

5 Out of 6 Selections in MPPSC Forest (ACF) 2020

RANGE FOREST OFFICER (RFO)

1 Gourav Dubey

2 Saurabh Dubey

3 Pawan Sharma

4 Manish Sharma

5 Kuldeep Baghel

6 Sushil Parmar

7 Lantav Jain

9 Shubham Raghuvanshi

10 Manisha Mukati

12 Vedant Goutam

13 Parag Jain

16 Shri Ram Dwivedi

19 Anil Kumar

20 Shashi Prakash Pandey

21 Anubhav Jain

22 Ravindran Gupta

24 Kuldeep Bohare

25 Shubham Tiwari

26 Yogesh Dhote

27 Piyush Shukla

28 Yogendra Singh Baghel

30 Abhilash Pathak

31 Manav Patidar

33 Omkar Nath Mishra

34 Amit Singh Chandel

MADHYA PRADESH FOREST SERVICE (MAIN) EXAM 2023

Tribology

EDITION : 2023

+917223970423 Hornbillclasses@gmail.com

Gole ka mandir, Morar, Gwalior (MP) 474005

INDEX

Unit - 5		
1.	म.प्र. का जनजातीय परिदृश्य और सरकार द्वारा उनके विकास में सहयोग	1 – 3
2.	जनगणना आंकडे (2011)	3 – 5
3.	गोंड जनजाति का प्राचीन इतिहास	5 – 8
4.	गढ़ा एवं देवगढ़ राज्य	9 – 10
5.	गोंड जनजाति	11 – 16
6.	भील जनजाति	16 - 27
7.	बैगा जनजाति	27 – 35
8.	भारिया जनजाति	35 – 41
9.	कोरकू जनजाति	41 – 47
10.	सहरिया जनजाति	47 – 52
11.	कोल जनजाति	53 – 56
12.	आदिवासी सलाहकार परिषद	56 – 57
13.	जनजाति शिक्षा, पुरुस्कार एवं उनके लिए संचालित कल्याणकारी योजना	57 – 61
14.	आदिवासी शोध केन्द्र संग्रहालय	62 – 65
15.	मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति वर्ग की भूमिका	65 – 69
16.	जनजाति कला एवं उनसे संबधित कलाकार	70 – 75
17.	मध्यप्रदेश से संबंधित अन्य जनजाति और युवा गृह	75 – 83
18.	मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग और मध्यप्रदेश व्यवसायिक मण्डल द्वारा विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न	85 – 109

सर्वाधिक सुरक्षित हैं- इस प्रकाशन का कोई भी अंश अथवा इसमें संकलित कोई भी सामग्री प्रकाशक की लिखित पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में संग्रहीकृत अनूदित, कम्प्यूटरीकृत, छाया चित्रांकित या किसी भी पद्धति से किसी भी प्रारूप में किसी भी साधन- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिकी प्रतिलिपीकरण, ध्वनि अंकन आदि से प्रस्तुत नहीं की जा सकेगी।

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक व सामग्री आपके व्यक्तिगत उपयोग के लिये प्रदान की गई है और इसे आपके व्यक्तिगत Contact No. से Watermark किया गया है। इस पुस्तक को किसी अन्य व्यक्ति / संस्था / समूह के साथ साझा करना, फोटो कॉपी कराना आदि पूर्णत: वर्जित है, यदि आप इस प्रकार की किसी भी गतिविधि में सम्मिलित पाये जाते हैं, तो ऐसी स्थिति में आपका Registration समाप्त कर दिया जायेगा और आपके विरूद्ध उचित दण्डात्मक कार्यवाही की जायेगी।

UNIT 5

म.प्र. का जनजातीय परिदृश्य

1.1 म.प्र. का जनजातीय परिदृश्य और सरकार द्वारा उनके विकास में सहयोग

जनजाति अथवा आदिवासी ऐसे मानव समूह है। जो वर्तमान में भी विकास के सोपान पर पिछड़े हुये है। भारत के संविधान में अनुच्छेद 366 (25) के अनुसार जनजातियों से तात्पर्य उन जनजातीय समुदायो के अंशो या समूह से है। जो संविधान के अनुच्छेद 342(1) में अनुसूचित जनजातियों के रूप में माने गये है। संसद विधि द्वारा किसी जनजातीय समूह को अनुसूचित जनजाति समूह में सम्मिलित कर सकती हैं अथवा उसे हटा सकती है।

- वर्तमान में म.प्र. में 43 अनुसूचित जनजाति निवासरत है। जो पहले 46 थी परन्तु कीर, मीना, पारधी को अब विलोपित कर दिया गया है। [Mppsc Tourism 2013; Mppsc Assistance Registrar Examination 2022]
- प्राचीन संस्कृत ग्रथो में आदिवासी को वनवासी या अत्विका भी कहां जाता हैं।
- **बिट्रिश** काल में **जार्ज ग्रियर्सन** ने आदिवासियों को पहाडी जनजाति कहा है।
- महात्मा गांधी ने इन्हे गिरिजन तथा गोबिन्द सदाशिव घुरिये ने इन्हे पिछडे हिन्दू कहा है।
- जनजाति समुदाय के लिये प्रथम बार आदिवासी शब्द का प्रयोग ठक्कर बापा ने किया। जनजातियों के लिये इनके द्वारा किये गये कार्य के कारण इन्हे जनजातियो का पितृ पुरूष कहा जाता है। [Mp Vyapam 2017]
- ठक्कर बापा के द्वारा जनजातियों पर **"Tribes of India"** नामक किताब 1950 में लिखी गई।
- वॉरियर एल्विन ने जनजाति समूहो की कला व संस्कृति उनके जीवन पर आधारित पुस्तक मुरिया और उनका घोटुल **(1947)** [Mp Vyapam 2017] , द बैगा (1939) [MPPSC Animal Husbandry And Veterinary Science 2021] लिखी।
- प्रोफेसर **श्यामचरण दुबे** [MPPSC SFM 2010] एवं इनकी पत्नी **लीला दुबे** ने तत्कालीन मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ वाले क्षेत्र में गोंड जनजाति का सामाजिक एवं संस्कृतिक अध्ययन किया है।

Exercise no 1

1. मध्यप्रदेश में कुल कितनी अनुसूचित जनजाति निवास करती है? [MP PSC Tourism 2013, MPPSC Assistant Registrar Examination 2022]

   (a) 46
   (b) 47
   (c) 48
   (d) 49

   इसका सही उत्तर 43 है, परंतु MPPSC को जो सही लगता है। वही सही है, क्योंकि लोक सेवा आयोग सुनता तो किसी की नहीं है। विकल्प के अनुसार (a) सही है।

2. गोंड जनजाति का सामाजिक एवं संस्करतिक अध्ययन निम्न में से किसने किया है? [MPPSC Forest Mains 2010]

   (a) प्रोफेसर श्यामचरण दुबे
   (b) डॉ. आर. के. मुखर्जी
   (c) हाबहाउस
   (d) बेरियर एलविन

3. आदिवासी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था। [Mp Vyapam 2017]

   (a) ठक्कर बापा
   (b) महात्मा गांधी
   (c) जवाहरलाल नेहरू
   (d) सरदार वल्लभभाई पटेल

4. मुरिया और उनका घोटुल नामक पुस्तक के लेखक कौन है? [Mp Vyapam 2017] (a) ठक्कर बापा (b) बेरियर एलविन (c) महात्मा गांधी (d) डॉ. आर. के. मुखर्जी	5. दि बैगा पुस्तक के लेखक कौन है। [MPPSC Animal Husbandry And Veterinary Science 2021] (a) वैरियर एल्विन (b) हरीश चन्द्र उप्रेती (c) नदीम हस्सन (d) मजूमदार एवं मदान
1. (a) 2. (a) 3. (a) 4. (b) 5. (a)	

▶ **भौगोलिक वितरण** : म.प्र. की भौगोलिक स्थिति को देखते हुये अधिकांश जनजातियो का संकेन्द्रण पूर्वी, दक्षिणी, व पश्चिमी भाग में है। जनजाति जनसंख्या के संकेन्द्रण के आधार पर म.प्र. को निम्न भागो में बाटा गया है।

- **पूर्वी क्षेत्र :** पूर्वी क्षेत्र के अंतर्गत अधिकतर बैगा, कोल, गोंड, आदि जनजाति निवास करती है। पूर्वी क्षेत्र में मंडला, डिडोरी, उमरिया, बालाघाट के क्षेत्रों के कुछ हिस्सों में बैगा चक बनाये गये।
- **दक्षिणी क्षेत्र :** इस क्षेत्र में गोंड तथा कोरकू जनजातिया मुख्यतः निवास करती है। इसके अन्तर्गत नर्मदा के दक्षिणी किनारो के जिले आते है।
- **पश्चिमी क्षेत्र:** पश्चिमी क्षेत्र के अंतर्गत मुख्यतः भील व इनकी उपजातियां निवास करती हैं इसके अन्तर्गत झाबुआ, अलीराजपुर, मंदसौर, धार आदि जिले सम्मिलित किये गये।

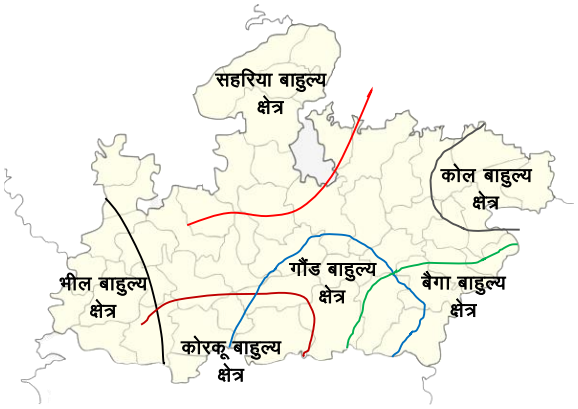

- **उत्तरी क्षेत्र:** इस क्षेत्र के अंतर्गत मुख्यतः सहरिया जनजाति निवास करती है। इनके अंतर्गत श्योपुर, भिण्ड, मुरैना, गुना, शिवपुरी, ग्वालियर आदि क्षेत्र आते है।[MPPSC SFS 2021]

म.प्र. के सात संभांग व 20 जिले अनुसूचित जनजाति संभाग जिलो के रूप में नामित है। तथा 89 विकासखण्ड (मंडल) अनुसूचित जनजाति विकास खण्ड के रूप में नामित है।

- सर्वाधिक अनुसूचित मण्डल धार जिले में 12 हैं
- सर्वाधिक अनुसूचित जिले इंदौर संभाग में 7 है।
- म.प्र. में आदिवासी संभाग, जिले व मण्डल बार सूची निम्न प्रकार है।

संभाग	जिला	मण्डल (विकासखण्ड)
1. इंदौर संभाग	खण्डवा	1
	खरगौन	7
	बड़वानी	7
	झाबुआ	6
	अलीराजपुर	6
	बुरहानपुर	1
	धार	12
2. जबलपुर	मण्डला	9 [MPPSC SFS 2020]
	सिवनी	5

	छिंदवाड़ा	4
	बालाघाट	3
	डिण्डौरी	7
3. नर्मदापुरम	नर्मदापुरम	1
	बैतूल	7
4. उज्जैन संभाग	रतलाम	2
5. शहडोल संभाग	शहडोल	4
	अनूपपूर	4
	उमरिया	1
6. रीवा संभाग	सीधी	1
7. चम्बल संभाग	श्योपुर	1

Exercise no 1	
1. मण्डला जिले में कितने जनजातीय खण्ड है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020] (a) 9 (b) 8 (c) 10 (d) 7	2. चम्बल क्षेत्र में रहने वाली विशेष पिछड़ी जनजाति कौन-सी है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] (a) सहरिया (b) मुरिया (c) कोरकू (d) भारिया
1. (a) 2. (a)	

1.2 जनगणना आंकडे (2011)

- वर्तमान में म.प्र. 15316784 व्यक्ति जनजाति वर्ग के निवासरत है।
- म.प्र. में जनजाति जनसंख्या के **21.10 प्रतिशत** [Mppsc SFM Re-Exam 2019] है। भारत के लिये यह 8.6 प्रतिशत है। तथा देश की सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या म.प्र. में निवास करती है। देश की कुल अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का 14.69 प्रतिशत म.प्र. में निवासरत है। तथा प्रतिशतता का दृष्टि से 13 वां स्थान है।
- म.प्र. में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति **धार** [Mppsc Assistant Registar 2018] जिले में निवास करती है तथा प्रतिशत की दृष्टि से **अलीराजपुर** [MPPSC SSE 2018] जिले में सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या निवासरत है।
- न्यूनतम अनुसूचित जनजाति जनसंख्या व प्रतिशत की दृष्टि से **भिण्ड** जिला है।
- सर्वाधिक अनुसूचित जनसंख्या दशकीय वृद्धि वाला जिला छतरपुर व न्यूनतम दशकीय वृद्धि वाला जिला मंदसौर है।
- म.प्र. में आदिवासी जनसंख्या साक्षरता दर **50.6 प्रतिशत** [MPPSC SFS 2020] हैं। जिसमें पुरूष साक्षरता दर 59.6 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 41.5 प्रतिशत है। सम्पूर्ण भारत के लिये साक्षरता दर 59.00 प्रतिशत है। जिसमें पुरूष साक्षरता 68.50 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 49.40 प्रतिशत है।

▶ **जनजाति बार सारणी**

1. भील
2. गोंड
3. कोल

म.प्र में सबसे बड़ी जनजाति **भील** [Mp Vyapam 2016] हैं।

सबसे छोटी जनजाति कमार (सीधी) हैं

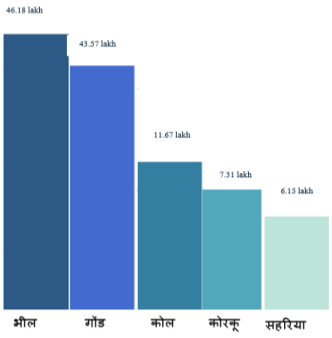

वर्ष 2011 की जनगणना अनुसार जनजाति संख्या

1.	अनुसूचित जनजाति मे साक्षरता दर (सर्वाधिक साक्षर जनजाति परधान)	50.6 प्रतिशत
2.	अनुसूचित जनजाति का लिंगानुपात	984
3.	अनुसूचित जनजाति ग्रामीण का लिंगानुपात	986
4.	अनुसूचित जनजाति नगरीय का लिंगानुपात	956
5.	अनुसूचित जनजाति का सर्वाधिक साक्षर जिला	बालाघाट
6.	अनुसूचित जनजाति की दशकीय वृद्धि दर	25.2 प्रतिशत
7.	सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाला जिला	धार (1222814)
8.	सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला	अलीराजपुर (89%)
9.	न्यूनतम जनजाति जनसंख्या वाला जिला	भिण्ड (6131)
10.	न्यूनतम जनजाति जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला	भिण्ड (0 .4%)

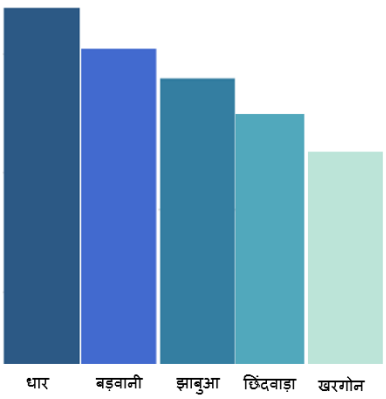

अनुसूचित जनजाति सर्वाधिक जनसंख्या वाले जिले

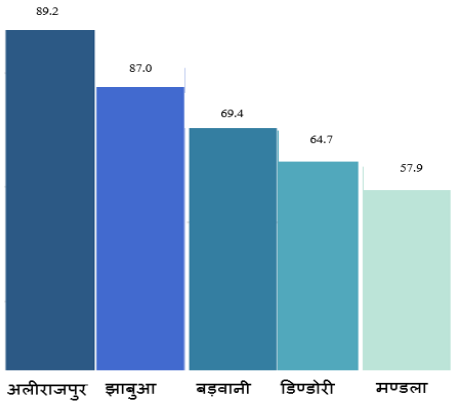

अनुसूचित जनजाति सर्वाधिक जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले

Exercise no 2

1. 2011 की जनगणना अनुसार मध्यप्रदेश के जनजातियों की साक्षरता दर ..... है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
   (a) 50.6%
   (b) 49.6%
   (c) 48.6%
   (d) 51.6%
2. 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत कितना है। [MPPSC Social Work 2021]
   (a) 31.2
   (b) 41.1
   (c) 21.1
   (d) 35.1
3. 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में जनजातियों की जनसंख्या प्रतिशत में कितनी है। [MPPSC SFM SP Exam 2019]
   (a) 20.1%
   (b) 21.1%
   (c) 21.7%
   (d) 23.7%
4. सर्वाधिक जनजाति आबादी वाला जिला है [MPPSC Assistant Registrar 2018]
   (a) शहडोल
   (b) बालाघाट
   (c) मण्डला
   (d) झाबुआ
5. ..... जनजाति मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी जनजातिय समूह है और सभी जिलों में निवास करते है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
   (a) भील
   (b) गोंड
   (c) कोल
   (d) कोरकू
6. मध्यप्रदेश के किस जिले में जनजातीय जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत है [MPPSC Pre 2018]
   (a) झाबुआ
   (b) अलीराजपुर
   (c) बड़वानी
   (d) डिंडोरी
7. 2011 की जनगणना अनुसार मध्यप्रदेश के जनजातियों की साक्षरता दर ..... है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
   (b) 50.6%
   (c) 49.6%
   (d) 48.6%
   (e) 51.6%
8. इस जिले में आदिवासी नागरिकों की संख्या कम है [MP High Court Grade 2/3 2012]
   (a) बालाघाट
   (b) श्योपुर
   (c) बड़वानी
   (d) डिण्डौरी

1. (a) 2. (c) 3. (b) 4. (b)

1.3 गोंड जनजाति का प्राचीन इतिहास

मध्यकाल में म.प्र. के एक बड़े भू-भाग पर गोंडो ने लम्बे समय तक शासन किया है। आज हम जिन्हें आदिवासी ओर पिछड़ा समझते है। उस गोंड जनजाति का शासन गढ़ा में पन्द्रहवीं सदी के अंत से प्रारम्भ होकर अठारहवी सदी के मध्यकाल तक रहा है। देवगढ़ के गोंड राजवंश का प्रारम्भ सोलहवी सदी के अंत से अठारवी सदी के मध्यकाल तक रहा है। गोंड राजवंशों का इतिहास हमें फारसी ग्रंथों व मराठी इतिहासों से प्राप्त होता है।

- म.प्र. में प्राचीन समय में गोंड रियासते गढ़ा देवगढ़, मकड़ाई, कवर्धा, रायगढ़, सक्ती और सांरगगढ़ थी। अन्त की पाँच रियासते छोटी थी। परन्तु काफी अरसे तक रही।
- वर्तमान म.प्र. में गोंड राज्य कुछ इस प्रकार है।

1. गढ़ा (मंडला)
2. देवगढ़ (छिंदवाडा)
3. मकडाई (हरदा)

- तीन रियासते छत्तीसगढ़ राज्य व एक रियासत महाराष्ट्र राज्य में है।
  1. कवर्धा - छत्तीसगढ़
  2. रायगढ़ - छत्तीसगढ़
  3. सक्ती - छत्तीसगढ़
- महाराष्ट्र में सारंगढ़ रियासत थी।
- म.प्र. का गढ़ा गोंड राज्य अत्यधिक सम्पन्न राज्य था।
- म.प्र. के गढ़ा राज्य के शासको का वर्णन हमें दो जगह से प्राप्त होता है।
  1. रामनगर (मण्डला) के शिलालेख से 54 शासकों की जानकारी मिलती है।
  2. गढेशनृ पवर्णनम् नामक संस्कृत ग्रंथ के श्लोक में 63 शासको का वर्णन है।
- गढ़ा राज्य का संस्थापक राजा यादवराय या जादूराय था। जिसने अपना राज्यारोहण लगभग 14 वी शताब्दी के उत्तरार्ध में किया।

शासक व शासन क्रम

यादवराय या **जादूराय**
[14 वी शताब्दी]
↓
खरजी 1440–1460
↓
गौरक्षा दास 1460–1480
↓
संग्रामशाह 1510–1543
↓
दलपत शाह 1543–1550
↓
बीरांगना दुर्गावती (सरंक्षिका बीर नारायण की) 1550–1564
↓
आसफ खॉ ने युद्ध के द्वारा 1564 में जीत लिया

- कलचुरी वंश के पतन के बाद गोंड राज्य की स्थापना हुई।
- गोंड वंश का प्रतापी शासक संग्राम शाह के पिता अर्जुनदास थे। इनकी असमय मृत्यु के कारण 1510 ई. में संग्राम शाह का राज्य अभिषेक हुआ।
- गोंड राज्य वंश पहला शासक जिसे पितृहन्ता (पिता को मारने वाला) संग्राम शाह (आमहणदास बचपन का नाम) है।
- संग्राम शाह रीवा के राजा वीरसिंह देव की शरण में रहा।
- संग्राम शाह को 52 गढ़ो का स्वामी जहां जाता है। तथा चोरागढ़ (नरसिंहपुर) के किले का निर्माण किया।
- **दलपत शाह** [MPPSC SFM 2021] (पुत्र संग्राम शाह) का विवाह राठ महोबा के चंदेल राजा [Mp Vyapam S.I.2017] सालवाहन [Mppsc Dsp Radio 2020] की पुत्री दुर्गावती से हुआ।
- संग्राम शाह ने गढ़ा की राजधानी गढ़ा से सिगौंरगढ़ स्थानांतरित अपने राज्यरोहण के बाद की।
- **रानी दुर्गावती** ने राजधानी सिगौंरगढ़ के स्थान पर चोरागढ़ स्थानांतरित कर ली।
- गढ़ा राज्य पर मुगलों के द्वारा 1564 में आसफ खॉ जो उस समय (कड़ा मानिकपुर का मुगल सूबेदार) के नेतृत्व में आक्रमण किया गया।
- रानी दुर्गावती के प्रधानमंत्री का नाम आधार सिंह व उनका प्रिय **सफेद हाथी सरमन** था। जबलपुर के निकट बरेला [MPPSC SSE 2016] में रानी दुर्गावती की समाधि है।
- मधुकर शाह ने चन्द्रशाह (पिता) और अपने बड़े भाई की हत्या कर दी।
- 1634 में गढ़ा राज्य पर पुनः भीषण आक्रमण हुआ। जिसका नेतृत्व जुझार सिंह बुन्देला ने किया।
- चोरागढ़ से राजधानी रामनगर, नर्मदा के किनारे सतपुड़ा के पहाडो में हृदयशाह ने बनाई।
- रामनगर शिलालेख गोंड राजा हृदयशाह के समय जयदेव ने लिखा।
- गोंड साम्राज्य से सम्बन्धित विवरण रामनगर व बटियागढ़ (दमोह) शिलालेख से मिलता है। रामनगर शिलालेख का लेखक जयदेव था।
- नरेन्द्र शाह ने राजधानी रामनगर से मंडला स्थांनातरित कर दी।
- मण्डला पर मराठों का आक्रमण 1741 में हुआ।
- हृदयशाह ने हृदयकौतुक और हृदयप्रकाश की रचना की।

महल	निर्माता
1. भगवत राय का महल	हृदयशाह
2. मदन महल	मदन शाह
3. मोती महल	हृदयशाह

4. बघेलिन रानी का महल	हृदयशाह
5. मंडला का दुर्ग	नरेन्द्र शाह

- गोंड वंश के राजाओं द्वारा लडे गये युद्ध:-
  1. **नरई या चोरागढ़ का युद्ध -** 1564 (रानी दुर्गावती व अकबर) अबुल फजल [MPPSC ADPO 2021] ने अपनी पुस्तक अकबरनामा में रानी दुर्गावती की राजधानी चौरागढ़ की लूट का वर्णन किया है।
  2. **चौरागढ़ का युद्ध -** 1634 (प्रेमशाह व जुझार सिंह बुंदेला)
- रानी दुर्गावती के समय सुप्रसिद्ध संत विट्ठलनाथ गढ़ा पधारे।
- गढ़ा राज्य की राजधानी का क्रम

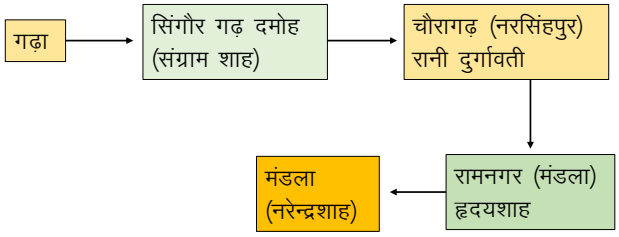

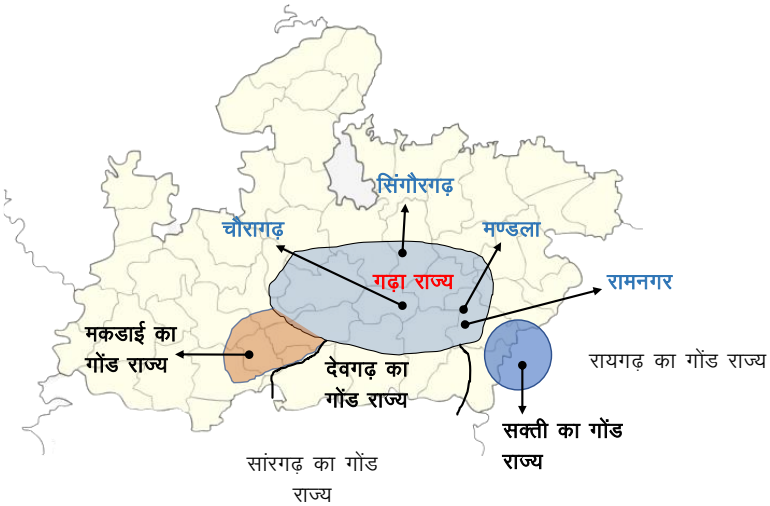

आसफ खॉ
↓
मेहंदी कासिम खॉ
↓
शाहकुली खान, काकर अलीखान
↓
दलपति शाह का भाई चन्द्रशाह 1576 तक
↓
मधुकर शाह 1576–1586
↓
प्रेमशाह 1586–1634
↓
हृदयशाह 1634–1672
↓
छत्र शाह 1672–1684
↓
केसरी शाह
↓
हरी सिंह (केसरी का चाचा)
↓
पहाड़ सिंह
↓
नरेन्द्र शाह (केसरी का लड़का)1713 में मृत्यु
↓
महाराज शाह 1731–1742
↓
शिवराज शाह 1742–1749
↓
दुर्जन शाह 1749–1749
↓
निजाम शाह 1749
↓
महीपाल सिंह
↓
नरहरिशाह 1776
↓
सुमेरशाह
↓
शंकरशाह (राजा)[MPPSC Dental Surgeo Exam 2022]
↓
रघुनाथ शाह (राजकुमार)

▶ गोंड राज्य की कला व संस्कृति

रचना	रचनाकार	राज्याश्रय
रस रत्नमाला [Mppsc ITI Principal 2023]	संग्रामशाह	
दिव्यनिर्णय नृसिंह चम्प	केशव लौगाक्षि	दलपतशाह
दुर्गावती प्रकाश, समयावलोक	पदमनाथ भट्टाचार्य	दुर्गावती
संग्राम साहीय, दिव्यनिर्णय	दामोदर ठाकुर	दुर्गावती
आलोक दर्पण	महेश ठाकुर	दुर्गावती
गजेन्द्र मोक्ष	लक्ष्मी प्रसाद	निजामशाह
सुदामा चरित्र	वीर वाजपेयी	निजामशाह
प्रेमदीपिका	वीर वाजपेयी	निजामशाह
हृदय कौतुक, हृदय प्रकाश	हृदयशाह	हृदयशाह
रामविजय महाकाव्य व गढेशनृप वर्णनम्	कवि रूपनाथ झा	नर हरिशाह

Exercise no 3

1. वीरांगना दुर्गावती की शादी निम्न लिखित में से किस गोंड शासक के साथ हुई थी? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) रघुनाथ शाह
   (b) चंपत शाह
   (c) शंकर शाह
   (d) दलपत शाह
2. सिंगोरगढ़ का किला मध्यप्रदेश के किस जिले में स्थित है। [MPPSC SES 2021; MPPSC Dental Surgeon Exam 2022]
   (a) सागर
   (b) दमोह
   (c) जबलपुर
   (d) छतरपुर
3. रानी दुर्गावती के पिता का नाम क्या था। [MPPSC DSP_Radio 2020]
   (a) दधिवाहन
   (b) शालिवाहन
   (c) दतिवाहन
   (d) बलवाहन
4. गढ़ मण्डला का अंतिम यशस्वी और प्रतापी राजा कौन था। [MPPSC Dental Surgeon Exam 2022]
   (a) राजा शाह
   (b) विक्रम शाह
   (c) शंकर शाह
   (d) विष्णु शाह
5. गढा मंडला की प्रसिद्ध रानी का नाम बताइए। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
   (a) रानी चेनम्मा
   (b) रानी अहिल्याबाई
   (c) रानी कमलापति
   (d) रानी दुर्गावती
6. निम्नलिखित में से किस लेखक ने रानी दुर्गावती की राजधानी चौरागढ़ की लूट का वर्णन किया है। [MPPSC ADPO 2021]
   (a) बरनी
   (b) अबुल फज़ल
   (c) फैज़ी
   (d) फिरदौसी

1. (d) 2. (b) 3. (b) 4. (c) 5. (d) 6. (b)

1.4 देवगढ़ राज्य

देवगढ़ राज्य का उदय सोलहवी सदी के अंत में हुआ। तथा अठारहवी सदी के मध्य तक विद्यमान रहा। उदय के समय देवगढ राज्य गोंडो के अधीन रहा। परन्तु 1564 में गढ़ा पर अकबर की विजय के उपरान्त यह मुगल साम्राज्य का हिस्सा हो गया। दुर्गम इलाके व दूरी का फायदा उठाकर देवगढ़ के शासकों ने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की। और अंत में भोसलें शासकों ने उन्हें सिंहासन से हटाकर नागपुर राज्य में मिला लिया।

तुलोबा 1570–1580
↓
जाटबा 1580–1620
↓
दलशाह 1620–1635
↓
कोक शाह 1635–1645
↓
केसरी शाह (जाटबा द्वितीय) 1645–1660
↓
गोरवशाह (कोक शाह द्वितीय) 1660–1685
↓
महीपत शाह (बख्त बुलन्द) 1686–1709
↓
दीदर 1691–1695
↓
चांद सुल्तान 1709–1735
↓
बुरहान शाह
↓
रहमान शाह
↓
सलुमानशाह
↓
आजम शाह 1951 तक

- देवगढ़ राज्य के अवशेष वर्तमान में छिंदवाडा जिले से महज 40 किमी की दूरी पर स्थित है।
- देवगढ़ राज्य का मुख्यालय हरया या हरयागढ़ था। जो आज छिंदवाडा जिले का गॉव है।
- देवगढ़ राज्य का वास्तविक उल्लेख 1564 के बाद गढ़ा राज्य की शक्ति और प्रभाव के क्षीण होने के बाद हुआ।
- देवगढ़ राज्य का पहला शासक तुलोबा है। जिसका उल्लेख 1578 में जारी की गई एक सनद में मिलता है। इससे पहले हमें किसी राजा का विवरण प्राप्त नहीं है।
- शुरूआत में देवगढ़ के राजा जमीदार कहलाते थे। परन्तु जाटबा के समय देवगढ़ राज्य व गौंड वंश की कीर्ति चारो दिशाओं में फैली।
- जाटबा द्वारा अपने राज्य का विस्तार दक्षिण व पूर्व की तरफ खेरला (बालाघाट) की तरफ किया।
- जाटबा [MP Vyapam Patwari 2017] ने सर्वप्रथम राजधानी हरयागढ़ से देवगढ़ स्थानातंरित की तथा वहाँ पर किले का निर्माण करवाया।
- जाटबा के आठ पुत्र थे। जिसमें उसका बड़ा पुत्र दलशाह उसका उत्तराधिकारी हुआ।
- 1634 ई. जब शाहजहां ने जुझार सिंह पर आक्रमण किया तब उसने दक्षिण जाने के लिये देवगढ़ के राजा दलशाह से संपर्क किया।
- 1637 में कोकशाह के समय देवगढ़ पर मुगल सेना ने आक्रमण किया। इस युद्ध का नेतृत्व खानदौरान ने किया परन्तु जीत कर राजस्व वसूल कर राज्य वापस कर दिया।
- 1637 तक नागपुर, देवगढ़ के अधीन था।
- 1648 में केसरीशाह के समय पुनः मुगल शाही फौज ने देवगढ़ पर आक्रमण किया। जिसका नेतृत्व शाहवाज खान ने किया।
- महीपत शाह राज्य प्राप्त करने के लिये औरगजेब के पास गया। उसकी शर्त के अनुसार उसे मुस्लिम धर्म स्वीकार करना पड़ा।
- गोंड वंश का पहला शासक जिसने मुस्लिम धर्म स्वीकार्य किया। ओर देवगढ़ का नाम परिवर्तित कर **इस्लामगढ़** तथा महीपत शाह का नाम परिवर्तित कर **बख्त बुलन्द** किया गया।
- 1691 में बख्त बुलन्द को हटाकर मुगलों ने दीदर को इस्लाम गढ़ का राजा बनाया।
- चांद सुल्तान ने राजधानी देवगढ़ से नागपुर स्थानांतरित की परन्तु यह प्रमाणिक नहीं है।
- आजमशाह ने अपने पूरे परिवार सहित हिन्दू धर्म स्वीकार किया।

▶ मकडाई रियासत

- मकडाई रियासत वर्तमान म.प्र. के हरदा [MP Vyapam Patwari 2017, MP SI 2017] जिले में है। जिसका संस्थापक राजा करकटराय या महाराज सिंह था।
- बाद में मंकरदशाह ने अपना मुख्यालय कालीभीत से हटाकर मकडाई कर लिया तथा किले का निर्माण करवाया।
- मध्यप्रदेश सरकार के वनमंत्री म.प्र. सरकार विजयशाह का संबन्ध भी मकडाई रियासत के गोंड वंश से है।

▶ कवर्धा रियासत

- कवर्धा रियासत वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य में है।
- कवर्धा रियासत के शासक मण्डला के गोंड शासकों के वंशज कहे जाते है।

▶ रायगढ़ रियासत

- रायगढ़ रियासत देश की आजादी तक अस्तित्व में रही।
- इसका संस्थापक मदन सिंह था। बाद में यह रियासत रघुजी जी भोंसले के पास चली गयी।

- मराठों से वापस रायगढ़ रियासत जुझार सिंह ने प्राप्त की ओर इसका राजा बना। इस कार्य मे उसे अग्रेजों से सहायता मिली।

▶ सक्ती रियासत

- सक्ती रियासत के शासक वर्तमान छत्तीसगढ़ के राजगोंड थे।

Exercise no 4

1. जबलपुर में स्थित महत्वपूर्ण किला,..... है [MP Vyapam Patwari 2017]
   (a) मदनमहल किला
   (b) महाराजा किला
   (c) राणा सांगा किला
   (d) आमला किला
2. मंडला जिले का ऐतिहासिक किला ..... में है [MP Vyapam Patwari 2017]
   (a) राम नगर
   (b) घुघरी
   (c) बिछिया
   (d) मवाई
3. देवगढ़ किला किसने बनाया [MP Vyapam Patwari 2017]
   (a) गोंड राजा-राजा जाराव
   (b) चंद्रगुप्त मौर्य
   (c) भोपाल का नवाब
   (d) सम्राट अशोक

   उपरोक्त प्रश्न में दिये गए विकल्प में विकल्प (a) सही है परंतु नाम गलत लिखा गया है, सही नाम जाटबा है।

4. दमोह में पहाड़ी किला कहां स्थित है [MP Vyapam Patwari 2017]
   (a) सिंगौरागढ़
   (b) बौरबरी
   (c) फतेहपुर
   (d) असीरगढ़
5. मध्यप्रदेश के किस जिले में गढ़ाकोटा किला है [MP Vyapam Patwari 2017]
   (a) होशंगाबाद
   (b) ग्वालियर
   (c) रायसेन
   (d) सागर
6. निम्नलिखित में से कौन-सा किला हरदा जिले में है [MP Vyapam Patwari 2017, MP SI 2017]
   (a) मकड़ई किला
   (b) मोहनगढ़ किला
   (c) देवगढ़ किला
   (d) असीरगढ़ किला
7. उस प्रसिद्ध किले का नाम बताइए जिसे बादल महल के नाम से भी जाना जाता है [MP Vyapam Patwari 2017]
   (a) राहतगढ़ किला
   (b) सनोढ़ा किला
   (c) रहेली किला
   (d) कर्रापुर किला
8. पुरातत्वीय महत्व वाला स्थान मदन महल किला स्थित [MPPSC Forest service 2010]
   (a) धार में
   (b) रायसेन में
   (c) जबलपुर में
   (d) मण्डला में

1. (a) 2. (b) 3. (a) 4. (a) 5. (d) 6. (a) 7. (a) 8. (c)

1.5 गोंड

गोंड शब्द की उत्पत्ति कोंड शब्द से हुई जिसका अर्थ होता है पर्वत, गोंड स्वयं की **कोयतोर** [MPPSC Computer Programmer 2021] कहलाना पंसद करते है। जिसका मतलब पर्वतवासी मनुष्य होता है। यह म.प्र. की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। वर्ष 2011 में जनसंख्या 4357918 है। मध्यप्रदेश के आधे से अधिक भाग में गोंड आदिवासी निवास करते है। म.प्र. के उत्तरी भाग को छोड़कर अधिकांश सभी जिलों में निवास करते है। गोंड प्रकृति की कोख में किसी पहाड़ी या नदी किनारे रहना पसन्द करते है। गोंडो के अधिकांश गांव प्रकृति से दूर जंगलों में बसे होते है। गोंड प्रकृति प्रेमी होते है।

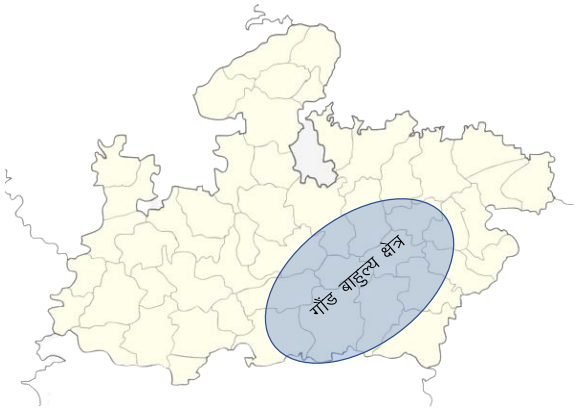

▶ **भोगौलिक वितरण**

गोंड जनजाति लगभग **सम्पूर्ण म.प्र. में निवासरत**[MPPSC State Forest Service Main Examination 2020] है। परन्तु इनका अधिकांश संकेन्द्रण नर्मदा के दोनो किनारो पर पाया जाता है। गोंड बाहुल्य जिलो के अंतर्गत बैतूल, छिन्दवाड़ा, होशंगाबाद, बालाघाट, शहडोल, मण्डला, सागर, प्रमुख है। व्यवसाय करने के आधार पर गोंड जनजाति कई उपजनजातियो में विभाजित है।

व्यवसाय	व्यवसाय
अगरिया [MPPSC SFS 2021]	लोहे का काम करने वाला
प्रधान, पंडिताई	पूजा पाठ करने वाला
ओझा [Mp Vyapam Jail2017]	तांत्रिक क्रियायें करने वाला
कोइलाभूतिस	नाचने गाने वाले गोंडो को कहा जाता है।
सोलाहास	बढ़ईगिरी का काम करने वाले को कहा जाता है।

▶ **गोंडो की उपजाति :** म. प्र. में गोंडो की 50 उपजाति पाई जाती है। कुछ निम्न है। परधान, अगरिया, ओझा, नगारची, सोलहास, कमार, कुलस्ते, टेकाम, सरियास, पोहे, पावले, माडिया मुडिया, कोइलाभूतिस आदि।

- गोंड जनजाति राजगोंड (शासक वर्ग) तथा धुरगोंड (सौनिक वर्ग) में बंटे हुये थे।
- गोंड जनजाती की मुख्य भाषा गोंडी है। इसके अलावा डोरली, हल्बी तथा भतरी भाषा भी बोलते है।
- गोंड जनजाति अपनी संस्कृति के प्रति अडिग होती है।

▶ **जन्म संस्कार :** नवजात शिशु को जन्म गोंड समाज में अन्य जनजाति की तरह शुभ माना जाता है। आदिवासी संतान प्राप्ति की कामना से अधिक प्रफुल्लित होता है। अधिक संतान इनके परिवार की समृद्धि की निशानी है। गोडो में पुत्र ओर पुत्री को समभाव से देखा जाता है। गर्भधान के लक्षण प्रकट होते ही गृहणी का सम्मान बड़ जाता है। राज गोंडो में प्रथम बार गर्भधान के लक्षण दिखते ही कुल देवी या कुल देवता के पूजन का उत्सव मनाया जाता है। प्रसव पीड़ा होते ही गांव की दो - चार स्यानी महिलाएं प्रसव का कार्य करती है। सोवर उठने के दिन तक जच्चा बच्चा को दाई (बसोरिन) तेल मालिश करती है। छठवे दिन सोवर उठाई होती है। जिसे छठी कहते है। इस दिन जच्चा - बच्चा को नहलाकर शुद्ध कर दिया जाता है। रात्रि में ध्रुवतारा दिखाने की रस्म होती है। नामांकरण का कार्य बारवे दिन किया जाता है। रात्रि में गौरी - गणेश की पूजा होती है।

▶ **शारीरिक विशेषता** : गोंड जनजाति Dravidian मूल के है। सामान्यतः इनकी कद काठी छोटी होती है। इनका रंग काला मोटे होठ बडी व चपटी नाक, चौडे मुंह और सीधे बाल वाले होते है।

- **निवास** : गोंड जनजाति अधिकांशतः घने जंगलो और ऊंचे पहाड़ों पर निवास करती है। समतल भूमि या मैदानी क्षेत्र पर इनका निवास कृषि योग्य भूमि, सुरक्षा के लिये होता है। इनके घर प्रायः घास, फूस व मिट्टी के बने होते है।

- **वेशभूषा** : गोंड पुरूष अधिकतर कमर के नीचे वस्त्र पहनते है। स्त्रियां में आभूषण एवं गोदना का अत्यधिक प्रचलन है। पीतल, मोती, गिलट मूंगा आदि का प्रचलन होता है। गोंड स्त्रियां बाल्यकाल में गुदना गुदवाने की प्रथा है। गुदना गोदने का कार्य **गोधारिन** [MP Vyapam Combined Group 4 2016] के द्वारा किया जाता है।

आभूषण: पैरा सतुआ, हमेल, जुरिया

- **खानपान** : गोंड शाकाहारी एवं मांसहारी दोनो प्रकार के होते हैं इन्हे मोटे अनाज व कंदमूल खाना व मोटे अनाज से बना पेय पदार्थ पेज अत्यधिक प्रिय होता है।

- **सामाजिक व्यवस्था** : गोंड समाज पितृवंशीय, पितृ सत्तामक एवं पितृस्थानीय होता हैं परिवार का वृद्ध पुरूष मुखिया होता है। इनमे अतिथियो के लिये एक साफ सुधरा और छोटा कमरा बनाया जाता है। गोंड समाज पितृसत्तामक समाज है। गोंडो का विश्वास है। कि बीज खेती से अधिक महत्वपूर्ण है। पुरूष बीज है। तथा नारी खेती है। फिर भी स्यानी महिलाओं से हर कार्य में सलाह ली जाती है। घर में मुखिया और वृद्ध लोगो की आज्ञा सब मानते है।

गांव की पंचायत 5 लोगो से मिलकर बनी होती है। इसका प्रमुख मुकद्दम होता है।

- मुकद्दम: गांव का मुखिया मुकद्दम होता है। मुकद्दम सरकार को लगान वसूल कर देता है। मुकद्दम की नियुक्ति परम्परागत होती है। पिता के बाद पुत्र मुकद्दम बना दिया जाता है। मुकद्दम ही गांव का **मुखिया या गोटिया** होता है। कहीं - कहीं अन्य व्यक्ति भी गोटिया होता है।
- कोटवार: मुकद्दम की सहायता के लिये कोटवार की नियुक्ति की जाती है। इसका मुख्य कार्य सरकारी सूचनाओं, अधिकारियों की गांव में रहने खाने की व्यवस्था कोटवार करता है। जन्म-मरण का हिसाब, चोरी की रिपोर्ट पुलिस में कोटवार ही देता है।
- गुनिया / बरूआ / पण्डा/ओझा [Mp Vyapam Jail 2017] : गांव में तांत्रिक क्रिया करने वाला गुनिया या बरूआ कहलाते है।

- **विवाह प्रथा** : जनजाति में विवाह केवल वंशवृद्धि के लिये ही नहीं रचाये जाते बल्कि विवाह आदिम प्रेम, परस्पर सहयोग और सहज आकर्षण की अभिव्यक्ति होते है। जनजातियों में महिलाओं का स्थान घर के भीतर ही नहीं अपितु वे घर के बाहर भी पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर जीवन तथा जीविकोपार्जन का हर कार्य करती है।

- **दूध – लौटावा** [MP Dairy Federation Exam 2016] :- ददिहाल और ननिहाल परिवारों में विवाह गोंड अपना नैतिक अधिकार मानते है। भाई अपनी बहन की लड़की से विवाह करने का पहला हकदार होता है। इस रिश्ते को दूध लौटाना कहा जाता है। लड़का - लड़की की मर्जी के बजाय माता - पिता की रजामंदी सर्वोपरि होती है।
- **सेवा- विवाह** [MPPSC SES 2014] :- वधू मूल्य न चुकाने पर वधू के माता पिता की सेवा करना। सेवा से प्रसन्न होकर कन्या दे दी जाती है। इसमें वर लामानाई कहलाता है। इसका समय 3 से 7 वर्ष होता है।
- प्रीति विवाह या वधू मूल्य :- वधू मूल्य दिया जाता है। लड़की के पिता को
- विधवा विवाह या पुनर्विवाह:- विधवा विवाह पाट, पाटो कहलाता हैं इसमें विधवा देवर के साथ शादी कर लेती है।

- **गोंडो के अन्य विवाह**

- भगेली विवाह : लड़की भाग कर लड़के के घर आ जाती हैं इसे हठ विवाह भी कहते है।

- पठौनी विवाह : इसमें लड़की की बारात लड़के के घर आती है। लड़के के मण्डप में भाँवरे होती है। लड़की अपने दुल्हे को विदा करा के अपने घर लाती है। वर्तमान में यह प्रथा बंद हो गई है।
- पायसोतुर विवाह : यह विवाह अपहरण विवाह का गोंड रूप है।
- चढ विवाह :- इस विवाह में वर पक्ष बारात लेकर कन्या पक्ष के घर आता है। विधवा स्त्रियों के किसी जल जीव के साथ उल्टे फेरे करवायें जाते है।

▶ **अर्थव्यवस्था :** गोंडो का मुख्य व्यवसाय कृषि करना है। इनके द्वारा की जाने वाली कृषि 'बारी' कहलाती है। कृषि के अतिरिक्त यह जनजाति वनोपज संग्रहण का कार्य भी करती है। वनोपज में मुख्यतः तेदूपत्ता व महुऐ के संग्रहण का कार्य करते है। इसके अलावा हर्रा, बहेडा, गुल्ली अचार आदि के साथ कंदमूल फल व शहद का संग्रहण करते है। अधिकांश गोंडो के पास खेती न होने के कारण वे हरवाही खेती करते है। भूमि मालिक का कर्ज सदैव चढ़ता रहता है। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी हरवाही चलती रहती है। चार वृक्ष के चिरोंजी इकट्ठी करना महिलाओं का प्रिय कार्य है।

▶ धार्मिक जीवन : गोंड जनजाति के धार्मिक विश्वास में टोटम का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अलावा प्राचीन देवी देवताओं ओर आत्मा की पूजा का भी प्रचलन है। गोंड अपनी उत्पत्ती 'लिंगादेव' से मानते है। और उनकी पूजा करते हैं जिसे कोयापुनेम कहा जाता हैं। इनका प्रमुख देवता **ठाकुर देव** [MPPSC SES 2016] हैं। इसके अतिरिक्त यह दुल्हादेव, सूरजदेव, नारायाण देव, की भी पूजा करते है। गोडो के परम्परागत पुरोहित बैगा लोग होते है। प्रकृति की अपार शक्तियों का पूजक आदिवासी है। वह चांद और सूरज, बादल, बिजली, वर्षा, अग्नि के प्रति पूजा का भाव रखता आया है। आदिवासियों के धार्मिक ग्रन्थ न होने के कारण बैगा, बरूआ, भूत - निशाच जो आज्ञा देते है। वही करता है।

- **बड़ा देव :** बड़ा देव सबसे बड़ा और व्यापक देवता है। गोंड जिस शक्ति को सर्वमान्य मानते है। वह उनका बड़ा देव है। बड़ा देव का स्वरूप सफेद वस्त्रधारी, सफेद दाढ़ी वाला सौम्य पुरूष मान्य है। जिसकी सवारी सफेद घोड़ा है। ओर हाथ में भाला है। बड़े देव का स्थान ग्राम में पूर्व की ओर होता है। साल में एक बार पूजा अवश्य होती है।
- **ठाकुर देव :** ठाकुर देव गोंडो का ग्राम देवता है। वह ग्राम के रक्षक है। यह श्वेत वस्त्रधारी सौम्य स्वरूप है। ठाकुर देव गांव की दैवीय विपत्तियों को दूर करता है। ठाकुर देव के बरूआ होते है। जिन्हें समय समय पर भाव आते है। ठाकुर देव का स्थान गांव से किसी वृक्ष के नीचे होता है। सफेद मुर्गी व नारियल चढ़ाया जाता है। तथा वृक्ष पर सफेद ध्वजा फहराई जाती है।
- **नारायण देव :** नारायण देव का स्थान घर की दहलीज में है। और वह घर में आने वाली सभी प्रकार की दैवीय बाधाओं जैसे भूत प्रेत बीमारी आदि को दहलीज में रोक लेता है। नारायण देव की पूजा घर की दहलीज पर होम, धूप, अगरबत्ती और नारियल से की जाती है।
- **घमसेन देव :** घमसेन देव का चैरा बड़े देव के पास रहता है। उस पर एक खम्बा गड़ा रहता है। ओर ध्वजा फहराती है। घमसेन देव के चैरा पर मनौती के जवारे बोये जाते है। एक बार वर्ष में सामूहिक पूजा की जाती है।
- **नागेश्वर देव :** नागेश्वर देव की पूजा नागपंचमी को होती है। नागेश्वर नाग या सर्प के देवता है।
- **खैरमाई :** खैरमाई ग्राम की सीमा रक्षक देवी इनका स्थान अधिकतर महुआ वृक्ष के नीचे है। इनके अतिरिक्त बजारिन देवी (वन देवी), रातमाई अंधेरी माई, शीतला माई (ममतामयी माता), शारदा माई है। बूढ़ी माई (बड़ी चेचक), छोटी माता को गोंड कसलाई कहते है। हैजा और प्लेग बीमारियों को मरहीमाता नाम दिया गया है। मलेरिया को हुलकी माई या दलकी माई कहते है।

▶ **गोंड जनजाति के प्रमुख नृत्य एवं पर्व :** गोंड समाज में पर्व त्यौहार अपार खुशियो और उनकी संस्कृति के पोषक है। एक अधनंगा भूखा और निर्धन आदिवासी भी उसी उमंग और उत्साह से अपने त्यौहार मनाता है। जितना कि एक धनवान और सुखी आदिवासी। गोंड जनजाति काफी रंगप्रिय जनजाति है। इनमें अलग अलग आयोजनो पर अलग अलग नृत्य करने की प्रथा है।

- **बिदरी :** बिदरी का शुद्ध रूप बदरी या बादल है। इसका अर्थ बादल पूजा है। बिदरी पूजा में बादल के साथ धरती और अन्य की भी पूजा की जाती है। बिदरी पूजा ज्येष्ठ मास की किसी भी तिथि में की जा सकती है। बिदरी पूजा में पूरा गांव शामिल होता है। सूर्योदय से पहले स्नान करके एक लोटा पानी लेकर ठाकुर देव के स्थान पर जाया जाता है। सफेद मुर्गो की अछत चड़ाकर बलि दी जाती है। तथा एकत्रित हुये अनाज को समस्त लोगो में बांटा जाता है। जिसे वे अपने बीज के साथ मिलाकर बो देते है। और अच्छी फसल की कामना करते है। इसमें ठाकुर देव की पूजा की जाती है।
- **नवाखानी :** गोंडो में नवाखानी फसल और पितृ - पूजा का त्यौहार है। नवाखानी का त्यौहार प्रत्येक परिवार में व्यक्तिगत रूप से मनाया जाता है। भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की किसी भी तिथि को अपनी सुविधानुसार यह पर्व मनाया जाता है। जनजाति ने पितृ-पूजा का सम्बन्ध आने वाली नई फसल के साथ जोड़ दिया है।
- **जवारा :** एक धार्मिक पर्व है। यह वर्ष में दो बार मनाया जाता है। एक आश्विन (क्वार) के महीने में दूसरा चैत्र मे महीने में, जवारा दोनो माह की शुक्ल एकल तिथि से नवमी तक जवारा का त्यौहार मनाया जाता है। जवारा इस जनजाति की शक्ति पूजा है। जवारा उत्सव नौ दिन चलता है। प्रथम दिन जवारे बोये जाते है। तथा नौ दिन तक व्रत रखा जाता है। बस्तर जिले के गोंडों के द्वारा चैत्र के महीने में **चैत्र उत्सव**[MPPSC Tax Assistant 2010] नामक प्रसिद्ध नृत्य किया जाता है। यह फसल कटाई के बाद देवी अन्नपूर्णा को पहले से तैयार फसल के लिए धन्यवाद देने और अगली फसल के लिए उनका आशीर्वाद मांगने के लिए किया जाता है। पुरुष और महिलाएं एक वृत्त में, अर्ध-वृत्त में या पंक्तियों में नृत्य करते हैं; सभी नर्तक एक दूसरे की कमर पकड़ लेते हैं।
- **मड़ई :** मड़ई दीपावली की प्रतिपदा से कार्तिक पूर्णिमा तक पन्द्रह दिन बड़ी धूमधाम से मनायी जाती है। मड़ई एक धार्मिक उत्सव है। मड़ई अब मेलो के रूप में विकसित हो गई है। मड़ई शब्द की उत्पत्ती मड़वा से हुई है। जिसका अर्थ होता है। "मण्डप" इसमें दौगुन व गंगाइन देवी का विवाह रचाया जाता है।
- **बकबन्धी :** आषाढ़ मास की पूर्णिमा यानी गुरु पूर्णिमा को मनाया जाता है। बैगा पलाश के पौधो की जड़ो से रेशे निकालकर उन्हे हल्दी में रंग देता है। मंत्र बोलते हुये घर के प्रत्येक गोंड युवक की कलाई में ये रेशे बांध देता है। घर और खेत में इन रेशो को गाड़ता है। दरअसल यह प्रकृति जन्य रक्षाबंधन है। इसके पीछे एक प्राचीन मान्यता है। कि लिंगादेव ने अग्नि परीक्षा के लिये नागा बैगा से यह धागा बंधवाया था। जिसने आग से लिंगादेव की रक्षा की थी। तब से गोंड, बैगा से यह रेशा बंधवाते आ रहे है।
- **हरढिली :** श्रावण मास की अमावस्या को हरढिली का पर्व मनाया जाता है। यह उत्सव खरीफ फसल की बोनी के समापन का त्यौहार है। बैलो को हलों से ढील देने कारण हरढिली नाम पड़ा। इस दिन बैलो की पूजा की जाती है।
- **छेरता :** यह उत्सव पौष मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह बच्चों को त्यौहार है। इस दिन बच्चे टोली बनाकर निकलते है। वे घर - घर जाते है। सबके हाथ में बांस की एक छड़ी होती है। और कॉधे (कंधे) में एक झोली। वे आंगन में खड़े होकर छड़ी की नोंक से जमीन कुरेदते है। और **''छेर छित्ता छेरता, छेर छित्ता छेरता''** की रट लगाते है।
- **दीवाली :** दीवाली उत्सव क्वार मास की अमावस्या से प्रारम्भ होकर कार्तिक पूर्णिमा तक पन्द्रह दिन मनाया जाता है। अमावस्या के दिन रात में मंत्र सिद्ध करते है। औषधियों को जगाते है। तथा अगले दिन गोवर्धन की पूजा की जाती है। अमावस्या की रात्रि में गोंड बालकों में ढर्रा देने की प्रथा है। इस प्रथा में खरगोश की लेंडी को दाहिनी कलाई पर रखकर जलाते है।
- **मेघनाद :** फाल्गुन महीने के पहले पक्ष में मेघनाथ त्यौहार गोंड आदिवासियों द्वारा मनाया जाता है। मेघनाथ गोंडो के सर्वोच्च देवता हैं। इसके अन्य नाम खंडेरा, खट्टा हैं।
- **लारूकाज :** लारूकाज गोंड आदिवासियसो द्वारा नारायण देव के सम्मान में मनाया जाने वाला त्यौहार हैं। यह पर्व सुअर के विवाह का प्रतीक माना जाता है। इस उत्सव में सुअर की बलि दी जाती है।

  लोक नृत्यों को गोंड समाज स्वयं की प्रेरणा से बिना संगीत, लय-ताल के सीखे हुए स्वयं ही नाचता है। नाचते - नाचते प्रत्येक आदिवासी उसमें पारगंत हो जाता है।
- **करमा नृत्य :** करमा कर्म की प्रेरणा देने वाला नृत्य है। ग्रामवासियों में श्रम का महत्व है। श्रम को ही ये कर्म देवता के रूप में मानते है। पूर्वी म.प्र. में कर्म पूजा का उत्सव मनाते है। उसमें करमा नृत्य किया जाता है। गांव में मांदर की थाप पड़ी कि गांव के युवक युवतियां नाचने गाने के लिये घर से निकल आये ओर **कर्मा नृत्य**[MP Vyapam Group 2 2017] जम जाता है।

- **सैला नृत्य :** यह नृत्य केवल पुरूषों द्वारा किया जाता है। सिर के साफे में मोर पंख की कंलगी होती है। नर्तक हाथों में डंडा, फरसा, काष्ठ की बंदूक एंव दूसरे हाथ में रूमाल तथा पैरो में लोहे के पैंजन रहते है। नर्तक एक कतार में तथा अर्द्ध गोल में नाचते है।
- **भडौनी :** यह विवाह नृत्य है। महिलाएं मण्डप के नीचे खड़ी होकर बारात वालों को मीठे शब्दो में गीत के बोलो में गाली देती है। ओर नाचती है। उस समय ये गालियां सबको मीठी लगती है। ओर कोई बुरा नहीं मानता गाली खाने के एवज में गाली देने वालो को बारात वाले नेग के रूप में कुछ पैसे भी देते है।
- **बिरहा :** बारात जब दूल्हे के घर से चलती है। तो रास्ते में दोहों के रूप में बिरहा गाये जाते है। बिरहा का विरह से सम्बन्ध है। गीतों में अधिकतर लड़की के बिरह का वर्णन मिलता है। इसलिये संभवतः इन गीतों का बिरहा कहते है। रास्ते में ये गीत होंड से गाये जाते है।
- **कहरवा :** कहरवा खुशी का गीत व नृत्य है। लड़की वालो के मण्डप तले जब लड़की की भॉवर फिर जाती है। उस समय लड़के वाले की ओर से आये हुये बाराती पुरूष - स्त्री कहरवा नाच करते है।
- **सजनी :** सजनी के गीत प्रमुख है। परन्तु फिर भी सजनी गीत-नृत्य है। जब घरों में लड़की लिवाने समधी आते है। उस समय घर के लोग खुशी से सजनी नृत्य करते हैं यह समा सारी रात चलता रहता है।

- **सुआ नृत्य :** जब धान की फसल पककर खेतों में लहराती है। उस समय सुआ नृत्य किया जाता है। लड़कियां दूसरे गांवो के घरो में नृत्य करती है। तथा स्वागत का सामान लाती है। यह नृत्य केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- दिवानी एवं रीना नृत्य - दिवाली के अवसर पर महिलाओं द्वारा

► **गीत**

- **ददरिया गीत** : बारात के लोगों द्वारा रास्ते में ददरिया गीत का गायन किया जाता है। यह एक वीर्य रस पूर्ण गीत होते है। इनमें सेखी बड़ाई जाती है।
- **नहडोरा गीत** : लड़का (वर) बारात को जाते समय जब तैयार हो रहा होता है। तब नहडोरा गीत गाये जाते है।
- **झूमा झूमर** : यह प्रेम गीत होते है। प्रियतमा अपने प्रीतम की याद में इन गीतो को गाती है।
- **करमा गीत** : कर्मा नृत्य के दौरान करमा गीत का गायन होता है। करमा गीता 4 प्रकार के होते है।
  1. करमा ठाढा
  2. करमा लहकी
  3. करमा लंगडा
  4. करमा रागिनी
- **सैला भडौनी** : यह गीत एक दूसरे से मजाक के रूप में व्यंग कसने के लिये गाये जाते है। शादी विवाह के समय इनमें गालियां भी दी जाती है।
- **सजनी** : समधी जब समधन के घर जाता है। उस समय सजनी गीत गाये जाते है।
- **जस गीत** : किसी की बडाई या यश का बखान करते समय जस गीत गाये जाते है। इनका अधिकांश गायन बूढादेव के लिये किया जाता है।
- **कहरवा** : शादी में जब बारात की वापसी होती है। उस समय कहरवा गीत गाये जाते है।
- **फाग** : इनका गायन फाल्गुन मास में किया जाता है।
- **सेताम** : इन गीतों के माध्यम से प्रीतम अपनी प्रीतमा पर प्रेम स्वरूप व्यंग करता है।

गोंड अपना समय गुजारने, बुद्धि परीक्षण तथा मनोरंजन के रूप में पहेलियां पूछते है। इन पहेलियों को धंधा कहते है।

► **मृत्यु संस्कार :** गोंडो में मृतक संस्कार की दो विधियां प्रचलित है। अर्थात ये शवों को दफनाते व जलाते दोनो है। गोंडो में पुनर्जन्म की मान्यता नहीं हैं। स्वर्ग, नर्क, व कर्म फल की अवधारणा भी क्षीण हैं। गोंड जनजाति की मान्यता हैं। कि मृत्यु के बाद भी आत्मा का मोह घर परिवार से बना रहता हैं। इसके उपाय के लिये वे रास्ते में जहां शव यात्रा में शव रखते है। वहां बेर व बबूल की झाड़ी पत्थर से दबा देते है। जिससे आत्मा उसमें फंस जाये। मृत्यु संस्कार में दशमानी या दशगात्र प्रथा गोंडो का महत्वपूर्ण क्रिया कर्म है। दस दिन के बाद दशमानी होती है। इसे बड़ा कर्म भी कहा जाता है। दशगात्र में सगोत्रों के अलावा अन्य जाति के लोग भी आंमत्रित किये जाते है। लोग अपने साथ सहाय भी लाते है। सहाय में दाल, चावल, कोदई रहती है। गोंडो में मृत्यु गीत नही गाये जाते हैं। इस अवसर पर करमा ददरिया गीत गाये जाते है। मृत्युदान परधान या अन्य गोंड बिरसिया लेते है। इसे मौर दान कहते है। दान लेने वाला नेगी या दसौंधी कहलाता है। दसगात्र में बिधवा स्त्री को पंचो के सामने चूड़ियां पहनाई जाती है। इसे पाटो प्रथा कहते है।

Exercise no 5

1. गोंड जाति अपने आपको क्या मानती है। [MPPSC Paper Computer Programmer Exam 2021]
   (a) कोयतोर
   (b) जनजाति
   (c) पिछड़ा वर्ग
   (d) आदिवासी
2. किस जनजाति में सेवा विवाह की प्रथा पायी जाती है ?[MPPSC SES 2014]
   (a) भील
   (b) गोंड
   (c) कोल
   (d) कोरकू
3. अगरिया जनजाति की मुख्य आजीविका क्या है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) लोहा गलाना
   (b) खेती करना
   (c) मछली पकड़ना
   (d) कृषि उपकरण एवं औजार बनाना
4. कौन सी जनजाति लोहासुर को अपना देवता मानती है? [MPPSC Prelims 2016]
   (a) गोंड
   (b) भील
   (c) अगरिया
   (d) कोरकू
5. किस जनजाति का मूल पेशा कृषि करना है गढ़ मण्डला का अंतिम यशस्वी और प्रतापी राजा कौन था। [MP VYAPAM ANM 2016]
   (a) पनिका
   (b) गुर्जर
   (c) भील
   (d) गोंड
6. घोटुल प्रथा किस जनजाति में पायी जाती है [MP Dairy Federation Exam 2016]
   (a) भील
   (b) गोण्ड
   (c) कमार
   (d) बैगा
7. गोण्ड जनजाति में दूध लौटावा प्रथा संबंधित है [MP Dairy Federation Exam 2016]
   (a) जन्म से
   (b) मृत्यु से
   (c) विवाह से
   (d) तांत्रिक क्रिया से

1. (a) 2. (b) 3. (a, d) 4. (c) 5. (d) 6. (b) 7. (c)

1.6 भील जनजाति

भील नाम द्रविड भाषा परिवार के अन्तर्गत कन्नड के **'बील'** शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ है। **"धनुष"** आदिम विश्वासों में जीने वाली इस सरल स्वभाव जाति के लोग अपने धनुष कौशल में कोई सानी (प्रतिद्विन्दी) नहीं रखते है। इसलिये इनका नामकरण धनुष (बील) के आधार पर भील हुआ है। भील जनजाति **पुलिन्द** तथा **वन-पुत्र** नाम से विख्यात है। भील जनजातियों का समुदाय मूल रूप से **शिकारी और योद्धा**[MP Jail Prahari 2017] है।

भीलो की व्युत्पत्ती के बारे में प्रचलित एक दंत कथा के अनुसार भील अपने आप का महादेव

का वंशज मानते है। भीलों ने महाराणा प्रताप के साथ मिलकर अकबर की शाही फौज को हल्दी घाटी के युद्ध में धूल चटाई थी। भारत के स्वतंत्रता के समय में भी भीलों ने बड़ चढ़ कर भाग लिया। भील जनजाति के योद्धा **गोरिला युद्ध** में माहिर होते है। परन्तु औरंगजेब के समय कुछ भीलो ने मुस्लिम धर्म अपना लिया था। जिन्हें हम तड़वी भील कहते है।

वर्तमान में म.प्र. की जनजाति जनसंख्या में भीलों की संख्या सर्वाधिक है। म.प्र. में भील जाति का संकेन्द्रण पश्चिमी भाग में सर्वाधिक है। जनगणना 2011 के अनुसार म.प्र. में भीलो की संख्या 46,18,068 है। जो म.प्र. की कुल जनजाति जनसंख्या का 37.7 प्रतिशत है।

- भारत में भीलो का वास मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात व महाराष्ट्र में है।
- म.प्र. में अधिकाश भील जनजाति का संकेन्द्रण पर्वतीय वनखण्डो में है। इसके अंतर्गत झाबुआ पश्चिमी निमाड़, धार और रतलाम जिले मुख्यतः आते है।
- म.प्र. में भीलो की चार उपजनजाति निवास करती है।
  1. भिलाल [MP Vyapam Patwari Exam 2017]
  2. पटलिया
  3. रॉठ
  4. बरेला

- भील जनजाति राजस्थान के कुशलगढ़ (कुंभलगढ) क्षेत्र के ढोल नामक स्थान को अपना मूल स्थान मानते है।

▶ **रूपरंग :** भीलो का शरीर सुगठित होता है। भील देखने में सुन्दर तथा ताम्रवर्णी होते है। परन्तु जंगलो में रहने के कारण इनका रंग काला होता है। आंखे भूरी और काली होती है। चेहरा गोल और नाक नक्शा सुडौल होते है। दांत सुन्दर और मजबूत होते है। भील इन विशेषताओं के कारण आदिम समूह से अपनी अलग पहचान रखते है।

▶ **वस्त्राभूषण :** भील निर्धनता के कारण बहुत ही कम वस्त्र धारण करते है। निर्धन भील एक लंगोटी से अपने वस्त्रों की पूर्ति कर लेता है। भील सिर पर लाल, हरे नीले रंग के साफे, रंग - बिरंगी कमीज व धोती पहनते है। स्त्रियां चोली कॉचली घाघरा और लुगड़ा, ओढ़नी पहनती है।

भीली स्त्री - पुरूष विभिन्न प्रकार के गहने पहनते है। ये गहने कथीर लसपजद्ध - चाँदी और काँसे के बनते है। बहुथा कथीर (गिल्ट) का प्रचलन सर्वाधिक है भीली स्त्रियां संसार की सर्वाधिक गहना प्रिय स्त्रियां होती है। भीली गीतो में भी आभूषणों का वर्णन हुआ है।

▶ **रहन – सहन :** भीलो का रहन सहन बहुत सादा है। रोजमर्रा के वस्त्रों के अलावा इनके घरो में ढुल्यों (खाटली) बिछाने के लिये गोदड़ी एवं ओढने के लिये बाँस से बनी हुई कोठी होती है। जिसे ये **कनगी** कहते है। अनाज पीसने के लिये घट्टी झाड़ने के लिये **सूपा**, उड़ाने के लिये टोपली (चारली) बाजार से सामान के लिये बांस से बनी हुई कलात्मक **ओड़ई** होती है। पानी के बर्तन रखने के लिये लकड़ी का माच होता हैं जिसे **'मुहालदा'** कहा जाता है।

भीली जनजाति स्वावलम्बी और परिश्रमी होती है। इन्हें सम्मान पूर्वक जीवन जीना पसंद है। भीली में कहावत है। ''जुग जैरी (जीव्हा खराब) तो मुलक बेरी'' भील लोग तुनक मिजाज के होते है। छोटी सी बात पर इन्हें गुस्सा आ जाता है। ओर किसी की जान भी ले सकते है।

▶ **खान पान :** भील मकई, ज्वार, बाजरा, गेंहू, चना, कोदरया आदि अनाजों का उपयोग अपने खाने के रूप में करते है। राबड़ी भीलो का मुख्य भोजन है। भील जनजाति मक्का की रोटी को बडे चाव से खाते है। राबडी मकई की थूली की होती है। जिसे छाछ मिलाकर बड़े स्वाद से खाते है। शाक सब्जी के रूप में चवली, राजा, ग्वारफली, भटा इत्यादि मौसमी सब्जियों का प्रयोग करते है।

जगल से प्राप्त कंदमूल, नदी तालाबों से पकड़ी गई मछलियां, मुर्गा (कड़कनाथ), केकड़ा, तीतर, हिरण भी इनका प्रिय आहार है। मद्यपान भीलों में सामाजिक व धार्मिक आवश्यकता है। महुआ से बनी शराब (मदिरा) व ताड़ी का सेवन करना इनको प्रिय है। ताड़ी का सेवन भील दिनभर करते है। ताड़ के वृक्ष अलीराजपुर में बहुतायत से मिलते है।

बीडी, तम्बाकू, चिलम सामान्य रूप से प्रत्येक भील पीता है। भांग, गांजे का सेवन कभी - कभी करते है।

▶ **हथियार व अस्त्र – शस्त्र :** भील सदैव अपने साथ धनुष बाण रखते है। धनुष - बाण भीलो की मुख्य पहचान है। अंधेरे में भी तीर लगाने में कुशल भील हिंसक पशुओं से बचने के लिये धनुष बाण का प्रयोग अपनी आत्म रक्षा के लिये करते है। भील धनुष को धनली या कामठी कहते है। भीलो के धनुष मजबूत व लचीलेदार बांस की चीप का बनाया जाता है। प्रत्यंचा को पिन्छा कहते है। बाण को बिल्खी कहते है। बिल्खी का अगला हिस्सा की नुकीली, धातु का बना होता है।

- भील जनजाति एकलव्य को अपना आदर्श मानती है। एकलब्य भील जाति का कुशल धनुर्धर था इसलिये भील बाण चलाते समय अपने अंगूठे का प्रयोग नहीं करती है।
- बाण का ही एक प्रकार बिटलो है। जो पक्षिओं के शिकार में प्रयोग होता है।
- फालिया या धारिया भी लोहे का बड़ा धारदार हथियार है। शिकार पर अचूक निशाना लगाने के लिये भील गोफन का प्रयोग करते है। इसे भील हमेशा अपनी पगड़ी में बांध कर रखते है। आजकल भील बन्दूकों का भी प्रयोग करते है।

▶ आवास : भील पहाड़ियों की चोटियों पर अपनी झोपडियां बनाना पसन्द करते है। भीली लोग अपने खेतो की सुरक्षा के लिये अपना निवास स्थान खेतों पर ही बना लेते है। जहां पर चार पांच झोपड़ियों नजदीक ही बनी हो उसे **फाल्या** [MP Dairy Federation Exam 2016] कहते है। तथा इनके निवास स्थान (झोपड़ियों) को **"कू"** [MPPSC State Engineering Service Pre 2016] कहते है।

- फाल्या का प्रमुख पटेल होता है। इसके अलावा तड़वी फाल्या, बड़वा फाल्या कहलाते है। और कई फाल्यो के मिलने से गांव बनता है। जिसे **पाल** कहते है।
- भीलों का गृह निर्माण और उनकी वास्तु विधि अत्यन्त साधारण होती है। अपने घरो को बनाने के लिये आमतौर पर लकड़ी व मिट्टी व छत के लिये खपरैल बिछाते है। इनके घरो का बीच का हिस्सा दस फीट ऊँचा तथा दीवार की और पांच - छः फीट रह जाती है। चोरी के भय के कारण यह अपने मकानो में खिड़किया नही बनाते है। मकान के चारो बाउड्री (बांगड) लगाते है। तथा इनके मकानों का मुंह पीछे की ओर होता है।

▶ **जाति व गोत्र :** भील जनजाति चार वर्गो में बटी हुई है – (a) भील, (b) भिलाल (बरेला), (c) पटलिया, (d) रांठ

- सर्वेक्षण में भीलो के 71 गोत्र बताये गये है।
- गोत्रो के उद्भव के बारे में कई किवदतियां है। परन्तु जिस जानवर, पक्षी, नदी और वृक्ष के द्वारा इनकी रक्षा की जाती है। ये आमतौर पर उसी के नाम पर अपना गोत्र लिखते है।

1. सन्यान गोत्र - बिल्ली के पूजक

2. निंगवाल्या - निंगवाल्या मछली न खाने वाले
3. सिंगाड़या - बैलो के पूजक

- **बोली :** भीलों की बोली भीली है। यह बोली आर्यो की भाषा से अग्रहीत हैं परन्तु वर्तमान में अन्य भाषाओं के प्रभाव से इसका मूल रूप परवर्तित हो गया है।

  जैसे:- वर्तमान म.प्र. के धार, रतलाम, झाबुआ क्षेत्र की भीली भाषा पर मालवी बोली की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है।

- **जन्म संस्कार :** भील नवागत शिशु को शुभ मानते है। इनके यहां प्रसव का कार्य बहुधा परिवार की स्यानी महिलाएं करती है। कुछ जगह पर यह कार्य सोयेन या सुवारनी (दाई) करती है। भील भूत-प्रेत की बांधा से बचने के लिये सिरहाने तीर रखते है। नवागत बच्चे की नाल को यह बिलखी से काटना शुभ मानते है। प्रसूति के समय महिला को मदिरा पिलाई जाती है। ओर प्रसूति के बाद मछली का उबला पानी पेय के रूप में दिया जाता है।

  - शिशु जन्म के सातवें दिन प्रसूता को हल्दी लगाकर स्नान कराया जाता है। इसे सांता प्रथा कहते है।
  - भीलो में शिशु जन्म के समय सूर्य - पूजा का विशेष महत्व है। इसमें परिवार के समस्त लोग भाग लेते है। तथा इसी दिन नामकरण का संस्कार तिथि, वार, महीना के नाम पर रखा जाता है।
  - जब बच्चा बारह वर्ष का होता है। तब उसके दाहिने हाथ की भुजा की कलाई पर गर्म तीर लगा कर दाग देते है। इसे डाम प्रथा कहते है।

- विवाह प्रथाएँ - कुल 7

  भील जनजाति में शादी की अपनी विशिष्ट प्रथायें है। शादी तय करने के लिये पहल लड़के वालो को ही करनी पड़ती है।

  - शादी का प्रस्ताव लड़के वालो के यहां से लड़की वालो के यहां वह व्यक्ति रखता है। जो दोनो परिवारो का परिचित हो। इसे भांजगडिया कहते है। प्रस्ताव स्वीकार होने पर मंदिरा की दावत होती है। तथा दापा (वधु मूल्य) के लिये बात पक्की करने का संदेश भेजते है।
  - दापा प्रथा :- वर पक्ष द्वारा वधूपक्ष को दी जाने वाली (रकम, अनाज, पशु) जिसे बधू - मूल्य भी कहते है। यह प्रथा दापा प्रथा कहलाती है। इसमें सांकेतिक मुद्रा के रूप में मक्का के दानों का प्रयोग होता है।
  - भॉजगडिया ही दापा प्रथा तथा शादी की तिथि तय करता है।
  - भीलो में शादी के दौरान **मामा** का स्थान मुख्य है। अगर किसी लड़के के मामा नहीं है। तो यह अपमान सूचक समझते है।
  - मँगनी या दापा प्रथा के लिये जाते समय भील शगुन को बडा महत्व देते है। दापा के प्रकार

    नगद रकम - दापा

    मवेशी - खांडा कूटा

    अनाज - सॉवा
  - सॉवा का अनाज जब कन्या पक्ष के यहां ले जाया जाता है। इसे **सांउग** भरना तथा ले जाने वाले को **सॉवग्या** कहते है। तथा सॉवा का अनाज रखने वाला स्थान सॉवग्या मंडप कहते है। इसमें ही सॉवग्या को ठहराया जाता है।

- **विवाह के दौरान होने वाली प्रथायें**

  - **हल्दी पीठी :** दोनो पक्ष के ग्राम पुजारी, रानी काजल माता के देवरे पर विवाह का निमंत्रण देने जाते हैं। इसमें लड़की को चूड़ियां पहनाते है।
  - **बाना बिठाना :** वर - बधू को नये वस्त्र पहनाते है इस दौरान स्त्रीयां बाना गीत गाती है।
  - **मंडप :** कांकड वृक्ष का खम्बा जिसके चारो ओर खम्ब गाढ कर मंडप छाते है।

- **पहरावणी :** मामा के द्वारा अपने भांजा या भांजी के घर के समस्त लोगो के लिये कपड़े लाये जाते है। जिसे पहरावणी करना कहते है।
- **बारात :** बारात में स्त्री ओर पुरुष दोनों सम्मिलित होते है। ओर रास्ते में मांदल, फेफरया व पावली की धुन पर मधुर गायन होता है। मटके में मदिरा ले जायी जाती है। जिसे छांक कहते है।
- **घर जवाई :** भीलो में घर जंवाई रखने की प्रथा है। घर जंवाई माता - पिता की सेवा करता है। बाद में लड़की के माता पिता शादी करवा देते है। परन्तु दामाद को लड़की के घर ससुराल में ही रहना पड़ता है।
- **भगोरिया विवाह :** होली से पूर्व भीलांचल में भगोरिया हाट भरते है। इसमें किसी युवक को कोई युवती पंसन्द कर ले तो वह एक दूसरे को गुलाल लगाते है। ओर सहमति बनने पर अपने रिश्तेदार के यहां चले जाते बाद में पंचायत द्वारा दापा लगा कर उनका विवाह करा दिया जाता है।

- गुजरात के भील समुदाय के लोग होली के पावन अवसर पर विवाह का एक दिलचस्प प्रकार **गोल गधेड़ो** [MPPSC Dairy Federation 2016] लोक नृत्य के रूप में आयोजित होता है। गोल गधेड़ो लोक नृत्य में एक ऊंचे डंडे पर एक पोटली में गुड़ और नारियल बाध दिया जाता है। पुरुष उस पोटली को पकड़ने की कोशिश करते है, तथा स्त्रियों के द्वारा उन पर डंडे से वार किया जाता है।
- **लुगड़ा – लाड़ी :** भीलों में लुगड़ा लाडी जैसी प्रथा भी प्रचलित है। सम्बन्ध तय होने पर लड़के वाले लड़की के लिये वस्त्र ले जाते है। साथ में रिश्तेतार व स्त्रियां भी जाती है। लड़का - लड़का का गठजोड कर घर ले आते है।
- **आई भरायण :** जब लड़की का सम्बन्ध कही न हो रहा हो। वह लड़की अपने पंसन्द के युवक के घर चली जाती है। तथा दापा की रकम अगर युवक कन्या के पिता को दे देता है। तो वह उसी घर ब्याह रचाती है। ओर दापा न देने पर लड़की को उसका पिता घर ले आता है। तथा दण्ड वसूलता है।
- **धरणा विवाह :** भीलो में दो - तीन पत्नी रखने की प्रथा है। यदि किसी विवाहित पुरुष को कोई युवती पसंद आ जाये तो वह राजी - बाजी से अपने यहां ले आता है। तथा पत्नी जैसा व्यवहार करता है। तथा लड़की के पिता को झगड़ा देता है।
- **नत्रा विवाह :** यह विवाह विधवा के साथ होता है। इसमें फेरे नहीं पड़ते वरन केवल कपड़े पहनाकर कर उसे घर लाया जाता है। इसे पुनर्विवाह भी कहते है।

▶ **सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) :** भीलों में सम्बन्ध विच्छेद अत्यन्त सरल है। परन्तु ठोस कारण होना जरूरी है। विवाह विच्छेद की प्रथा निम्न है।

1. तिनका तोड़ना
2. पत्तो को चीरना
3. पति द्वारा पगड़ी फाड़ना

▶ **मृत्यु संस्कार :** भीलों में मृत शरीर को सुविधानुसार जलाने, गाड़ने ओर जलदाग करने की प्रथा है। जिनके कोई सगे सम्बन्धी नही हो या मृत्यु बीमारी से हुयी हो उन्हें गाड़ा जाता है। अन्य मामलों में दाह संस्कार किया जाता है।

- मृतक को स्नान कराकर नवीन वस्त्र पहनाये जाते है।
- **डाम प्रथा** मृतक के शव को दागने से सबन्धित है।
- भीलो में मृत्यु के तीसरे दिन **टिंया** करते है। जबकि सम्पन्न लोगो में बारहवां करने की प्रथा है।

▶ **धार्मिक विश्वास और मान्यताएं**

- श्रावण मास में कृषि प्रारम्भ के समय कोयल या मोर की आवाज सुन ले तो फसल बहुत अच्छी होती है।
- शाम को अगर मुर्गे ने बाँग दी तो घर में किसी न किसी की मृत्यु निश्चित होती है।
- छत पर उल्लू बोले तो अच्छे परिवार का नाश होना।
- जरकटी (पक्षी) की हड्डियां को दाएं पैर की पिंडली को चीरकर उसके अन्दर रखने से मनुष्य को साहस मिलता है।
- भीलो के जनजीवन में टोने टोटको का विशेष महत्व है। बच्चे के जन्म पर नवजात शिशु ओर माता के नीचे एक तीर रखा जाता है।
- समय पर बारिश न होने पर बाबादेव को गोबर पर छाप देते है।
- भील तंत्र-मंत्रों पर अधिक विश्वास करते है। घर में यदि कोई परिवार का सदस्य या पशु - बीमार पड़ जाये या जहरीले जानवर द्वारा सता दिया जाये तो ये देवी-देवता का प्रकोप समझकर बड़वा के पास जाते है।

- बड़वा इनके लिये तांत्रिक का कार्य करता है।
- भूत प्रेत सम्बन्धी बाधा को बडवा ताबीज बांधकर प्रभाव से मुक्त करता है।
- शारीरिक बीमारियों का इलाज भील विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों से स्वयं ही करते है। परन्तु असाध्य होने पर बडवा के पास जाते है।

▶ देवी – देवता : प्रायः प्रत्येक भील ग्राम में अपनी पारम्परिक व जाति मान्यताओं के अनुसार प्रथक - प्रथक ग्राम्यदेव, जाति देव तथा कुल देवी, देवता होते है। प्रत्येक भील गाँव में बाबदेव, **भीलट देव,** भेरामदेव, कुहाजा कुंवर, बाभेस्का देव, खेड़ादेव की स्थापना होती है।

- **बाबा देव :** बाबा देव भीलो के प्रमुख देवता होते है। जिसे इन्द्रदेव भी कहते है। बाबादेव के नाम से **दिवासा** मनाते है। भीली मान्यता के अनुसार बाबादेव की आराधना करने से वर्षा अच्छी होती है।
- **कुहाज देव :** कुहाज देव सम्पन्नता के प्रतीक होते है जिसे गाय बैल का रक्षक भी कहते है। दीवाली की पड़वा को मुख्य रूप से इनकी पूजा की जाती है।
- **गलदेव :** गलदेव या हल्दिया देव की स्थापना झाबुआ शहर में तीन स्थानों पर तथा ग्राम ढेकल एवं धार जिले के केसवी ग्राम में की गयी है गलदेव को भील नरसिंह भगवान रूप में पूजते है। ये किसी भी मनोवांछित कार्य की सिद्धि के लिये मनौती मागते है। गल बाबा का मान उतारने का दिन होलिका दहन के दूसरे दिन सम्पन्न होता है। कामना पूरी होने पर गल पर पांच या सात फेरे, बकरे व मुर्गे की बलि देकर मनौती उतारते है।

गलदेव या हल्दिया देव

- **ग्रहदेव :** वाहा बाधाओ से बचने के लिये भीली जनजाति के लोग घर में प्रमुख स्तम्भ के पास ग्रहदेव की स्थापना की जाती है। जिन्हे घिरसिरी या थाम्बोला देव भी कहते है। गृहदेव में खत्रीजो (पूर्वजों) के बास रहता है।
- देशी भाबर, भाबर गोत्रीय भीलो का संरक्षक देव है।
- **भीलट बाबा** [MPPSC Dental Surgeo Exam 2022] :भीलट बाबों भीलों के प्रमुख देवता है। भीलट देव मनुष्यों और पशुओ की सर्प से रक्षा करते है। दशहरे के पूर्व नवरात्रि में माता के जवारे बोकर बाड़ी में प्रतिदिन माता के भजन गाकर बड़वा खेलते है। बड़वानी में भीलट देवलोक का निर्माण किया गया है।

- **संत सिंगाजी देव** : संत सिंगाजी देव के स्थान पर प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा के अवसर पर मेला लगता है। भील भिलाला लोग शरद पूर्णिमा को कवली पुनव के नाम से पुकारते है। संध्या के बाद रात्री आठ बजे तक अपने अपने घरों पर सिंगाजी महाराज की पूजा करते है।

- **देव वगीला-बाबा डूंगर:** ग्राम मनाकुवा जिला झाबुआ की एक बहुत ऊंची पहाड़ी पर देव वगीला बाबा डूंगर की स्थापना की गयी है। झाबुआ अलीराजपुर जिले के भील-भिलाला लोग अपनी कामना सिद्धि के लिए मन्नत लेते है। इनकी पूजा दीपावली की चतुर्दशी को की जाती है।
- **गुवालया के बाब देव :** गुवालया के बाब देव ग्राम सेवरिया तहसील जोबट अलीराजपुर के घने जंगलों में स्थित है। आसपास के क्षेत्रों से आदिवासी जंगलों में पशु चराने आते है। कोई पशु गुम हो जाता है। पशु मालिक गुवालया या बाब देव की आराधन करता है तथा पशु मिलने पर नारियल चड़ाता है।
- **सावन माता** और मालिया बाबा देव कृषि व वन उपजो की रक्षा करते है। इनकी स्थापना खेत में की जाती है।
- **भैरूदेव** शक्ति का प्रतीक होता है। युद्ध में जाते समय भील इनकी बंदना करते है।
- दीपावली के दिन जस्सा माता का पूजन किया जाता है।
- **होवण माता** दैनिक व प्राकृतिक प्रकोपो से रक्षा करती है। इसलिये भील वर्ष में एक बार गांव की सीमा पर एकत्रित होकर होवण माता की आराधना करते है। तथा बड़वा को होवण माता का भार आता है। तथा वर्ष भर के लिये भविष्यवाणी करता है। रात्रि भर पूजन चलता है। तथा दूसरे दिन चलावणी होती है। तथा बकरे की बलि दी जाती है।
- रकाली व **शीतला माता** शारीरिक विकार व बीमारियों की रोकथाम करती है।
- रानी काजल भीलों की प्रमुख माता है।
- **खोडियाल माता** को अंपग विकलांग अपनी मनोकामना पूर्ण होने के लिये मनाते है। झाबुआ शहर में **खोडियाल माता** का विशाल मंदिर है।
- **चोरण माता** की बंदना चोरी, डकैती में सफलता के लिये की जाती है। सफलता मिलने पर बकरी और मुर्गे की बलि दी जाती है।
- भील भगवान शंकर को अपना संरक्षक व पिता मानते है। रणघोष में "हर - हर महादेव" का नारा देते है। आदिशक्ति भवानी अम्बा, कालीदुर्गा के स्वरूप में पूजा करते है। नागपंचमी पर नाग की पूजा कर दूध पिलाते है। जंगली व हिसंक पशु से रक्षा के लिये कुत्ते की पूजा करते है।
- बीर तेजाजी, राम, कृष्ण, गणेश, हनुमान जी की आराधना करते है।

▶ **भगोरिया** [MPPSC Animal Husbandry and Veterinary Science 2021] : होली के एक सप्ताह पूर्व फागुन मास के अन्तिम सप्ताह में मनाया जाने वाला सरस लोक पर्व या प्रणय पर्व है। भील तरूण, तरूणियों के लिये चयन और चुनौती तथा नयी फसल की दृष्टि से यह उंमग और उल्लास का प्रतीक है।

भगोरिया पर्व **भंगोर देव** के नाम तथा भंगोर गोत्रीय भीलो द्वारा आरंम्भ किये जाने के कारण इसे भगोरिया कहा गया। इस त्यौहार का प्रारम्भ झाबुआ जिले के दाहोद के पास हुआ तथा भील भगुरिया भील कहलाये।

वर्तमान में म.प्र. के पांच जिलो के **176 स्थान** [MP Block Extension Exam 2017] पर भगोरिया पर्व का आयोजन किया जाता है।

1. झाबुआ
2. अलीराजपुर
3. खरगौन
4. धार
5. बड़वानी

भगोरिया पर्व तीन भागों में मनाया जाता है।

➢ **तिहवारया हाट :** यह हाट भगोरिया पर्व के सात दिवस पूर्व अलग - अलग स्थानों पर अलग - अलग दिन लगती है। यहां से भीली लोग भगोरिया के लिये आवश्यक सामग्री का संग्रहण करते है।

➢ **भगोरिया : होली**[MPPSC DSP_Radio 2020] के एक सप्ताह पूर्व से भगोरिया हाट प्रारम्भ होता है। भील युवक - युवतियां रंग - विरंगे परिधानों मे सजे - धजे ताड़ी व शराब के सरूर में आदिम कुर्राटियां भरते हुये, गाते - बजाते, झूमते - नाचते सामूहिक नृत्य दल 'गेहर' के साथ हाट में शामिल होते है। नृत्य को भगोरिया कहते है। जब दो गेहरें आमने सामने आती है। उस समय नर्तकों को उत्साह ओर भी बड़ जाता है। और खुद को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शित करने के लिये परस्पर प्रतिस्पर्था प्रारम्भ हो जाती है। । हाट में यदि किसी युवक को कोई युवती पंसन्द आ जाती है। तो वह उसके गाल पर गुलाल मल देता है। ओर प्रत्युत्तर में लड़की गुलाल मल दे तो वे एक दूसरे के जीवनसाथी बन जाते है।

➢ **उजाड़िया :** होली के दिन भगोरिया समाप्त होने के दिन ही उजाड़िया हाटो की शुरूआत हो जाती है। जो एक सप्ताह तक चलते है। इस अवधि में हाट बाजार सूने रहते है। भील अपने - अपने ग्राम क्षेत्रों से गुजरने वाले मार्गो पर अवरोध कर वाहन वालो से रुपये पैसे वसूल कर होली मनाते है।

भगोरिया मेला **बालपुरा** को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

तिहवासा (भगोरिया से सात दिन पहले) → भगोरिया → उजाड़िया (भगोरिया के बाद)

▶ **होली :** होली रंग-राग, उत्साह, उल्लास ओर मेल मिलाप का पर्व है। होली भीलो का **महापर्व** है। गांव के पटेल, तड़वी अन्य लोग मिल - बैठकर यह निर्णय लेते है। कि होली का त्यौहार कब मनाया जाना चाहिये। सेमुल / बाँस का डंडा भी रोपा जाता है। तथा उस डंडा की पूजा की जाती है। वर्ष में जिस भील परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती है। तो सभी वहां बैठने जाते है। इस प्रथा को **रखड़ा उडाड़ना** कहते है।

- **गल :** झाबुआ के आस पास कतिपय भील ग्रामों में गल भरने की प्रथा है। यह भील जनजाति का सबसे बड़ा पर्व मनौती पर्व है। जो होली के दूसरे दिन मनाया जाता है। भील अपने परिवार में किसी भी रोग - व्याधि से मुक्ति हेतु अथवा छोटी बड़ी विपत्तियों में या किसी कार्य

सिद्धि होने के प्रयोजन से ली गई मनोतियां गल डेहर के दिन उतारते है। गल, नरसिंह भगवान का स्वरूप है। भील गल देवता को **पितृदेव** भी कहते है।

- **गढ़ :** भील होली के बारहवें - तेहरवें दिन गढ़ का आयोजन करते है। गढ़ विजय का प्रतीक है। जो राजाओं के समय से आयोजित होता है। इस त्यौहार में एक ऊँचा खम्बा (जो तेल के कारण अत्यन्त चिकना) होता है। जिस पर भीली युवक चढ़ने का प्रयत्न करते है। तथा भीली युवतियां उन्हें चढ़ने से रोकती है, तथा उन पर बैतों से प्रहार करती है। दृश्य अत्यंत ही मनमोहक होता है।

1. **ढोडी :** यह वर्षा के आव्हान से संबन्धित इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिये भील युवक - युवतियों का उत्सव है।
2. **जातर :** प्रत्येक भीली गांव में नवाई के पूर्व जातर उत्सव मनाया जाता है। जातर दो बार मनाया जाता है। बुवाई के बाद मक्का के पौधे कुछ बड़े हो (नादर जातर) कहलाता है, तथा दूसरी बार तब जब मक्का मे दाने आ जाते है। (नंवई जातर) इसमें तडवी या पटेल चंदा मांगकर, सामूहिक रूप से अपने घर यह आयोजन करते है। तथा बड़वा को भार आता है।
3. **नंवई :** नंवई नये अनाज के प्रथम उपयोग का त्यौहार है। इस दिन भील जनजाति धारण देव (गृहदेव) के पास कौटुम्बिक देवी - देवताओं और खत्रीजों (मृत - पुरखों) के नाम से पलाश के पत्तो पर अलग - अलग भोज सामग्री रखकर कुमकुम, अक्षत, घी - दूध से पूजन करते है।
4. **दिवासा :** पावस ऋतु के प्रारम्भ होते ही भील श्रावण मास की अमावस्या को इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिये दिवासा मनाते है। इन्द्रदेव को बाबा देव भी कहते है।
5. **नवणी :** नवणी या नवरात्रा भीलों का धार्मिक - आनुष्ठानिक पर्व है। जिसमें वे अपनी कुलदेवी का पूजन करते है।
6. **इंदल :** भीलो में किसी कार्य के निर्विघ्न पूर्ण होने पर मान्यता लेने का आम रिवाज है। भीलों की सबसे बड़ी मान्यता इंदल है। इंदल आयोजित करने वाला व्यक्ति सगे सम्बन्धियों के लिये भोज का आयोजन करता है।
7. **दीपावली :** दीपावली के त्यौहार पर बड़वा और उसके शिष्य मंत्रों को सिद्ध करते है। इसे मंत्र उजालणा कहते है। नौसिखिये बडवे से मंत्र लेते है। बडवा देवी - देवताओं का पूजन करते है।
   - भीली जनजाति अपने घरों में लक्ष्मी जी की पूजा करते है। तथा दीपक प्रज्ज्वलित करते है।
   - अगले दिन गोवर्धन की पूजा की जाती है।
   - दीवाली के अवसर पर भील युवक घर - घर जाकर "सल्लो" मांगते है।

► **सामाजिक संगठन :** सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था को संचालित करने के लिये परमेश्वर स्वरूप **पटेल, तड़वी, डाहला, पुजारा और बडवा** गांव के मुख्य एवं सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित व्यक्ति होते है। गांव के लोग इनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते है।

- **पटेल:** पटेल गांव का अतिविशिष्ट व सम्मानीय व्यक्ति होता है। उनके सम्मान में लोग खड़े हो जाते है। पटेल गांव का सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी होता है। प्रशासकीय कार्यो के साथ - साथ सामाजिक कार्यो में भी पटेल की मुख्य भूमिका होती है ग्रामवासी पटेल के निर्णय को स्वीकार करते है। पटेल की आज्ञा के बिना शादी - विवाह, पूजनोत्सव और नाहिं कोई त्यौहार मनाया जाता है।
- **तड़वी :** तड़वी पटेल का सहायक होता है। पटेल के अनुपस्थित रहने पर सभी कार्य तड़वी ही करता है। तड़वी को भी पटेल के समान सम्मान प्राप्त है। लगान वसूली का कार्य तड़वी करता है।
- **डाहला :** गांव के वयोवृद्ध को डाहला कहते है। समाज में डाहला की बहुत प्रतिष्ठा रहती है। पर्व त्यौहार या विवाह के अवसर पर जाति भोज के आयोजन पर भंडार गृह का सारा कार्य डाहल के निर्देश पर होता है। खाद्य साम्रगी का खर्च डाहल के अनुमान पर आधारित है।
- **पुजारा :** पुजारे का कार्य पर्व-त्यौहार, शादी-ब्याह के अवसर पर पूजा पाठ सम्पन्न कराना है। यह पद वंश परम्परा अनुसार होता है। पुजारा गांव के धार्मिक स्थलों की सुरक्षा करता है। और उन्हे व्यवस्थित रखता है। पुजारे की पत्नी भी इन कार्यो में उसकी मदद करती है। उसे पुजारिन कहते है।
- **बड़वा :** भील आदिवासियों की सामाजिक व्यवस्था में बड़वा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। बड़वा की बड़ी प्रतिष्ठा है। बड़वे पर देवी देवताओं का भार आता है। यह जड़ी बूटियों का प्रयोग तथा भूत प्रेत भगाने का कार्य करता है। गांव के डॉक्टर के रूप में बड़वा को मान्यता प्राप्त है।

- **कोटवार :** कोटवार गांव का चौकीदार या हरकारा होता है। इसकी नियुक्ति पटेल या तड़वी करता है। शासकीय कर्मचारी या बाहरी व्यक्ति आने पर उनके भोजन व ठहरने की व्यवस्था कोटवार करता है। यह गांव का संदेशवाहक होता है। जोबट में यह पद हरिजन व झाबुआ में यह पद भील के पास होता है।
- **गायक :** गायक बड़वे का सहायक है। यह कामड़ी (बाँस की चीपो से बना वाघ) के स्वर पर देवी-देवताओं की गाथाएँ गाता है। गाथाएँ रात रात भर चलती है। ओर बड़वे पर भार आता है।
- **वारती :** सामूहिक जाति भोज के अवसर पर वितरण की सारी व्यवस्था वारती की होती है। पटेल, तड़वी पुसोरा आदि का पद वंश परम्परागत चलता है।

▶ **आर्थिक जीवन :** **भीलों का आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि** [MPPSC Assistant Registrar Examination 2022] पर आधिरित है। इसके अलावा मजदूरी, व्यवसाय, शिकार आदि उनकी प्रमुख आय के संसाधन है।

9. **कृषि :** आर्थिक आधार के रूप में कृषि भीलों का प्रमुख स्त्रोत है। कृषि उपजो में मक्का, ज्वार, बाजरा, कोदरया चना, उड़द मूँग आदि प्रमुख है। भीली क्षेत्रों मक्का व ज्वार अधिक पैदा होती है। भीली कृषि के अंतर्गत उपयुक्त औजार, हल, ओखर, कोलपा (कुपो), तीरफन आदि प्रयुक्त होते है। फसल की बुबाई, निराई और कटाई के समय भील परिवार एक दूसरे को सहयोग देते है। जिसे हल्मा प्रथा कहते है। भीलो के द्वारा की जाने वाले कृषि के चिमाता[MPPSC State Engineering service pre 2016] कहते है।

- **मजदूरी :** भील अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिये कृषि के अलावा लकड़ी काटने, चौकीदारी आदि का कार्य पूरी निष्ठा से करते है। इसके अतिरिक्त भीली जनजाति के लोग बुवाई, निराई और कटाई का कार्य करते है।
- **व्यवसाय :** भील मुर्गी - बकरी पालन करते है। मुर्गियों, बकरियों अंडे, दूध और घी आदि बेचकर आय जुटाते है। नदी से मछलियां, जंगल से शहद, गोंद, महुआ और लकड़ियां एकत्रित कर बाजार में बेचते है।

▶ **नृत्य :** भीली जीवन को नृत्य, संगीत ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। जब कोमल लय के साथ, वाघो के ताल पर गीतों केा गायन किया जाता है। तो नृत्य का अंकुर अपने आप फूटने लगता है।

- **भगोरिया** [Mp Anatst Exam 2017] **:** फागुन माह में होली से पूर्व भीलांचल में भगोरिया हाट भरते है। इस दौरान हाटो में होने वाले नृत्य को भगोरिया नृत्य कहते है।
- **डोहिया :** डोहिया नृत्य भी भगोरिया हाटों में किया जाता है। युवक - युवतियां आमने - सामने खड़े होकर विभिन्न प्रकार से अंग संचालन करते हुये कभी आगे बढ़ते कभी पीछे हटते है। कभी दांयी - बांयी ओर झुककर झूमते हुये नाचते है।
- **गहर :** होली के अवसर पर गहर नाच होता है। नृत्य की मुख्य विशेषता यह है। कि नृत्य में स्त्री - पुरूष और एक जोगी बनता है। युवकों के हाथ में फालियां, लट्ठ, तीर - कमान और जोगी के हाथ में मूसल रहता है। वाद्यो की चालें पूर्व निश्चित होती है। जो लय के प्रत्येक मान पर बदल जाती है। नृत्यकार अपने काम में इतने पांरगत होते है। कि ताल और धुन परिवर्तन के साथ ही अपनी चालों एवं भाव-भंगिमाओ को परिवर्तित कर नवीन भंगिमाओ का सृजन कर लेते है। इसमें ढोल, बीना और कुंडी नृत्य के प्रमुख वाद्य है।
- **डोहो :** यह मनौती वाला धार्मिक उत्सव है। भील युवक - युवतियां रात्रि में 'डोहो' लेकर घर - घर जाकर नृत्य करते है। डोहो एक मिट्टी की छोटी मटकी होती हैं यह चारो तरफ छिद्रित होती है। इसके अन्दर दीपक जलाकर अपने सिर पर धारण करती है। ग्यारस से दीपावली अमावस तक यह नृत्य किया जाता है। आखिरी दिन डोहो को देव स्थान पर छोड़ते हैं
- **गरबी :** दीपावली पर गरबी नृत्य करते है। जो श्रवण मास और नवरात्रि पर बड़वा द्वारा किया जाता है।

▶ **विवाह नृत्य :** भीलो में विवाह के अवसर पर कई सारे नृत्य किये जाते है।

- **पुरूष डांग साला नृत्य :** घर से बारात रवाना होने के बाद रास्ते में विश्राम स्थल पर स्त्री-पुरुष अलग - अलग समूहों में नृत्य करते है।
- **लत मार साला नृत्य :** यह नृत्य बधू पक्ष की स्त्रियों द्वारा बारात की आगवानी पर किया जाता है।
- **फरकणी साला नृत्य :** जब वर - वधू पक्ष के स्त्री - पुरुष एक दूसरे से मिलन भेंट में गोल - गोल घूमते है। व एक दूसरे को काटते है। इसलिये इस फरकणी साला नृत्य कहते है।

- **पख्यो नृत्य :** लग्न के बाद वर - वधू पक्ष की स्त्रियां सामूहिक रूप से एक दूसरे के गले में हाथ डालकर एक दूसरे को चिढ़ाती हुयी पख्यों नृत्य करती है।
- **घोर नाच :** आमने सामने खड़े होकर चिटकोरा हाथ में लेकर स्त्रियां द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
- **लोहरी नृत्य :** यह नृत्य घोर नाच के ही समान है। किन्तु एक अंतर है। घोर नाच पंक्ति में किया जाता है। व लोहरी नृत्य अर्द्धवृत में किया जाता है।
- **अंटिया नाच :** शादी में पुरुषों द्वारा हाथ में छोटे - छोटे डंडे लेकर गोलघेरो में घात - प्रतिघात करते हुए जोडी में नाचते - नाचते वृत्त बना लेने वाले नृत्य को अंटिया नाच कहते है।
- इसके अलावा जोतरा नृत्य दूल्हे के मामा द्वारा तथा बारात वापसी पर मूड़ा नृत्य किया जाता है।

▶ **बाद्य यंत्र :** नृत्य संगीत में भीली जनजाति ढोल, मांदल कुंडी, ढॉक, फेफर्या, बाँसुरी, अलगोझा, केदंरिया कामड़ी ओर थाली वाद्या यंत्रों का प्रयोग करते है।

- **कुण्डी :** यह मिट्टी की बनी होती है। इसके ऊपर बकरे या घोरपड़ का चमड़ा चढ़ाकर चमड़े की रस्सी से इसे कसा जाता है।
- **कामड़ी :** बाँस की चीपों पर निर्मित कामडी ढाँक की सहयोगी वाद्य है। यह बांस के टुकडे को खड़ा काटकर बनाया जाता है।
- **फेफर्या :** शहनाई की भीली भाषा में फेफर्या कहते है। यह शादी-विवाह के अवसर पर गाया जाता है।
- **बॉसुरी :** भीली लोग बांसुरी को पांवली और रोहली तथा झाबुआ अंचल में **बाहली** कहते है।
- **अलगोझा :** अलगोझा का आकार वाहली जैसा ही होता है। बस इसमें जीभ होती है। इसे होठों पर खड़ा रख कर बजाते है।
- **केन्दारिया :** यह फूंक वाद्य है। जो बांस की चीप से बनाया जाता है।

▶ **भित्तिचित्र :** भीली जनजाति मांगलिक अवसरों को अधिक समधुर व आन्दमय बनाने के लिये घर की भीत पर गाय, बैल, सर्प, आम्र वृक्ष, शेर ओर शिकार करने के हथियार का अंलकरण करते है। जिन्हें गोतरेज कहा जाता है।

जोबट व अलीराजपुर के भीली क्षेत्र में नंवई पर्व के एक दिन पूर्व घर के अन्दर भीत पर पिथौरा बनाये जाते है। पेमा फाल्या को इस क्षेत्र में अद्वितीय ख्याति प्राप्त है। पिथौरा बनाने वाले को लिखिन्दर कहते है।

- **गातला :** जब किसी भील स्त्री या पुरुष की दुर्घटना या किसी शौर्य प्रदर्शन के वक्त मृत्यु हो जाती है। तो मृत्यु के पश्चात मृत व्यक्ति की स्मृति में पत्थर के शिल्प गाड़े जाते है। जिन्हें गातल कहते है। गातल पर सूर्य, चन्द्र व अश्व के चित्र अवश्य उकेरे जाते है।
- **गुदना :** गुदना कला भीली संस्कृति का एक आवश्यक भाग हैं भीली स्त्रियां अपने शरीर पर कई प्रकार की आकृतियां गुदवाती है।
- **आम्बा :** इसे अम्बाड़ा भी कहा जाता है। इसमें आकृति को उकेरने के लिये रेखाओं का प्रयोग किया जाता है।
- **आम्बा चोर :** चतुर्भज के आकार का चिन्ह शरीर के किसी भी बांछित अंग पर भीली स्त्रियां गुदवाती है।
- **कहावरी** : इसमें दो प्रकार के चित्र उकेरे जाते है। एक कोणाकार ओर दूसरे दो उल्टे चतुर्थांश वृत्तों द्वारा बने।
- **छितारा** : यह आकृति प्रायः हाथो पर गोदी जाती है, छितारा दोहरी रेखाओ वाले दो मुखापेक्षी कोणों से बनते है।

Exercise no 6	
1. भगौरिया पर्व किस त्योहार से संबंधित है। [MPPSC DSP_Radio 2020] (a) नव वर्ष (b) होली (c) दीपावली (d) दशहरा 2. भील जनजाति का प्रमुख पर्व है। [MPPSC Section Officer 2021] (a) भगोरिया (b) करमा (c) बिदरी (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं 3. भीलट बाबा कौन है। [MPPSC SES 2021] (a) भारिया के प्रमुख देवता (b) भीलों के प्रमुख देवता (c) बैगा के प्रमुख देवता (d) सहरिया के प्रमुख देवता 4. भील जनजाति का मुख्य व्यवसाय क्या है? [MPPSC Assistant Registrar Examination 2022] (a) पशुपालन (b) चित्रकारी	(c) कृषि (d) तंत्र विध्या 5. भैंस संस्कृति (भैंस के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव) पायी जाती है। [MPPSC SFS Main Paper 2019] (a) भीलों में (b) कामार में (c) डेल्की खारिया में (d) टोडा में 6. मध्य प्रदेश में प्रथम भील सामुदायिक रेडियो केन्द्र कहाँ प्रारंभ किया गया है। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021] (a) नरसिंहपुर (b) भाबरा (c) महू (d) सैलाना 7. पिथौरा चित्रकला किस जनजाति से संबंधित है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] (a) कोल (b) सहरिया (c) गोंड (d) भील
1. (b) 2. (a) 3. (b) 4. (c) 5. (a) 6. (b) 7. (d)	

1.7 बैगा जनजाति

► **उत्पत्ती से संबंधित धारणाये** : बैगा अपने आपको जंगल का राजा कहते है। इनकी उत्पत्ती के संबन्ध में मान्यता है कि प्रारम्भ में भगवान ने नागा बैगा और नागी बैगिन को बनाया। नागा बैगा और नागी बैगिन से दो सन्ताने हुई पहली सन्तान बैगा और दूसरी गोंड थी।

- नागा बैगा ने पृथ्वी को बनाया है। इसलिये वह "**भूमिका**" कहलाये तथा पृथ्वी उनकी बेटी है। अतः वह उसकी छाती पर हल नहीं चलाते है।
- बैगा **प्रकृति पुत्र** है। प्रकृति के सतत् सान्निध्य में रहने से इनकी त्वचा का रंग प्रायः गहरा काला है। स्त्रियां में गौर वर्ण बड़ी मुश्किल से देखने को मिलता है।
- बैगा जनजाति **कौवे** का विशेष सम्मान करते है।
- बैगाओं में पहले कभी **टोटम प्रथा** थी। लेकिन धीरे धीरे समाप्त होती गई। प्रत्येक जात का एक निश्चित गढ़ होता है।
- बैगा जनजाति **द्रविड वर्ग** [MP SI Exam 2017] की जनजाति है। इसे हालहि में अत्यन्त पिछडी जनजाति में शामिल किया गया है।
- बैगा जनजाति अपने आप को **धरती पुत्र या बिछवार** कहकर संबोधित करना पसन्द करती है।
- बैगा जनजाति बंगाल और बिहार की **भुइया** जनजाति की शाखा हैं भूईया जनजाति कालांतर में भूमिका बाद में धरती पुत्र कहलाई।

- म.प्र. में बैगा जनजाति का संकेन्द्रण मुख्यतः मंडला, बालाघाट, उमरिया, डिंडोरी, व अनुपपुर जिलो में है।
- बैगा चक लगभग 60 किलोमीटर चोडा और 300 किलोमीटर लम्बा है। इसमें बैगाओ के 80 के ऊपर गॉव है। यह क्षेत्र गहन साल वृक्षो से आच्छादित है।
- डिंडोरी जिले के समनापुर विकासखण्ड के अंतर्गत 52 गांवो को मिलाकर **बैगा चक**[MPPSC Tax Assistant 2012] बना गया है।
- बैगा जनजाति के लोगो को एल्विन ने अपनी पुस्तक 'द बैगा' में जादूगर या वैध "Sorcerer or medicine man" कहा हैं
- म.प्र. में बैगा जनजाति की जनसंख्या 4.15 लाख है।
- म.प्र में सर्वाधिक बैगा जनसंख्या बाहुल्य जिला मण्डला है।

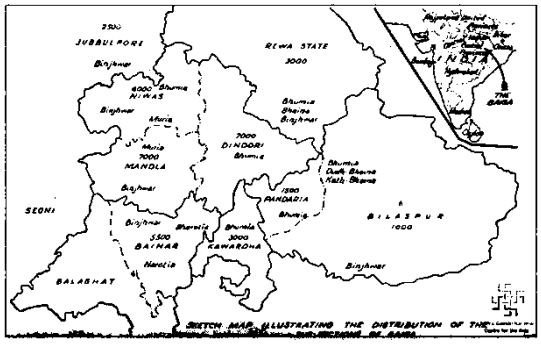

▶ **भौगोलिक वितरण :** बैगा जनजाति का संकेन्द्रण मुख्यतः मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में है।

- इनका प्रमुख संकेन्द्रण मंडला, डिडौरी, शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, बालाघाट के जंगलों में पाया जाता है।
- बैगा जनजाति दुर्गम जंगलो में निवास करती है,तथा अन्य जनजाति के गांव में निवास नहीं करते वरन अपना अलग गांव बनाती है।
- ब्रिटिश काल में चाड़ा डिडौरी नामक क्षेत्र को बैगा चक कहा जाता हैं।

▶ **उपजातियां** [MPPSC Dental Surgeo Exam 2022] : रसैल ने मुख्य **तह:** सात बैगा[MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] जनजाति बताई है। बिंझवार, भरोतिया, नरोतिया, रायमैला, कटमैना (कोडवंन), गोंडमैना। बैगा जनजाति में उच्च स्थान भरोतिया को ओर निम्नतर स्थान गोंड मैना (जो बंदर) खाते है।

- **बिंझवार :** बैगाओ की सबसे सभ्य उपजाति है। बैगाओ की अन्य उपजातियो से अपने आप को अलग बताने के लिये ये अपने आप को विध्यांचल या विन्धवार कहलवाते है। विझवार जनजाति भी बड़े जमीदार होते है।
- **भरोतिया :** ये जनजाति अपने मौलिक अवस्था में है। इनके सभी रीतिरिवाज भुमिया बैगाओ से मिलते है। यह सघन रूप में बैहर तहसील के सुखपार परिक्षेत्र में रहते है। भरोतिया का अर्थ होता है "भरता या भरण पोषण करने वाला"
- **भुमिया :** भुमिया का अर्थ होता है। भूमि स्वामी इनका मानना है। ईश्वर ने सबसे पहले भूमिका बैगा को ही उत्पन्न किया था।
- भरोतिया उप जनजाति सबसे ज्यादा जंगली होती है। इस जनजाति ने अभी तक हल नहीं चलाया है।
- **बिझंवार जनजाति** हिन्दूकृत होती है। और नांहि अन्य बैगा जनजाति में शादी करते है। बैल, गाय, नीलगाय का मांस नहीं खाते है।

▶ **शारीरिक विशेषताएं :-** बैगा पुरूष कमर के नीचे एक वस्त्र और सिर पर कपड़े का टुकड़ा बांधते है। रूढ़िवादी बैगा परम्परा में जितना संभव हो उतना कम कपड़े पहनते है। नंगे बैगा मात्र डेढ हाथ कपड़ा पहनते है। परन्तु वर्तमान समय में यह स्थिति बदल गई है। परन्तु फिर भी जंगली बैगा अभी भी बहुत कम कपड़ा पहनते है।

- स्त्रियां धोती पहनती है। ज्यादातर बैगा स्त्रियां अपनी धोती को घुटनों से ऊपर पहनती है। स्त्रियों में आभूषण व गुदने का अत्यन्त महत्व है। बैगा स्त्रियों के गुदने व गोंड स्त्रियों के गुदने में एक प्रमुख अंतर

गाल पर रखने वाली तीन बिदियां है। गोंड स्त्रियों के गुदने में टिमकी महत्वपूर्ण होती है।

- बैगा स्त्रियां अपने सम्पूर्ण शरीर पर गुदना गुदवाती है। सर्वप्रथम बैगा स्त्रीयां अपने माथे पर गुदना गुदवाती हैं।
- इनकी शारीरिक बनावट में चपटे सिर, मोटे होठ, फैले हुये नथुने मुख्य है।
- बैगा पुरूष अपनी महिलाओं की तुलना में अधिक सुन्दर होते है। युवा पुरूष अक्सर मजबूत दुबले-पतले, सुडौल होता है।

▶ **जन्म संस्कार :** बैगा स्त्रियाँ गर्भवती होने पर भी घर, खेत, जंगल का कार्य बराबर करती है। गर्भवती होने की प्रथम सूचना पर घर में किसी प्रकार की खुशी या रस्म का निर्वाहन नहीं होता है।

- बच्चे के जन्म का कार्य सुनमाई (स्यानी महिला) करती है। सुनमाई नवजात शिशु का नारा काटती है। ओर उसे सूप में सुलाती है। जिसमें कोदों कुटकी के कुछ दाने पड़े रहते है।
- छटवे दिन छठी पूजन होता है। इसे सोअर उठाई भी कहा जाता है।
- नामांकरण का कार्य गांव का मुकद्दम करता है। तथा नेग के रूप में रूपया थाली में डालता है।
- शिशु जन्म के दिन अगर गांव में कोई अधिकारी आ जाये तो उसके पद से नाम रख देते है। जैसे- रेंजर, जमादार

▶ **विवाह संस्कार :** बैगा समाज में विवाह एक पवित्र बंधन है। एक ही जात में विवाह वर्जित है। परन्तु विवाह में गोत्र एक हो सकता है। लेकिन एक जात के लड़का-लड़की, भाई-बहिन होते है। किन्तु मामा-बुआ के लड़के-लड़की का रिश्ता हो सकता है। पहला रिश्ता यही से शुरू होता है।

- बैगा जनजाति में कन्या या स्त्री को पूर्ण स्वतत्रंता दी जाती है। कन्या की इच्छा का सभी आदर करते है। तथा सोलह सत्रह वर्ष की लड़की को व्यस्क मानते है।
- एक जात के सदस्यों में रक्त सम्बन्ध माना जाता है।
- बैगा समाज में विवाह की छः पद्धति प्रचलित है।
  - ➢ मँगनी विवाह या चढ विवाह
  - ➢ उठवा विवाह
  - ➢ चोर विवाह
  - ➢ पैठूल विवाह
  - ➢ लमसेना विवाह
  - ➢ उधरिया विवाह

मँगनी विवाह : इस विवाह में लड़के का पिता लड़की के घर जाता है। साथ में दो बोतल मंद (मदिरा) भी ले जाता है। तथा बड़े स्थानों के साथ आंगन में बैठकर "प्रतीक" के माध्यम से लड़की से उसकी स्वीकृती पूछता है। अगर लड़की अपनी स्वीकृती प्रदान करती है। तो वह घर आकर विवाह की कार्यवाही प्रारम्भ कर देता है। अस्वीकृत होने पर वह वापस लौट जाता है। स्वीकृति की दशा में पन्द्रहवे दिन लड़के (वर पक्ष का पिता) वाला कुछ गणमान्य सदस्यों के साथ लड़की वाले के यहां जाकर सगाई पक्की कर लेता है। इस दौरान मनमोहक **बिलमा गीत** का गायन होता है। तथा इसी दौरान मंद का वितरण कर विवाह की जिम्मेदारिया भी बांट दी जाती है। मुकद्दम विवाह का जिम्मेदार व्यक्ति होता है। तथा सभी लोग करमा नृत्य में व्यस्त हो जाते है। मंगलवार की सुबह मांगर माटी की प्रथा होती है। इसे माटी खनौनी भी कहते है। बारात के आगमन पर वर पक्ष वधू पक्ष के घर के सामने एक मैदान में परधौनी नृत्य का मंचन करता है। दुल्हे के साथ वाले बारातियों द्वारा ददरिया गीत का गायन किया जाता है।

➢ **उठवा विवाह** : बैगाओ में उठवा विवाह का बहुत महत्व है। इसमें लड़की का पिता लड़की को साथ लेकर अपने सगे संबन्धियों के साथ सम्पन्न होता है। तथा सम्पूर्ण खर्च वर पक्ष उठाता है।

➢ **चोर विवाह :** बैगाओ में चोर विवाह का प्रचलन सर्वाधिक है। लड़का - लड़की राजी - बाजी से भाग जाते है।

➢ **पैठूल विवाह :** कुंवारी लड़की जब अपनी इच्छा से स्वयं लड़के के घर घुस जाती है। ऐसे विवाह को पैठूल विवाह कहते है। इस विवाह में लड़की लड़के के घर में घुस कर उस पर हल्दी का छींटा मारती है।

- **लमसेना विवाह :** लड़के के पिता विवाह करने में असमर्थ हो तो पिता की मरजी से लड़का - लड़की के घर रहने चला जाता है। और लड़की के पिता की सेवा करता है। ऐसा लड़का लमसेना या घर दामाद कहते है। लमसेना रहने की उम्र 3 से 7 वर्ष होती है।

- **उधरिया विवाह :** उधरिया विवाह में दोनो पक्षों में सहमति नहीं होती लड़का - लड़की अपनी मर्जी से किसी दूर के रिश्तेदार की मदद से विवाह कर लेते है।

बैगाओं में बहुपत्नी रखने का रिवाज है। लड़की अपनी मर्जी से दूसरा विवाह कर सकती है। बैगाओ में कन्या हरण की प्रथा पाई जाती है। विधवा अपने देवर या किसी और के नाम की चूड़ियां पहन सकती है।

- **मृत्यु संस्कार :** बैगा जनजाति में शव को दफनाने और जलाने की दोनो प्रथाएं प्रचलित है। परन्तुं दफनाने की प्रथा प्रायः प्राचीन व सर्वव्याप्त है। अधिक दिन तक बीमार व्यक्ति को जलाया जाता है।
  - बैगाओ के श्मसान नदी के किनारे दूसरी पार होते हैं इनकी इसके पीछे मान्यता है। कि प्रेत आत्मा नदी को पार नहीं कर सकती है।
  - आत्मतृप्ति के लिये बैगा जनजाति मरने वाले व्यक्ति के मुंह में सोने या चांदी का रूपया दही रखकर रखते है। इसे **सामरा प्रथा** कहते है। इसके पीछे मान्यता है। व्यक्ति अगले जन्म धनवान होता है। सामरा का रूपया चिता में डाल देते है।
  - दफनाते समय पुरूष के सिरहाने धनुष, बाण, कुल्हाडी, तम्बाकू, चिलम, चोंगी रखते है। तथा जलाते समय शव को उल्टा लिटाते है। शव का सम्पूर्ण श्रृंगार किया जाता है। तथा तीन दिन तक मृतक परिवार में **सूतक** रहता है।
  - मृतक के क्रिया कर्म में किसी प्रकार के गीत नहीं गाये जाते है। परन्तु नगाड़ा बजाना अनिवार्य है। जिसे **नहावन प्रथा** कहते है। नहावन प्रथा तीन प्रकार की होती है।
  - मरे हुये व्यक्ति की आत्मा प्रेतात्मा में बदल जाती है। इस बात को बैगा आंख बन्द करके स्वीकार करते है।
- **वस्त्र आभूषण :** बैगा जनजाति अपने शरीर पर बहुत कम वस्त्र पहनती है। पुरूष प्रायः पटका (लंगोटी) पहने रहते है। उघड़े बदन रहते है। स्त्रियां शरीर पर केवल एक साड़ी लपेटती है। बच्चे प्रायः नग्न अवस्था में रहते है।
  - बैगा स्त्रियां तीन तरह के लुगड़े पहनती है। मुंगी, बिगरा, चगदरिया परम्परागत स्त्री वस्त्र है। ये वस्त्र मोटे सूत के बने होते है। बैगा जनजाति के लिये वस्त्र बनाने का **कार्य पनिका जनजाति** करती है।
  - **मूंगी धोती** पहना बैगा स्त्रियों का पहला शौक है। यह धोती 16 हाथ की होती है। इसका रंग लाल होता है। बीच बीच में सफेद रंग के धागों से कलात्मक कारीगरी की जाती है।
- **आवास व्यवस्था :** बैगा जनजाति अपने स्वभाव के कारण ऊँचे स्थान घने जंगलो में बसना पसन्द करती है। बैगा जनजाति समूह में निवास करती है। इनके मकानों के **समूह को** "टोला" **कहते है**। तथा प्रत्येक टौला में 6-8 घर होते है।
  - बैगाओ के मकान तक जाने का केवल एक ही रास्ता होता है। जो इन्हे एक विशेष प्रकार की सुरक्षा (जंगली जानवरो) से प्रदान करता है।
  - बैगा अपने मकान को बनाने के लिये लकड़ी व घास फूस का संग्रहण जगलों से करता है। मकान बनाने के लिये सरई के तीन थांबा जमीन में सीधे गाड़ दिये जाते है। तथा इन पर तीन बरेण्डी डालते है। **बक्कल** की छाल बैगाओ की कील होती है।
- **अर्थव्यवस्था :** बैगा जनजाति गाय को लक्ष्मी मानते है। तथा मक्का का संग्रहण करते है।

  - बैगा अपना गुजारा बहुत सीमित साधनों में करते है। दैनिक जीवन के सारे उत्पादन ये लोग प्रकृति से प्राप्त करते है।
  - बैगा जनजाति के लोग महलोन के पत्तो का संग्रहण करते है। जिनसे वे थाली ओर कटोरा बनाते है। जिनमें वे पेज, मंद का सेवन करते है। ओर बाजार में बेच

कर धन प्राप्त करते है। बैगा स्त्रियाँ महलोन संग्रहण मे हमेशा लगी रहती है।

- बांस की चीजे बैगा घर में ही तैयार करते है। ये लोग बांस शिल्प के सिद्धस्त शिल्पकार होते है। बांस से सूपा, टोकनी, ओडी (टोपी) आदि बनाकर बाजार में बेचते है। बांस से घर का दरवाजा चलित टंटिया भी बनाते है।
- बैगाओं को जंगल से बहुत प्यार व लगाव है। जिसके कारण ये बहुत कम शहरों में रहते है।
- **बैगा जनजाति खेती में हल का प्रयोग नहीं करती है।** यह खेत में हल चलाना पाप समझते है। तथा सीधे बीजो को जमीन में छिड़क देती है। बैगाओ के द्वारा की जाने वाली कृषि **"बेवर"** कहलाती है।

▶ **आचार व्यवहार व स्वभाव :** बैगा स्वभाव से भोले, निष्ठावान (ईमानदार) तथा मेहनती होते है। अपनी रूढ़ियों को टूटने से डरते है। ये बाहर से दब्बू और भाव विहीन लगते है। परन्तु भीतर से सहिष्णु और उदार होते है।

- समाज के सारे नियम कानून व बडो की बात का पूरी निष्ठा से पालन करते है। तथा मुकद्दम की आज्ञा का उल्लघंन कोई नहीं कर सकता है।

▶ **बैगाओं की धार्मिक मान्यताएं :** बैगा **उड़द की दाल**, व **साज वृक्ष** को **पूज्जनीय मानते** है। इस पर **बूढादेव**[MPPSC SSE 2003] का निवास होता है।

- ये शाकाहारी व मासाहारी दोनो प्रकार के होते है। मक्का का पेज सबसे प्रिय होता है।
- बैगा शेर, रीछ, रेड़ा, बिल्ली, कुत्ते व गौरैया का मॉस खाना जाति प्रथा के मान से निषेध है। बैगा लोग **गौरैया को ब्राम्हण** मानते है।
- बैगा जादू टोने में अत्यधिक विश्वास करते है। तथा कमर में प्रत्येक बैगा कन्दोरा (काला धागा) बांधता है। तथा मान्यता है। घर मे नीबू मिर्च लटकाने से कोई बीमारी नहीं आती है।

- बैगा समाज अंधविश्वासी है। वह सभी बीमारियों का इलाज झाड़ फूंक से करते है। कठिन से कठिन बीमारियां गुनिया अपनी हिकमत से ताड लेता है। **गुनिया बैगा** समाज का वैध होता है। वह कई औषधियों का संग्रहण भी करता है। जिसके कारण उसे जादूगर या चिकित्सक पुरूष भी कहते है।
- बैगा समाज में ऐसी मान्यता है। कि समस्त बीमारिया का कारण देवता का रुष्ट हो जाना है। इन बीमारियों से बचने के लिये बैगा अपने देवताओं को खुश करने के लिये नियमित बलि का आयोजन करते है।
  1. बूढ़ा देवता - बकरे की बलि
  2. महारानी देवी - बकरी की बलि
  3. म्हारा देव - सूअर की बलि
  4. देशावरी देव - मुर्गा / मुर्गी की बलि
- पशुओं को बीमारी में दागने की प्रथा है। इसके कारण बैगाओं के पशु कद में छोटे होते, दुर्बल और चमकहीन होते है।
- यद्यपि बैगाओ में ईश्वर के बारे में स्पष्ट अवधारणायें नहीं है। किन्तु देवीय शक्ति में पूर्ण विश्वास है।
- ठाकुर देव[State Engineering Service 2021] :- ग्राम देवता है। यह गांव का रक्षक होता है। ठाकुर देव का निवास सरई या महुआ का वृक्ष होता है। बैगा परम्परा के अनुसार सृष्टि के निर्माता ठाकुर देव है।
- ठाकुर देव की पूजा हर तीन साल में की जाती है। सफेद बकरे की बलि दी जाती है। पूजा में सम्मिलित लोग उसे खाते है। परन्तु स्त्रियों को यह मांस का सेवन प्रतिबंधित है।
- खैर माई ग्राम देवी है। खैर माई की प्रतिष्ठा भी ठाकुर देव की मड़ई में की जाती है। खैर माई को महारिन देवी कहते है। खैर माई की पूजा में बच्चे, बूढ़े, स्त्रियां शामिल होती है।
- वघेश्वर बेबर (खेती) के देवता है। बेवर खेती घने जंगलो में की जाती है। जहां बाघ को आने का भय रहता है। इसलिये वाघ को देवता मानकर वघेश्वर देव की पूजा की जाती है।

- बनजारिन माई वन देवी है। घाट के बीहड़ वन में जंगली जानवरों से बचाने वाली है।
- नाग को बैगा नागेश्वर मानते है। तीन साल में बैगा नागेश्वर की पूजा करते है। और सूअर की बलि देते है।
- **नारायण देव बैगाओं का कुल देवता** है। नारायण देव प्रत्येक घर मे द्वार पर स्थापित होता है। नारायण देव की पूजा का बैगा समाज में अत्यधिक महत्व है।
- नारायण देव की पूजा तीन साल, सात साल व बारह वर्ष में होती है। तीन वर्ष पूर्व नर सुअर का बच्चा छोड़ा जाता है। तीन वर्ष बाद उस सुअर के बच्चे की बलि दी जाती है।
- रात्रि देवी बैगाओं की रात में रक्षा करती है।

▶ **पर्व त्योहार :** बैगा जनजाति के लोग बिदरी, हरेली, नवा दशहरा, दिवाली, छेरता, फाग और जवारा त्यौहार मनाते है।

- **बिदरी :** बिदरी बैगाओ का बीज बोने का त्यौहार है। बिदरी बीजो की पूजा के बहाने अच्छी फसल की कामना का त्योहार हैं बिदरी के दौरान बैगा नारायण देव के अलावा सभी देवी देवता का आवाहन करता है।
- **हरेली :** हरेली त्यौहार सावन की मरती (अमावस्या) को मनाया जाता है। इस दिन बैगा धरती की पूजा करते है। इससे खेत में फसल अच्छी होती है।
- **छेरता :** बैगा बच्चो का त्यौहार है। बच्चे टोली बनाकर साधू वेश में छेरता मागते है। इसके पीछे इनकी प्राचीन मान्यता भी है।
- **नवा फसल :** नवा फसल कटाई का पर्व है। ऐसी मान्यता है। कि जो नई फसल आयी है। उसे पहले अपने पितरों को खिलाना चाहिऐ। अगर पितरो को भोग न लगा। ओर किसी ने फसल का उपयोग किया उसे सर्प काट लेता है। नवा खानी का त्यौहार बैगा सर्पदंश के भय से अवश्य मनाते है।
- दीपावली होली
- **दशहरा :** बैगा कुंवार दशमी को दशहरा त्यौहार मनाते है। दशहरे का स्वरूप थोड़ा भिन्न होता है। बैगा दशहरा पर दशहरा नृत्य करते है। तथा युवक-युवतियां अपने जीवन साथी का चयन करते है।
- जवारा देवी पर्व है। चैत्र से ज्येठ माह तक तथा कुंवार महीने में खैर माई की मढिया में जवारा बोये जाते है। नवे दिन जवारा उखाड़कर जुलूस के साथ नदी में विसर्जित किये जाते है।

▶ **हाट बाजार :** हाट बाजार बैगाओं की जरूरत की वस्तुओं के खरीदने का प्रमुख केन्द्र है। हाट बाजार से बैगा उन वस्तुओं का क्रय करते है। जिनका निर्माण वह नहीं कर पाते तथा बांस आदि से बने शिल्प को बैगा हाट बाजार में बेचकर धन की प्राप्ति भी करते है। हाट बाजार में बैगा बनोपज को बेचकर वस्तुओं को खरीदते है। आमतौर पर हाट बाजार सप्ताह में किसी एक दिन लगाते है।

▶ **शिकार :** बैगा जनजाति एक शिकारी समूह है। कुल्हाड़ी व फरसा बैगाओं के कन्धे पर अवश्य मिलता है। बैगा हमेशा धनुष बाण साथ रखते है। बैगाओ की शिकार कला विकसित व आधुनिक है। ये सीधा शिकार करना कम पसन्द करते है। बल्कि अपनी बुद्धि से विभिन्न प्रकार के फन्दो का निर्माण करते है। ये सामूहिक तथा व्यक्तिगत प्रकार से शिकार करते है।

फंदो के प्रकार

1. खुज्जी फंदा - मुर्गा, मुर्गी, मोर
2. दलगा फंदा - खरगोश, चीतल, सॉभर
3. थोंगा फंदा - चीता
4. दबका फंदा - चूहे (बेवर कृषि)
5. सूरी फंदा - शेर फंसाने
6. चेप फंदा - पक्षिओं (चेप चिपकने वाला पदार्थ)

▶ **सामाजिक संगठन :** बैगा समाज परम्परा से सामूहिक जीवन व्यतीत करता है। परिवार बैगाओं के सामाजिक संगठन की ईकाई है। बैगाओं का सामाजिक संगठन आन्तरिक रूप से सुव्यवस्थित और सुंसगठित है।

- बैगा अधिकांश एकल परिवार में रहते है। परन्तु पुत्र पिता से अलग होकर पास में दूसरा घर बना लेता है। माता पिता किसी भी पुत्र के पास स्वेच्छा से रहते है। परिवार में स्याने (बड़े) का बड़ा सम्मान होता है। छोटे उनकी आज्ञा सदैव मानते है।
- बैगा समाज पुरुष प्रधान है। समाज में पुरुष के बनाये गये नियम लागू होते है। परन्तु स्त्रियों का अनादर पूरे बैगा समाज का अनादर माना जाता है। नारी को कई प्रकार की **स्वायत्तता, स्वच्छंदता** और **स्वतंत्रता** प्राप्त होती है। युवतियों की मर्जी के बिना विवाह सम्बन्ध स्थापित नहीं होते है।
- बैगा समाज की पंचायत अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। पंचों का निर्णय सर्वमान्य होता है।
    - मुकद्दम
    - दीवान
    - समरथ
    - कोटवार
    - दवार

मुकद्दम : मुकद्दम गांव का मुखिया होता है। इसकी नियुक्ती परम्परागत ढंग से वंशानुगत होती है। जिसे सरकार से मान्यता प्राप्त होती है। यह गॉव का प्रमुख प्रबंधक होता है। बारात की आगवानी, सरकारी कार्यो में मुकद्दम शासन की मदद करता है।

Mask and dancers at the Chetta festival.

दीवान : दीवान मुकद्दम का सहायक होता है। मुकद्दम के न होने पर गॉव के सारे कार्य दीवान करता है। इसकी नियुक्ती भी वंश परम्परा से होती है। दीवान के मुख्य कार्य पंचायत की बैठक बुलाना, शादी का न्यौता, अतिथि सत्कार करना होता है।

कोटवार : कोटवार शासकीय सेवक होता है। परन्तु समाज में उसका स्थान महत्वपूर्ण होता है। गांव की सुरक्षा का भार कोटवार के पास होता है। वह किसी भी जाति का हो सकता है। तथा जन्म मरण की सूचना शासन को देता है। समाज की बैठको में मुकद्दम के निर्णय की घोषणा करता है।

दवार/ देवार [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] **:** दवार गांव का पुरोहित या पंडा होता है। दवार धार्मिक पूजा-पाठ का कार्य करता है। इसे भूमिया भी कहा जाता है। बिदरी पूजा इसी हाथों से होती है।

समरथ : समरथ गाव के सामाजिक कार्यो और अतिथियों के आने पर राशन का प्रबंध करता है। सरकारी अफसरों के भोजन आदि का प्रबंध समरथ द्वारा किया जाता है।

- बैगाओं की बोली छत्तीसगढ़ी का विकृत रूप है। इसमें गोंडी के शब्दो का मिश्रण है।
- बैगा जनजाति के लोग शेर, सर्प को अपना भाई मानते है। यह जनजाति सामूहिक रूप से 9 वर्ष बाद शहद का सेवन करते है। तथा रासनवा त्यौहार मनाते है।
- बैगानी बोली की पहेलियों को धंदा कहते है।
- बैगा लोग नया मकान बनाते समय दीवारो पर मिट्टी से **'नोह डोरा'** (एक प्रकार का भित्ती चित्र) बनाते है।

▶ **नृत्यकला :** बैगाओ का अपना आदिम संगीत है। जंगल में रहने के कारण अदम्य साहस के साथ उनमें संगीत सरिता भी प्रस्फुटित हुई है। बैगाओं को संगीत प्रकृति की देन है। बैगा लोग वर्ष भर नाचते गाते है। बैगा नृत्य बिना श्रृंगार के नहीं होते है।

- **दशहरा नृत्य :** दशहरे से प्रारम्भ होने के कारण इसे दशहरा नृत्य कहते है। दशहरे नृत्य के बाद ही कोई नृत्य होता है। कुंवार की पंचमी से यह नृत्य शुरू होता है। इसमें गॉव में पुरूष व स्त्री के अलग दल बन जाते है। जो अन्य गांव में जाते है। तथा बिलमा गीत का गायन करते है।

- **करमा नृत्य :** बैगाओं का कर्मा नृत्य विजय-दशमी से प्रारम्भ होकर वर्षा के प्रारम्भ तक चलता है। यह नृत्य मांदर की थाप पर होता हैं युवतियां घर से निकल कर रात भर करमा नृत्य करती है। करमा नृत्य चार प्रकार का होता है। यह विभाजन पैरो की गति के आधार पर किया गया है।
  1. करमा यरी
  2. करमा याप
  3. करमा झुलनी
  4. करमा लहकी

  करमा नृत्य करम की प्रेरणा देने वाला नृत्य है। यह आनुष्ठानिक नृत्य गीत जातीय संस्कृति की सम्रद्धि का द्योतक है।

- **झरपट नृत्य :** यह नृत्य करमा नृत्य का ही एक अंग है। झरपट नृत्य में स्त्री और पुरूष अलग अलग पक्तियों में आमने सामने खड़े होते है। गीतों में सवाल जवाब होते है।
- **रीना नृत्य :** इसमें केवल स्त्रियाँ ही नाचती है। जो पक्ति बंद्ध और आमने सामने घेरे में नाचती हैं मांदर ओर टिमकी की लय पर रीना नृत्य किया जाता है।
- **सैला नृत्य :** सैला चांदनी रात में किया जाने वाला नृतय है। शरण पूर्णिमा की रात का सैला नृत्य युवक युवतियों द्वारा किया जाता है। यह नृत्य बैगा अपने आदि देव को प्रसन्न करने के लिये करते है।

- **बिलमा नृत्य :** बिलमा विवाह नृत्य है। इसे बिरहा नृत्य भी कहां जाता है। गांव में बारात विदाई के समय कुछ युवक-युवतियां करती है।
- **भड़ौनी नृत्य :** भड़ौनी नृत्य विवाह नृत्य है। बारात आ जाने पर बाराती जब आंगन में बैठते है। तब स्त्रियाँ नृत्य का प्रदर्शन कर गालियां देती है।
- **परधौनी नृत्य**[MP Vyapam Jail Prahari 2017] **:** परधौनी विवाह नृत्य है। बारात की अगवानी में पुरुष हाथ में फरसा लेकर नाचते है। नगाड़ा ओर टिमकी की ताल इस नृत्य में उत्तेजना डालती है।
- खेल कूकड़ा पाट लड़का - लड़की दोनों मिलकर खेलते है।

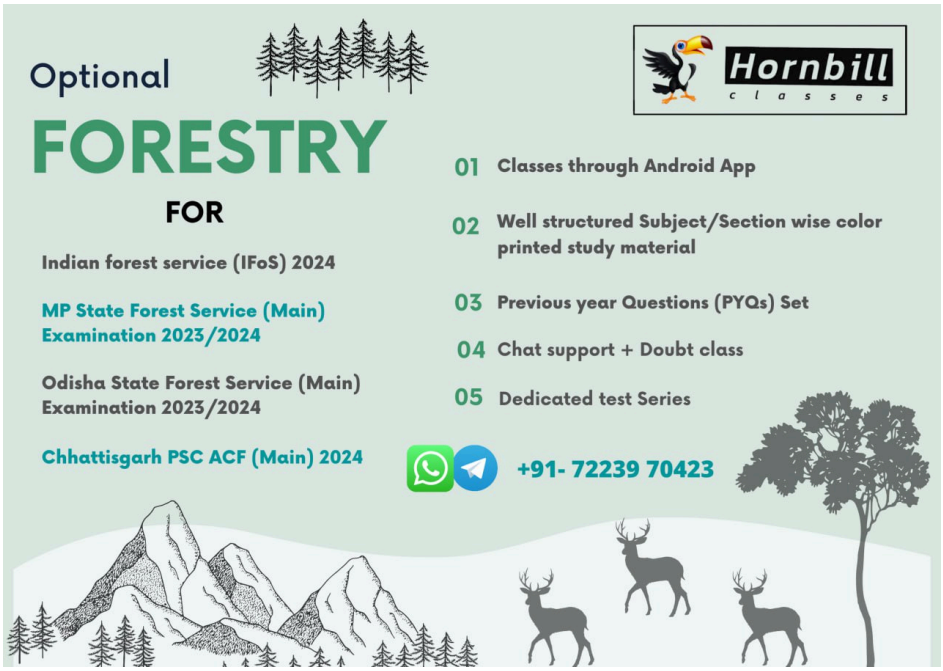

Exercise no 7

1. निम्नलिखित में से किस जिले में बैगा विकास अभिकरण नहीं है। [MPPSC SSE 2021]
   (a) मण्डला
   (b) शहडोल
   (c) रायसेन
   (d) बालाघाट
2. बैगा परम्परा के अनुसार सृष्टि के निर्माता कौन है। [State Engineering Service 2021]
   (a) ठाकुरदेव
   (b) इन्द्रदेव
   (c) अग्निदेव
   (d) सोमदेव
3. बैगाओं में गाँव का पुरोहित कौन होता है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) समरथ
   (b) दीवान
   (c) देवार
   (d) कोटवार
4. बैगाओ में कितने मुख्य गोत्र है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) पाँच
   (b) छह
   (c) दो
   (d) तीन

उपरोक्त प्रश्न के सभी विकल्प गलत है,इसका सही उत्तर सात है । राज्य लोक सेवा आयोग के द्वारा इस प्रश्न को विलोपित कर दिया गया है।

5. निम्न लिखित में से कौन सी जनजाति स्वयं को द्रविड़ का वंशज मानती है? [MP VYAPAM S.I.2017]
   (a) भारिया
   (b) गोंड
   (c) भील
   (d) बैगा
6. बैगा चक का अधिकांश भाग मध्यप्रदेश के किस जिले में आता है? [MPPSC Taxation Assistant 2012]
   (a) डिंडोरी
   (b) भोटिया
   (c) मंडला
   (d) बालाघाट
7. मध्य प्रदेश की जनजातियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए [MPPSC Section Officer 2021]
   1. मध्य प्रदेश राज्य की जनसंख्या का 20% से अधिक हिस्सा जनजातियों का है।
   2. बैगा स्वयं को द्रविड़ के वंशज मानते है।
   3. कोल, जो मुख्य रूप से श्रमिक वर्ग के हैं, रीवा, सीधी, सतना और जबलपुर जिलों में पाए जाते है।
   4. संतिया मालवा की एक जनजाति है, जो स्वयं को मूल रूप से राजपूत मानती है।

   उपर्युक्त कथनों में से सही का चयन कीजिए
   (a) 1 और 2
   (b) 1, 2 और 3
   (c) 2, 3 और 4
   (d) 1, 2, 3 और 4
8. परधौनी किस जनजाति का लोकनृत्य है? [MP Vyapam Jail Prahari 2017]
   (a) कोल
   (b) कोली
   (c) हल्बा
   (d) बैगा

1. (c) 2. (a) 3. (c) 4.- 5. (d) 6. (a) 7. (d) 8. (d)

1.8 भारिया जनजाति

पातालकोट और पातालकोट में निवास करने वाले **आदिवासी (भारिया)** [MPPSC Tax Assistant 2012, MPPSC State Engineering 2014] प्रकृति का एक अजूबा है। **पातालकोट** [MP Vyapam GROUP-1 Exam 2017] छिंदवाड़ा से उत्तर की तरफ 45 किलामीटर दूर एक प्राकृतिक खाई है। जो ऊपर से देखने पर **घोड़े की नाल** [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017] की आकृति की दिखाई देती है। पातालकोट में 'कोट' का अर्थ प्राक्रतिक दीवार है। यहाँ के निवासी कोट को कनात कहते है। ऊपर से देखने पर व्यक्ति, जानवर, झोपडियाँ व तिनके जैसी प्रतीत होती है। पातालकोट में दूधी के गायनी नदियों का उदगम होता है। यहां पर सात बहनें (Seven Sister) नामक जलप्रपात है। पातालकोट जमीन तल से 1200 से 1500 फीट गहरी खाई है। यहाँ निवास करने वाली जनजाति भारिया कहलाती है। पातालकोट के दर्शनीय स्थल रातोड़, कारेआम, चिमटीपुर,

दूधी-गायनी नदियों का उद्गम और राजाखोह है। पातालकोट में 12 गॉव बसे है। जो आवाद है तथा आठ बीरान गॉव है। यहाँ जाने के लिये रास्ते कच्चे व उबड़ खाबड़ है। भारिया लोग इन रास्तो का प्रयोग न करके पगडंडियो पर चलना पसन्द करते है। आम के वृक्षों की यहाँ अधिकता पायी जाती है। कारेआम एक सुन्दर झरना है। जो आम के झुरमुट पर गिरता है। राजाखोह पातालकोट का सबसे सुंदर स्थान है। परन्तु अत्यन्त दुर्गम स्थान होने के कारण यहाँ पहुचना मुश्किल है। इसी खोह पर राजा रघुजी भोसले रहे थे।

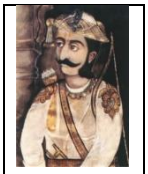
रघुजी भोसले

भारिया जनजाति का अस्तित्व मध्यप्रदेश में मुख्यतः जबलपुर और छिंदवाडा में है। भारियों की जनसंख्या लगभग 1,93,230 है। परन्तु पातालकोट में निवास करने वाले भारियों की संख्या 4824 है। जिसमें 2458 महिला ताथा 2366 पुरूष है। सबसे अधिक भारियाजन जबलपुर है। भारिया जंगलों में एकान्त और ऊंची जगहो में रहना पसन्द करते है। भारिया जहां बसे होते है। उसे ढांना कहते है।

- **भोगोलिक विवरण :** भारिया जनजाति **जबलपुर व छिदंवाडा**[MP SI 1997] जिलो में निवासरत है। पातालकोट के भारियों का संकेन्द्रण छिदवाडा जिले के तामिया क्षेत्र में है। भारिया अपना मूल स्थान महोबा अथवा बाघोगढ को मानते है। तथा यहां के राजा कर्णदेव को अपना पूर्वज मानते है।
- **स्वरूप :** भारिया द्रविडियन प्रजाति के आदिम लोग है। भारिया सामान्यतः मध्यम कद, छरहरा बदन, श्याम वर्णी होते है। आंखे छोटी काली, नाक कुछ चोडी पर सुडौल होती है। ओंठ पतले और दांत बारीक होते है। स्त्रियों अपेक्षाक्रत सुन्दर होती है। भारिया जनजाति के लोग कोलोरियन या मुण्डा वर्ग से संबंधित है।

- **उत्पत्ती :** भारिया जनजाति अपनी उत्पत्ती महाभारत युद्ध में अर्जुन द्वारा छोड़े गये बाण भूरूं घास से हुयी मानते है। इसलिये ये पांडवंशी या भारवंशी कहलाते है। भार की ढुलाई करने के कारण ये भारिया कहलाये है। तथा गोडों की विधवा से रीति के अनुसार पुर्निविवाह करने का पहला हक मानते है। गोंड जनजाति भी भारिया को अपना छोटा भाई मानती है।
- भारिया जनजाति के गोत्र व उपजातियाँ

उपजातियाँ

1. भूमिया
2. भुइहार
3. पेडो

गोत्र: भारिया जनजाति में 51 गोत्र है। परन्तु मुख्यतः 16 गोत्र ही माने जाते है।

1. खमरिया - खमेर के पेड़ की पूजा
2. भरदिया - भरदा बेल को नहीं काटते
3. अंगारिया - अंगार या अग्नि पूजक
4. बगोरिया - बाघ मरने पर उसकी पूजा करने वाले
5. चलथिया - अंगारो पर चलने के कारण चलथिया हुए।

- **जन्म संस्कार :** प्रसव के लिहाज से भारिया जनजाति अत्यन्त प्राचीन है। प्रसवकाल में भी भारिया महिला काम करने जाती है। खेत में ही बच्चे को जन्म देती है। प्रसव का कार्य गॉव में सुनमाई कराती है। प्रसव के तीन दिन बाद कुछ रीति रिवाज होते है। जो कि शुद्धिकरण कहलाता है। बच्चे का नामाकरण छः माह बाद किया जाता है। इसे बच्चे के पिता की बहन द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। छः दिन बाद छठी पूजन का कार्य होता है। इनकी मान्यता है। कि छठी माता बच्चो का भाग्य लिखती हैं छठी के दिन महिलायें जच्चा गीत का गायन करती है।

- **वेशभूषा :** पुरूष सिर पर पगिया (पगड़ी) धोती, कुर्ता बडी पहनते हे। अधिकांश युवा मस्तक पर रुमाल या एक डेढ़ इंच चोड़ी पट्टी या फैटा बांधकर रखते हैं स्त्री लाल रंग की सिंदूरी साड़ी पहनती है। स्त्रियां कमर के ऊपरी हिस्से में अंगिया या पोलका पहनती है। तथा स्त्री पुरूष प्रायः नंगे पैर होते है। भारिया चॉदी तथा गिल्ट के गहने पहनती है। पुरूष मुरकी, करदोना चुरा, छल्ला पहनते है। तथा स्त्रियां करनफूल बारी, गले में पोत, सरिया चंदन हार (सॉफल) हमेल, नाक में लोग, भुजा पर बाकड़ा, बहोटा कलाई में कंगना, करदौना, कमरपेट पयरी और तोडा अंगूठे में चुटका पहनती है। भारिया जनजाति हाथों में लोहे का कड़ा अवश्य धारण करती है।
- **निवास स्थान :** भारिया अपने आवासी मकानों का स्वयं निर्माण करते है। समतल स्थानों पर रहने वाले भारिया अपने अलग अलग ढाने बनाकर रहते है। इनके ढानों की आकृति कोरकूओं के ढानों के जैसी ही होती है। जबकि पातालकोट के भारियों की बस्ती बैगा जनजाति के समान है। तथा अपने घर एक दूसरे से कुछ दूरी पर बनाते है। भारिया अपने मकान लकड़ी, घास - फूस और टट्टों के बने होते है। लकड़ी, घास, पत्ते आदि सम्बन्धित आवश्यक साम्रगी भारिया जंगल से प्राप्त करते हैं। भारियां अपने मकान ऊँचाईयों पर बनाते है। जिससे वे अपने आंगन में चार मोटी लकड़ियों का बना मढ़ा होता है। जो बनोपज को सुखाने में प्रयुक्त होता है। जिसके ऊपर महुआ, गुली, और आम की गुठली सुखाते है।

- **खान-पान :** अन्य जनजातियों की तरह भारियों का मुख्य भोजन पेज है मक्का, कुटकी, जुवार और पिसी का पेज भारिया सबसे अधिक पंसन्द करते है। विभिन्न अवसरों पर कोंदों, कुटकी, धान, सावाँ, मक्का, जुवार चावल का भात बनाकर खाते है। मक्का, ज्वार ओर पिसी के आटे की रोटियां किसी तिथि या त्यौहार पर बनायी जाती है। महुआ और आम की बीजो की रोटी भारियाओं का बरसाती भोजन है। परन्तु खाने में आयोडीन युक्त नमक न होने को कारण घेंघा रोग से अधिक ग्रसित होते है। भारिया विभिन्न प्रकार के भात बेसन के साथ बढ़े चावसे कहते है। चावल और कुटकी की खीर भी बनाते है। इसके अलावा भारिया जनजाति मौसमी भाजियाँ आलू आदि का सेवन करते है।

  - भारिया मांसहारी होते है। पक्षियों का शिकार करते है। मछली खाना और पकडना भारिया का प्रिय शौक है। इनके अलावा ये कंदमूल का भी सेवन करते है।
  - आम व महुआ से भारिया जनजाति अखाड़ी भोजन बनाते है। महुआ की मदिरा भारिया स्वयं बनाते है। और इनका प्रिय पेय भी है।
- **हथियार और शिकार :** कुल्हाडी भारियों का मुख्य औजार है। भारिया जंगल जाते समय कंधे पर कुल्हाड़ी रखते है। शिकार भारियों का प्रिय शौक है। बाघ का शिकार हाँका लगाकर करते है। भारिया शिकार के लिये विभिन्न फंन्दों का प्रयोग करते है। मछली पकड़ने के लिये भारिया किसी भी हद तक जाने के लिये तैयार रहते है।
- **पंचायत व सामाजिक संगठन :** भारियों का सामाजिक संगठन मजबूत और रूढ़ियों से बंधा है। गांव का मुखिया पटेल कहलाता है। पटेल का पद परम्परागत होता है। जातीय पंचायत का मुखिया भी पटेल ही होता है। पंचायत के पांच पंच समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पंचायत का दूसरा प्रभावकारी व्यक्ति भुमका, तीसरा पडियार, चौथा कोटवार तथा पांचवा व्यक्ति गांव का कोई स्याना व्यक्ति होता है। कोटवार शासन की तरफ से नियुक्त किया जाता है। सरकार को गांवों की सारी सूचनायें कोटवार ही देता है। पटेल तवसी और लेव्ही वसूली में शासन की मदद करता है। कोटवार की सामाजिक प्रतिष्ठा भी अधिक होती है। पंचायत द्वारा लिये गये निर्णय समाज का प्रत्येक व्यक्ति मानता है। न मानने वाले को दण्ड का भागीदार होना पड़ता है। तथा समाज में स्त्री पुरुष को बराबर का दर्जा प्राप्त है।
- पातालकोट के भारिया लोगो में शिक्षा के प्रति रुझान कम है। मैदानी क्षेत्रों में रहने वालो में शिक्षा के प्रति अधिक रुझान है। पातालकोट में पांच गांवों में प्राथमिक शाला तथा इनमें सवा सौ छात्र - छात्राऐं है। पातालकोट के बिजौरा ग्राम में सर्व सुविधायुक्त आदर्श आवासीय आदिवासी आश्रम संचालित है। यह आश्रम म.प्र. का यह पहला आश्रम है।

- **काम धन्धे - कृषि मजदूरी :** भारिया जनजाति प्रारम्भ से ही ढहिया खेती करते है। मूलतः भारिया खेत - खलिहानों में मजदूरी करते है। भारिया जनजाति के लोग अत्यन्त मेहनती होते है। इसलिये ये अपने मालिक की ऋणग्रस्तता को ओढ़े रहते है। पीढ़ी दर

पीढ़ी बंधुआ मजदूर बनते रहते है।

भारियाओं द्वारा की जाने वाली ढहिया खेती अब लगभग समाप्त हो चुकी है। ओर जो जमीन भारिया जनजाति के पास बची है। वह बहुत कम उपजाऊ है। तथा इससे कोदोकुटकी व मोटे अनाज ही उगाये जा सकते है। सरकार द्वारा उनके लिये चलाये जाने वाली योजनाओं के कारण उनकी खेत पर मेढ़ बंदी का कार्य तथा उनके लिये अत्यधिक उत्पादन देने वाले बीज मुहैया कराये जा रहे है।

भारिया जनजाति कृषि के अतिरिक्त लघु वनोपज एवं जड़ी बूटियों का सग्रहण का कार्य करती है। भारिया जनजाति पातालकोट में उगने वाले आम, जामुन, आचार, हर्रा, महुआ, तेदूपत्ता का संग्रहण करते है। बॉस की बनी साम्रगी और छिन्द पत्तियों तथा देवबहारी घास से झाड़ू बनाना और लकड़ी के दरवाजो पर खुदाई कार्य करना पातालकोट के भारिया लोगों के परम्परागत शिल्प है। बॉस की टोकनियाँ, सूपड़े, डलिया बनाकर बेचते हे। देबबहारी घास से बनी पातालकोट की झाड़ू दूर - दूर तक प्रसिद्ध है। वर्तमान में भारिया जनजाति बक्खर की खेती करने लगी है।

देवी देवता : भारिया जनजाति अपने ग्राम देवों की पूजा करती है। दीपावली जैसे अवसर पर वह अपने कुल देवता को काला मुर्गा समर्पित करते है। इनके कुल देवता बूढादेव, दूल्हादेव या बरूआ ओर नाग होते है। दीपावली के दिन भारिया जनजाति मांड के पात्र केा उस विश्वास के साथ रखती है। कि बाघ उनके घर आयेगा तथा ये वाघेश्वर देव की भी पूजा करते है। भारिया जनजाति सत्यनारायण की कथा होती है। भारिया जनजाति देवी देवताओं के आदेशों निर्देशों को अत्यधिक मानते है। ये भूत पिशाच शैतान शक्तियों पर सहज विश्वास करते है।

गोंड जनजाति के लोग साज वृक्ष की पत्तियां व टहनियां की पूजा करते है। जबकि भारिया जनजाति के लोग साज वृक्ष की जड़ों की पूजा करते है। बडेदेव की पूजा में स्त्रियां भाग नहीं लेती है।

भारिया जनजाति के देवी देवता

1. बूढ़ा देव
2. दूल्हादेव
3. वाघेश्वर देवता
4. मुठवा बाबा
5. मेघनाथ खम्ब

- **बड़ादेव या बूड़ादेव :** बूड़ादेव भारियाओं का ग्राम देवता है। बूड़ादेव का चबूतरा या मड़िया बना दी जाती है। जिस ढाना में बड़े देव का चबूतरा नहीं होता, वहां **साज वृक्ष** (*Terminalia tomentosa*) की ही पूजा की जाती है। बड़े देव ग्राम की रक्षा करने वाले देवता है। बड़े देव को लाल मुर्गी चढायी जाती है।
- **मुठवा बाबा :** मुठवा बाबा गांव के संकट दूर करता है। मुठवा बाबा का चैतरा गांव की सीमा पर होता है। वर्ष में एक बार गांव के लोग मिलकर पूजा करते है।
- **मेघनाथ खम्ब :** प्रत्येक गांव में मेघनाथ खम्ब होता है। तथा कही कही घूमने वाला मेघनाथ खम्ब होता है। मेघनाथ खम्ब पर सफेद कपड़े की फारिया (ध्वज) लगायी जाती है। मनौती पूरी होने पर व्यक्ति गणबिरिया के रूप में घूमने वाले मेघनाथ खम्ब की पूजा की जाती है।
- **हरदौल जू :** हरदुल पूजा का आयोजन भारिया हर वर्ष करते है। यह पूजा हरदौला लाला के नाम पर की जाती है। इसके अलावा बजरंग बाबा, पटेल बाबा, नारायण देव आदि की पूजा करते है।
- **भीमसेन देवता**[MPPSC Paper Computer Programmer Exam 2021] **:** भीमसेन देवता की स्थापना किसी पेड़ के नीचे चबूतरा बनाकर की जाती है। भीमसेन देव को विवाह का बरदान देने वाला देवता माना जाता है। भारियों के यहां शादियों शुरू होने से पूर्व गांव में भीमसेन देव के भांवरा रचाये जाते है। छिन्दवाड़ा जिले के पातालकोट की भारिया जनजाति के कृषि देवता के रूप में भी पूजे जाते है।
- स्थानीय देवियों पर भारिया बहुत आस्था रखते है। ऐसी देवियों में जगतार माई, भवानी माई, नगबेडनी माई खेडापति माई, बनजारिन माई, रातमाई आदि है। खेर माई बाहरी बाधाओं को रोकती है। गुरूमाता देवी, काली दुर्गा, पनघट माई, मातादाई, झिरिया माई आदि की पूजा भारिया लोग करते है।
- भुमका और गुनिया पर भारिया सबसे अधिक विश्वास करते है। भुमका मारक - तारक तंत्र मंत्र जानता है। गुनिया जड़ी - बुटियों का अच्छा ज्ञान रखता है। भारिया उड़द के दाने मंत्रित करके मूठ मारते है। भारिया जो पातालकोट में रहते है। जड़ी बूटियों के बहुत बड़े जानकार होते है। तथा पातालकोट को जड़ी बूटियों का स्वर्ग कहते है। पातालकोट के भारिया भूत शैतानों को भगाने का मंत्र जानते है।

- **पर्व त्यौहार :** भारिया अन्य जनजातियों की तरह अनेक पर्व व त्यौहार मनाते है। भारिया जनजाति पर्व त्यौहार मनाते है। भारिया जनजाति पर्व त्यौहार को बड़े ही हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है।

  भारिया जनजाति द्वारा मनाये जाने वाले त्यौहार

1. बिदरी पूजा
2. नवाखानी
3. जवारा
4. दीवाली
5. गोबर्धन पूजा

- **विवाह :** भारिया जनजाति अपनी प्रथाओं और रीति रिवाजों के प्रति अत्यधिक सजग और कट्टर होते है। सदियों से चली आ रही सामाजिक प्रथाओं को भारिया समाज आज भी यथावत निभाता है। विवाह का प्रस्ताव लड़के के पिता की ओर से ही आता है। परन्तु कन्या के पिता तक विवाह का प्रस्ताव लड़के के पिता की ओर से कुछ मित्रों द्वारा ही पहुंचाया जाता है। और अगर मंगनी पक्की करनी हो तो बधू का पिता दूल्हे के पिता और उसके मित्रों को भोजन के लिये आंमत्रित करते है। विवाह के समय मिदुआ नामक नृत्य भी करते है।

  भारियों में समगोत्र विवाह नही होते मामा - फुआ के लड़के - लड़कियों में विवाह सर्वोत्तम माना जाता है।

  भारियाओं मे चार विवाह पद्धति प्रचलित है।

1. मंगनी विवाह
2. लमसेना विवाह
3. राजी - बाजी विवाह
4. विधवा विवाह

  - **मंगनी विवाह :** विवाह का प्रस्ताव लेकर सबसे पहले लड़के वाले लड़की वालो के यहां जाते है। तथा आंगन में जाकर बैठ जाते है। और एक लोटा पानी मांगते है। अगर लड़की वाले रिश्ते स्वीकार करते है। तो वह उन्हें पानी देते है। यदि शाम तक पानी नही मिले तो इसका मतलब उस घर वालो का सम्बन्ध करने का इरादा नहीं है। स्वीकार होने पर घर - झड़ाई की रस्म अदायगी होती है। मंगनी विवाह में दहेज दिया जाता है। इस विवाह के दौरान दुल्हन - ढूँढाई प्रथा होती है।
  - भारियाओ में बहु विवाह प्रथा है।

- **मृतक संस्कार :** भारियाओं में प्रायः शव दफनाये जाते है। परन्तु कभी - कभी शव को जलाते भी है। किसी व्यक्ति के मरने पर घर में रोना धोना शुरू हो जाता है। घर के सभी स्त्री पुरूष मृतक के मुंह में पांच - दस पैसा रखते है। श्मशान में पहुंचकर कटरी को जमीन में रख देते है। यहां पर जमीन मोल लेने की प्रथा है। बेर (*Ziziphus mauritiana*) के कांटे वाली डाली पर एक पत्थर रखते हैं और उस पर पैर रखकर शवयात्रा में शामिल सभी लोग चलते जाते है। इसे कांटा लगना कहते है। नदी पर सभी लोग मुखारी (दातौन) करते है।

  तीसरे दिन मृतक का तीजा किया जाता है। तीजा के दिन मृतक परिवार के सभी लोग उपवास करते है। चूड़ी पहनाने की प्रथा तीजा हो जाने के पश्चात की जाती है।

  जिस तरह से गोडो मे **दसगात्र,** कोरकुओ मे **सिडोली प्रथा** होती है। उसी तरह भारियाओं मे **गमी रोटी** का आयोजन होता है। गमी रोटी सुविधानुसार एक साल, दो साल या दस साल में की जा सकती है।

  शनिवार की सुबह चैतरा होता है। चैतरा मृतक का स्मृति चिन्ह है। चैतरा स्त्रियां छाबती है। तथा मृत्युगीत गाते है।

▶ **नृत्य, वाघ, संगीत**[MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] : भारिया आदिवासी विभिन्न पर्व त्योहारों और खुशियों के अवसरों पर नाचते गाते है।

- **भडम नृत्य :** भडम नृत्य के कई नाम है। जैसे गुन्नू साही भड़नी, भड़नई, भरनोटी या भंगम नृत्य भी करते है। भड़म नृत्य विवाह के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य हैं भारिया जनजाति का सबसे लोक प्रिय नृत्य भड़म नृत्य ही है। भड़म समूह नृत्य है। इसमें बीस से लगाकर पचास साठ पुरूष नर्तक और बादक भाग लेते है। तथा लोग एक वृत में नृत्य का आयोजन करते है। बीच में एक नर्तक लकड़ी उठाकर दोहरा गाता है। यह नृत्य रातभर चलता रहता है।

- **सैतम नृत्य :** सैतम नृत्य भारिया महिलाओं का नृत्य है। एक पुरूष घेरे के बीच ढोलक बजाता है। महिलाओं के आमने सामने दो दल होते है। सैतम नृत्य में किशोरियो की अधिक हिस्सेदारी होती है।
- **करमा सैला नृत्य :** भारिया जनजाति में गौड, बैगाओं की तरह करमा - सैला, सुआ नृत्य की प्रथा है। भारिया अहिराई नृत्य भी करते है। अहिराई नृत्य दीवाली पर होता है। कौडियों की झूल पहनकर युवक घर घर जाकर छॅवर लगाते है। दोहरा गाते है। और सैला नाचते है।

▶ **वाद्य यंत्र :** भारियों का **ढोल** झाबुआ के भील आदिवासियों के मॉदल की तरह गोल और बड़ा होता है। तसले के आकार की **टिमकी** बनाई जाती है। जिस पर बकरे की खाल मढी जाती है। इसके अलावा झालर व छोटी थाली आदि वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग करते है।

▶ **बोली :** भरनौटी या भारियाटी भारियाओं की मूल बोली है। भारियाटी द्रविडियन मुण्डा परिवार की बोली है। इसलिये गोंडी से मिलती जुलती हे। भरियाटी कोरकू, गोंडी, छत्तीसगढ़ी और बुन्देली का मिश्रित रूप है।

- भारिया भाषा में कहावतो को अटका कहते है।

▶ **गायन**

1. उपजन
2. भॉवर
3. मंडवा
4. मटिया गीत
5. करमा
6. सुआ
7. सैतम

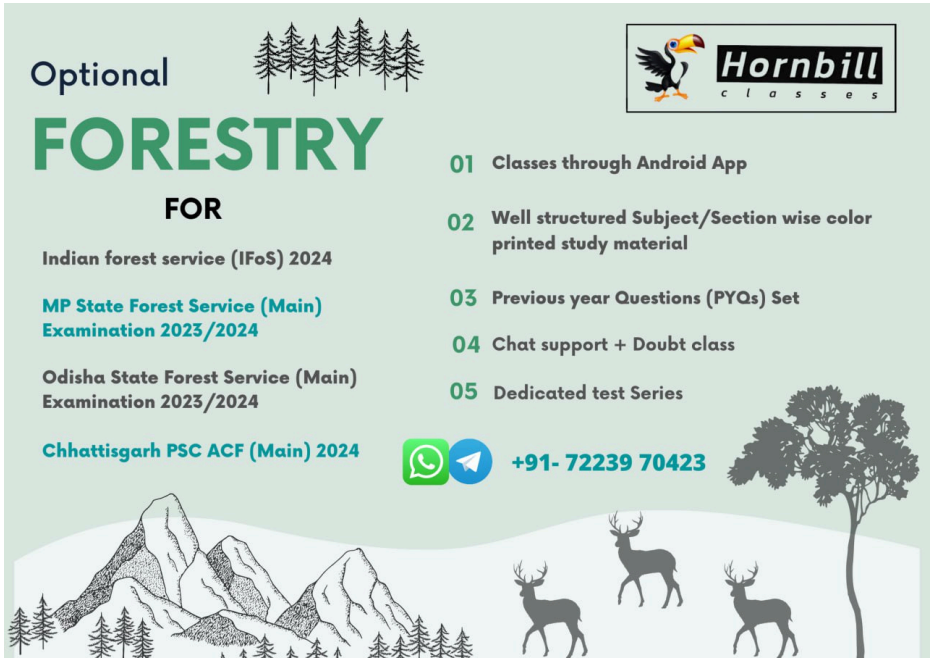

Exercise no 8

1. भारिया जनजाति म.प्र. के कौन से जिले में निवास करती है। [MPPSC AM 2021]
   (a) छिंदवाड़ा
   (b) मंडला
   (c) शहडोल
   (d) उमरिया
2. जिला छिन्दवाडा के पातालकोट में निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति निवास करती है। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
   (a) भील
   (b) कोरकू
   (c) भारिया
   (d) बैगा
3. छिन्दवाड़ा जिले के पातालकोट की भारिया जनजाति के कृषि देवता कौन है। [MPPSC Paper Computer Programmer Exam 2021]
   (a) डोंगरदेव
   (b) भीमसेन
   (c) भागदेव
   (d) कुडोपन
4. निम्नलिखित में से कौन सी नृत्य भारिया जनजाति से संबंधित नही है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) भड़म,सैतम
   (b) कर्मा,गेड़ी-डंडार
   (c) सैला,अहिराई
   (d) दहरा,ददरिया
5. भडम सेतम और सैला किस जनजाति के प्रमुख नृत्य है [MP SI 2017]
   (a) भील जनजाति
   (b) बैगा जनजाति
   (c) भारिया जनजाति
   (d) गोंड जनजाति
6. अहिराई नृत्य प्रदर्शन में नर्तकियों के संगत के लिये निम्नलिखित में से कौन से दो वाद्य यंत्र का उपयोग किया जाता है [MP SI 2017]
   (a) ढोल और भपंग
   (b) ढोल और खोमक
   (c) ढोल और झिका
   (d) ढोल और टिमकी
7. प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पातालकोट घाटी मध्यप्रदेश के किस जिले में स्थित है [MP Vyapam GROUP-1 Exam 2017]
   (a) बैतूल
   (b) सिवनी
   (c) बालाघाट
   (d) छिंदवाड़ा
8. अगर घाटी के ऊपर से देखा जाता है तो पातालकोट किस आकार का दिखाई देता है [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017]
   (a) आयत
   (b) वर्ग
   (c) घोड़े की नाल
   (d) इनमें से कोई नहीं

1. (a) 2. (c) 3. (b) 4. (b,d) 5. (c) 6. (d) 7. (d) 8.(c)

1.9 कोरकू जनजाति

कोरकू जनजाति आस्ट्रिक वंश से संबंधित है। कोरकू जनजाति अपने आप को **रावण का वंशज**[MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] तथा अपनी उत्पत्ती महादेव के द्वारा हुई मानते है। कोरकू जनजाति अपनी उत्पत्ती महादेव द्वारा उत्पन्न किये मूला और मुलई से मानते हैं ये अपनी उत्पत्ती या पैतृक स्थान सॉवलीगढ़ या भैरवगढ़ (बैतूल) को मानते है।

- कोरकू जनजाति का निवास स्थल सतपुडा के घने वनीय क्षेत्र है। इनके अंतर्गत छिंदवाड़ा, बैतूल, नर्मदापुरम, खण्डवा, बुरहानपुर जिले है। यह म.प्र. के मध्य व दक्षिणी जिलों में निवास करते है।
- म.प्र. के अलावा कोरकू जनजाति महाराष्ट्र के अकोला, मेलघाट, मोर्शी में निवास करती है।

- वर्तमान में म.प्र. में कोरकू जनजाति की जनसंख्या पांच लाख के लगभग है।
- वन संस्कृति से इनका गहरा सम्बन्ध है। वनदेवता वन देवी का पूजक यह समाज अत्यन्त विवेकशील भोला-भाला है।

▶ **रूप रंग :** साधारणतः कोरकुओं का रंग काला, आंखे काली, नाक कुछ चपटी, नथुने फूले हुए, होंठ मोटे तथा चेहरा गोल होता है। इनका शरीर हष्ट-पुष्ट होता है। इनके गलों की हड्डियां ऊपर उठी हुई होती है। इनकी औसत ऊँचाई गोडों से अधिक तथा बाल घुँघराले होते है ये अपने बालों मे तेल साबुन का उपयोग न करके काली मिट्टी से ही अपने बालों को धोते है। कोरकू जनजाति के लोग अलाव जलाकर आग के सहारे बरसात व सर्दी का मौसम निकालते है। आग के सहारे रहने से पेट पर बड़े काले निशान पड़ जाते है।

▶ जाति गोत्र : कोरकू जनजाति चार समूहों में पायी जाती है।

1. रूमा
2. पोतडया
3. ढुलरिया
4. बोवई या बन्दोरिया बोन्डई

इनके कुल 36 गोत्र है। गोत्रो के नाम प्रायः वृक्ष, पशु - पक्षी, दिन -वार, घास - मिट्टी के नामों पर आधारित होते है।

1. बावरिया - बैतूल जिले के कोरकू
2. **बन्दोरिया**[MPPSC State Engineering service pre 2016] - पंचमढ़ी के कोरकू
3. रूमा - महाराष्ट्र के कोरकू

▶ **गण :** जाति के आधार पर कोरकुओं के चार गण निर्धारित होते है।

गण	स्वभाव
कोरो (आदमी)	ताजा व शुद्ध मांस खाने वाला
राक्षस (शैतान)	सड़े गले पशु पक्षियों का मांस खाने वाला
सराकु (बंदर)	भाजी पाला खाने वाला
बाना (रीछ)	मधुमक्खी का छत्ता तोड़ने वाला

▶ **गोत्र चिन्ह एवं निषेध :** कोरकूओं के गोत्र चिन्हों का अध्ययन बड़ा रोचक है। मानव समीपस्थ वातावरण से प्रभावित होता है। कोरकू व्यक्ति अपने गोत्र चिन्हों की पूर्ण सुरक्षा ओर सम्मान करते है। जिस जनसमूह का जो गोत्र चिन्ह है। वह उसका कभी नाश नहीं करता है। जंगल में जब वह अपने गोत्र चिन्ह को देखता है। तो वह उसे नमस्कार करते है।

- कोरकू अपने गोत्र चिन्हो की पूजा करते हैं। गोत्र चिन्हों को वह टोटम के माध्यम से प्रदर्शित करता है। अर्थात कोरकू जनजाति टोटम में बंधी हुयी है।
- अपनी जाति के टोटम को शरीर पर गुदवाते है। सिडौली मण्डो (पवित्र स्थान) में गोत्र चिन्हों को उकेरते है। काली मिट्टी से उस स्थान को नहीं लीपते है।
- कोरकू जनजाति में ऐसी मान्यता है। कि उनके गोत्र चिन्ह हमेशा उनकी रक्षा करते है।

▶ **जन्म संस्कार :** गर्भवती कोरकू महिला यथासम्भव अन्तिम समय तक अपने दैनिक कार्यो में व्यस्त रहती है। प्रसूति के बाद एक सप्ताह आराम करती है।

- शिशु जन्म के बाद तीसरे या पाँचवें दिन बच्चे का नाल प्रथक किया जाता है। उस दिन दैनिक उपयोग की वस्तुएं हसिया (दराती) थाली, लोटा, गिलास, कुदाली आदि उसे दिखायी जाती है।
- प्रसूता सभी महिलाओं के पैर छूकर आशीर्वाद लेती है। तथा स्थानीय महिलाऐं शिशु को देखकर यह प्रयत्न करती है। नवागत शिशु किस पूर्वज की आत्मा है।
- कोरकूओं में नामकरण संस्कार यदि लड़की हो तो तीसरे दिन और लड़का हो तो पांचवे दिन होता हैं इनका नाम पैदा हुये दिन के आधार पर रखा जाता है। जैसे बुधवार के दिन जन्मे व्यक्ति का नाम बुद्धा रख देते है।

▶ **मृत्यु संस्कार :** कोरकू समाज में मृतक को दफनाने की प्रथा पाई जाती है। परन्तु कहीं कहीं अग्नि संस्कार भी किया जाता है।

- श्मसान से लोटते समय बेर (*Ziziphus mauritiana*) के पेड़ का चक्कर लगाते है। तथा उसकी पत्ती का सेवन करते है।
- सुविधानुसार किसी भी सोमवार को मृत्युभोज का आयोजन किया जाता है। जिसे तीजा कहां जाता है।
- नवजात शिशु वाली मातायें तथा भोमका (पुरोहित) तीजा की पंगत में भाग नहीं लेते है।
- मृत्युभोज के अगले दिन मृतक की समाधि पर एक लकड़ी का स्तम्भ लगाने की प्रथा है। जो सागौन की लकड़ी से बना होता है। जिसे मण्डा या मण्डो कहते है।
- मण्डो को चारो ओर बेलबूटो, पशु - पक्षियों से सजाया जाता है।
- मण्डो गाडने की प्रथा नर्मदापुरम जिले के पंचमढ़ी क्षेत्र के कोरकुओ में अधिक प्रचलित है।
- कोरकुओं में मृत्यु गीत गाने की प्रथा है। जिन्हें सिडोली गीत तथा इस प्रथा को सिडोली प्रथा कहते है। इस प्रथा में कोरकू आपस में गालियां देते हैं ओर कभी-कभी बात इतनी बड़ जाती है। कि एक दूसरे को मौत के घाट भी उतार देते है। रात में सीडू (मदिरा) का सेवन कर भोज के बाद नाचते गाते है।
- सिडोली दस पन्द्रह साल में किसी सम्पन्न ओर विख्यात कोरकू की स्मृति में मनाया जाता है।

▶ **वेशभूषा :** कोरकुओं का पहनावा बहुत ही साधारण हैं पुरूष शरीर के ऊपरी भाग पर सूती बण्डी या कुर्ता ओर कमर से घुटनो तक सफेद धोती पहनते है। सिर पर चार पांच हाथ का अंगोछा या पगड़ी बांधते हैं गले में चांदी या कांसे अथवा तांबे का छोटा ताबीज पहनते है।

- कोरकू रंग-विरंगे नीले हरे लाल ओर गुलाबी रंग के लुगड़े, बदन ढकने के लिये रंग बिरंगी चोलियां भी पहनती हैं युवतियां चांदी, कांसे व पीतल से बने गहने ओर लाल, काले, पीले, नीले, मोतियों की मूंगा मालायें भी पहनती हैं पैरो में पायजेब (पैजन) को धारण करती हैं
- कोरकू महिलायें गुदनाप्रिय होती है। यह अपने शरीर पर गुदना गुदवाती हैं।

▶ **खान – पान :** कोरकू लोगो का मुख्य भोजन कृषिकृत पदार्थ, जंगली फल-फूल ओर अनेक प्रकार के मांस है। कृषिकृत पदार्थो में कोदोकुटकी, सौवा, बाजरा, मक्की का सेवन करते है।

- महुये से बनी शराब को सीडू कहते है। स्त्रियां भी सीडू का सेवन करती है।
- अनाज के अभाव में पेट भरने के लिये लचका जैसे पतले पदार्थ का उपयोग करते है।
- कोरकू मांसाहारी होते है। भाला और बल्लम शिकारी हथियार होते है। कुल्हाड़ी इनके जीवन का अभिन्न अंग है।
- इनके प्रतिदिन उपयोग में आने वाले लोहे से बने हथियार में तांबा, कुल्हाड़ी, बल्लम और हसिया प्रमुख हैं
- आग जलाने के लिये दिया सलाई के अलावा चकमक का प्रयोग करते है।

चकमक :- एक विशेष प्रकार के पत्थर (गार) पर सेमल फल की रूई रखकर एक लोहे के छोटे टुकड़े से आघात कर आग जलाते है। जिसे चकमक कहते है।

दैनिक उपयोग के लिये मिट्टी तथा एल्यूमिनियम के बर्तनों का प्रयोग करते है।

- **रहन सहन :** अधिकतर कोरकू कृषि मजदूरी करके अपना उदर-पोषण करते है। पहाड़ी अंचलो में रहले वाले कोरकू वन विभाग के लिये लकड़ियां ढोते है। तथा वन विभाग के ही जंगलो में जाकर लकड़ियां काटने का कार्य करते है।
  - कुछ लोग जंगलो से लकड़ियां, गोंद, शहद, चिरोंजी महुवा आदि वनोपज का संग्रहण करते है। तथा उन्हे शहरो में बेचकर धन प्राप्त करते है। वनोपज कोरकू जनजाति की अर्थव्यवस्था में अहम किरदार अदा करती है।
  - सरकार द्वारा कृषि व्यवसाय में जनजाति अधिक लाभ प्राप्त करे इसके लिये सरकार निरंतर कुआं खुदवाने, मोटर पंप लेने एवं कृषि सम्बन्धित आधुनिक यंत्र खरीदने के लिये बैंको से ऋण की सुविधा विशेष रूप से दी गई है।
  - खेतो में काम करने वाले कोरकू भाग्या कहलाते है। कोरकू द्वारा जंगल काटकर खेती करने की प्रथा बदलवा प्रथा कहलाती है।
- **शिक्षा :** कोरकू जनजाति शिक्षा की दृष्टि से बहुत पिछड़ी हुई है। गांव के लोग बच्चो को पढ़ाने की बजाय खेतो का काम, मेहनत मजदूरी या चरवाहे का काम करवाना अधिक उत्तम समझते है।
  - कोरकू जनजाति बच्चो को 10, 12 वर्ष में कृषि मजदूरी में लगा देते है। जिससे बच्चे अपनढ़ रह जाते है।
  - किन्तु वर्तमान में शासन द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं निशुल्क शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा का कोरकुओं को बहुत लाभ मिल रहा है।
- **मकान/आवास :** कोरकू आज भी घास फूस की झोपड़ी और लकड़ी बॉस ओर खपरैल आदि से बने कच्चे मकानों में ही रहते है।
  - मकान लगभग दो सीधी पक्तियों में बनाये जाते है।
  - ये लोग जहां रहते है। उस स्थान को **कोरकू ढाना** कहते है।
  - कमरे में ठंड से बचने के लिये अंगीठी रखते है। जिसे गोरसी भी कहते है।

- **विवाह प्रथाएं :** कोरकू आदिवासियों में विवाह की चार प्रथाएं प्रचलित है।

1. लमझना प्रथा या घर दामाद
2. चिथोड़ा प्रथा
3. राजी बाजी प्रथा
4. तलाक और विधवा विवाह

- **लमझना प्रथा :** इसमें लड़का अपने ससुर के घर रहता है। तथा उनके लिये जंगलों से लकड़ी काट कर लाता है। इसे (युवक) लमझना कहते है।
- **चिथोड़ा प्रथा :** इस प्रथा में गांव का कोरकू पटेल गांव से दो व्यक्तियों को विवाह की बातचीत के लिये लड़की के घर पर भेजता हैं जाने वाले ये व्यक्ति **चिथोड़ा** तथा प्रथा **चिथोड़ा प्रथा कहलाती है।** इसमें लड़के का पिता लड़की के पिता को दहेज देता है। वर पक्ष बारात लेकर कन्या पक्ष के यहां जाता है।
- **राजीबाजी प्रथा :** कोरकुओं में राजी बाजी विवाह प्रचलित है। युवा लड़के - लड़किया सहज रूप से आकर्षित होते है। और अपना प्रेम एकान्त में हाट बाजारो में गलियां में प्रदर्शित करते है। और घर से भाग जाते है।
- **तलाक ओर विधवा विवाह :** कोरकूओं में तलाक और विधवा विवाह प्रचलित हैं कोरकू स्त्री पहले पति के पास नहीं रहना चाहती है। तो वह जाति पंचायत द्वारा तलाक ले लेती है। तथा राजी-बाजी विवाह कर सकती हैं विधवा होने पर अगर मृतक का भाई स्त्री को न रखना चाह रहा हो तो वह उसे उसके मायके छोड़ देता हैं और वह स्त्री अन्यत्र शादी कर लेती है।

कोरकू एक से अधिक पत्नी रख सकते है।

▶ **विवाह सम्बन्धी प्रतिबंध :** कोरकू जनजाति में सजातीय विवाह प्रथा पाई जाती है। आज की परम्परागत रूप से सजातीय विवाहों को आदर्श मानते है।

- कोरकुओं में समगोत्री विवाह निषिद्ध है। समगोत्री विवाह पर कड़ा प्रतिबंध है।

▶ **धार्मिक जीवन :** इनके देवी देवताओं में महादेव, रावण, मेघनाथ, महावीर देव, किलार मुठवा, खेड़ादेव, सूर्य, चन्द्रमा, नर्मदा, ताप्ती माई है।

- महादेव को अपना पितामाह तथा रावण के कहने पर ही शंकर जी द्वारा उनकी उत्पत्ती के कारण कोरकू लोग अपनें आप की रावण को वंशज मानते है।
- मेघनाथ की पूजा करते है। दशहरे के आसपास मेघनाथ खम्ब की पूजा कर कई **स्वांग** करते है।
- खनेरा देव : गांव के पश्चिमी दिशा में खनेरा देव की स्थापना की जाती है जो गांव में बीमारियों के प्रवेश को रोकते हैं सिदरादेव कोरकुओं के अन्य पूज्यनीय देवता है।
- किलार मुठवा : इन्हे विपत्ती रोधक के रूप में पूजा जाता हैं इनका स्थान गणेश के समान हैं।
- खेड़ा देव : यह खेती - पशुओं के देवता है।
- नर्मदा ताप्ती को माता सदृश्य मानते है। प्रत्येक अमावस्या पर नर्मदा स्नान कर जल लेकर आते है। जिसे अपने खेतो में छिड़कते है।

▶ **जादू टोना :** कोरकुओ के बीच जादू-टोना का आम रिवाज है। भूत-प्रेत पर विश्वास करते है।

- **पडियार** इनके लिये तांत्रिक का कार्य करते है।
- जादू-टोना पर इनका बहुत विश्वास है। और झाड़ फूक इसका शर्तिया इलाज माना जाता है।
- पडियार जादू टोना के अलावा औषधियों का भी संग्रहण करते है।
- जब तांत्रिक का कार्य कोई महिला करती है। तो उसे **भगटो डुकरी** कहते है।
- अमावस के दिन को पवित्र मानते है। इस दिन यह किसी त्यौहार को नहीं मनाते। और नाहि **सीडू** का सेवन करते है।
- गुडी पडवा, देव-दशहरा अखतीज, डोडबली आदि त्योहार मनाते है। अखतीज के दिन बहुत सी शादियां भी होती है।

▶ **त्यौहार**

- **जिरोती :** कोरकू जनजाति जिरोती का त्यौहार मनाते है। इस दौरान वह डंडा नाच करते है।
- **पोला :** इस त्योहार में कोरकू जनजाति बैलो की पूजा करती है।
- **देव दशहरा :** यह कोरकूओ द्वारा कुआर माह में मनाया जाने वाला उनकी देवी देवताओं से सम्बन्धित त्योहार है। नवरात्रि से दशहरे तक रात में पडियार और भोमका के नेतृत्व में धाम भरता है। तथा ढोलक, टिमकी, थाली और झांझ बजाते है।
- **दीपावली :** अमावस्या के दिन कोरकू अपने बैलो को स्नान कराकर घर ले जाते है। रात्रि में कोरकू ग्वाल (ठाठया) लोग रात भर भूंगडू बजाकर नृत्य करते है।

▶ **सामाजिक व्यवस्था :** कोरकू परिवार अधिकांश एकल परिवार होते है। परन्तु कुछ सयुंक्त परिवार भी होते है। वरिष्ठ व्यक्ति परिवार का मुखिया होता है।

- कोरकू महिलायें घर के काम के अलावा कृषि कार्य में भी सहायता प्रदान करती है।
- कोरकू की पंचायत में पांच प्रतिष्ठित व्यक्ति होते है।
  1. पटेल :- पद परम्परागत होता है। परन्तु इन्हें हटाया भी जा सकता है। पंचायत का फैसला पटेल ही पंचो के निर्णय से सुनाता है।
  2. माजन :- पटेल के बाद माजन का स्थान है। जो पटेल के निर्णय को साफ साफ समझाता है।
  3. चोधरी :- पंचायत भरने की सूचना देने का काम
  4. घेटया :- प्रसाद बांटने का कार्य
  5. मुकरी :- मुख्य कार्य त्यौहार पर नाचने वालो को बुलाना।
- कोरकु बोली हो, मुण्डारी संथाली बोलियों के अंतर्गत मुण्डा परिषद से संबधित है।
- कोरकुओं में गुदने गुदवाने का कार्य पांच वर्ष से प्रारम्भ हो जाता है। विवाह से पूर्व अधिकांश शरीर गुद चुका होता है। माथे पर "कपार गोडई" का कार्य करते है।

► **नृत्य:** केारकू नृत्यों में नर्तकों की कोई साज सज्जा का कार्य नहीं होता पुरुष सर पर पगड़ी तथा महिला कान में जामुन के पत्ते खोसते हैं

1. **देव दशहरा नृत्य :** देव धाम के समय चैत्र माह में पडियार द्वारा धाम गीत पर किये जाने वाला नृत्य
2. **थापटी नृत्य :** यह स्त्री प्रधान समूह नृत्य है। हाथ में बजाने के लिये झांझ और चिटकोरा रहता है। चिटकोरा वाद्य के कारण इसे चिटकोरा नाच [MPPSC Assistant Registrar 2018] भी कहते है।
3. **चाचरी नृत्य :** चैत्र मास में किये जाने वाला पुरुष प्रधान नृत्य है। इसके किसी भी प्रकार के वाद्य यंत्रो का प्रयोग नहीं होता है।
4. **ढॉढला नाच :** ढॉढला कोरकुओं के सर्वप्रिय नृत्य है। ढॉढला नृत्य फुरसत के समय चैत्र वैशाख की रातों में किया जाता है। पांच प्रकार का होता हैं
   - टाड़ा ढाँढला : सम संख्या में दो घेरे होते है।
   - पडोप ढाँढला : यह नृत्य आमने सामने ताली देकर किया जाता है।
   - भील ढाँढला : प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में एक डंडा होता है।
   - सिडीकू ढाँढला : नर्तक घेरे में न खड़े होकर समान्तर आमने सामने मुख कर खड़े होते है।
   - चाचरीज ढाँढला : उपरोक्त चारो ढॉढल होने के बाद अन्त में किया जाने वाला ढॉढल चाचरीज ढॉढल कहलाता है।

5. डंडा नाच : जिरोती त्योहार पर पुरूष प्रधान नृत्य है।
6. चिल्लुडी नाच : कुआर के महीने में कुवाँरी युवतियों द्वारा किया जाने वाल समूह नृत्य है।
7. ठाठया नाच : दीपावली की रात्रि को और दूसरे दिन पड़वा केा यह नाच किया जाता है।
8. गादली नृत्य : शादी विवाह के अवसर पर कोरकू स्त्रियों का प्रसिद्ध नाच है।
9. फसल के स्वागत में कोरकू **ढाँढल नृत्य** करते है।
10. होली पर केारकू **घूंघरी या झामटा** गीत गाते है।

► **वाद्य यंत्र :**

1. चिटकोरा : यह वाद्ययंत्र सागौन तथा खाखरे की लकड़ी से बना हुआ करताल का लघुरूप है।
2. भगडू : भगडू कोरकुओं का अतिविशिष्ट एवं कठिन वाघ है। यह बांस की बासुरी नुमा छेदकर बनाया जाता है।

Exercise no 9	
1. पंचमढ़ी क्षेत्र में रहने वाले कोरकू जनजाति के लोग कहलाते है [MPPSC State Engineering service pre 2016] (a) मोवासी (b) रुमा (c) बावरिया (d) बंदोरिया 2. कौन सी जनजाति स्वयं को रावण का वंशज मानती है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] (a) भील (b) गोंड (c) कोरकू (d) सहरिया 3. कोरकू जनजाति वर्ष में कितनी बार जादुई शक्तियों एवं आत्माओ को बलि देकर प्रसन्न करते है? [MPPSC Assistant Registrar Examination 2022] (a) चार (b) दो (c) एक (d) तीन 4. निम्न में से कौन सी कोरकू की उप जनजाति नही है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] (a) नहाल (b) बोडोय (c) पटेलिया (d) बावरिया 5. चटकोरा नृत्य मध्यप्रदेश की किस जनजाति का लोक नृत्य है [MPPSC Assistant Registrar 2018] (a) भील (b) सहरिया (c) कोरकू (d) गोण्ड	
1. (d) 2. (c) 3. (b) 4.(c) 5. (c)	

1.10 सहरिया जनजाति

सहरिया म.प्र. की उन जनजातियों में से एक है। जो विकास की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ी और अपनी आदिमता की अन्तिम पहचान की स्थिति में है। सामाजिक बदलाव, शहरी सभ्यता तथा भौतिक साधनों के तीव्र आक्रमण के कारण सहरिया समाज की आदिम पहचान प्रायः विलुप्त हो गई है। सहरिया जनजाति की ऐतिहासिक प्रष्ठ भूमि पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं है। परन्तु ऐसा माना गया है। कि सहरियों का सम्बन्ध कोलो के विशाल परिवार से रहा है। सहरिया जनजाति अपने आप को भीलों के **छोटे भाई** के रूप में मानती है।

▶ **भौगोलिक विवरण :** वर्तमान में सहरिया जनजाति का निवास स्थान म.प्र. के अलावा उत्तरप्रदेश का बुन्देलखण्ड क्षेत्र, पूर्वी राजस्थान, छत्तीसगढ़ तथा ओडिशा राज्य है। म.प्र. में सहरिया जनजाति का सर्वाधिक संकेद्रण शिवपुरी जिले में है। इसके अलावा सहरिया जनजाति[MPPSC Tax Assistant 2012] म.प्र. के **गुना, शिवपुरी, राजगढ़, विदिशा, अशोकनगर, टीकमगढ, निवाड़ी, सागर, श्योपुर, भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर** जिलों में निवास करती है। म.प्र. में सहरिया जनजाति की संख्या 6,14,958 है।

सहरिया जनजाति की उपजातियां और गोत्र सहरिया जनजाति अपनी उत्पत्ती को शबरी से मानते है। ओर शबरी से उत्पन्न होने के कारण यह शबर, सवर, सौर और सहरिया कहलाये है। ये सब सहरियाओं के ही नाम है।

सहरिया की उपजातियां

1. शबर
2. सवर

3. सौर
4. सहरिया

गौत्र : सहरिया जनजाति में गोत्रों की संख्या को लेकर कोई प्रामाणिक आधार नहीं मिला है। परन्तु अभी तक जो ज्ञात है। उनकी संख्या 51 हैं। सहरिया जनजाति के गोत्रो को लेकर एक कथा प्रचालित है। जिसके अनुसार सहरिया जनजाति व गोंड जनजाति में बहुत गहरी शत्रुता थी। ओर एक बार दोनो में लड़ाई हुई। तो सहरिया जनजाति के लोग गोंडों के हमले से बचने के लिये जिस वस्तु की ओट ली उसी के आधार पर उस वस्तु को अपना गोत्र चिन्ह अपना लिया।

जैसे

1. उमरिया - ऊमर के पेड़ के नीचे छिप गये
2. भिलोडिया - भिलोडी घास में छिप गये
3. सोलकिया - सलाई के पेड पर छिप गये
4. सेलिया - सिल या पत्थर के पीछे छिप गये

- **जन्म संस्कार :** सहरिया जनजाति में शिशु का जन्म आनन्द और उत्साह का अवसर होता है। विवाह के पश्चात बहू का गर्भ धारण करना घर में खुशियों का आना माना जाता है। गर्भ धारण के सातवें महीने में बहू की गोद भराई की रस्म की जाती है। गोद भराई की रस्म के बाद बहू को मायके भेज दिया जाता है। ओर प्रसव का कार्य वही होता है। सहरिया जनजाति में जादू टोने का विशेष महत्व है। जिसके कारण वे गर्भवती महिला को अकेले कही नहीं जाने देते है। पुत्र या पुत्री के जन्म पर बारूद की बन्दूक चलाई जाती है। शिशु जन्म के दसवें दिन या अपनी सुविधानुसार गृह स्वामी शिशु के मुण्डन व नामाकरण संस्कार के लिये अपने परिजन को तिल चावल भेजकर न्यौता देते है। तथा मामा के यहां से पहरावणी लेकर आते है। सहरिया जनजाति आम के पत्ते मंगल ओर समृद्धि का प्रतीक तथा नीम के पत्तों को निरोग्य का प्रतीक मानते है। इसी दिन गांव का पटेल शिशु का नामांकरण करता है। तथा शिशु के मुण्डन का कार्य किया जाता है। तथा दूसरे दिन घाट पूजन का कार्य किया जाता है।

- **निवास स्थान :** सहरिया जनजाति जहां पर निवास करती है। उसे सहराना कहते है। सहरिया जनजाति किसी गांव, कस्बे या शहर के समीप अपना अलग मोहल्ला बसाते है। यह कोरकूओं के ढाने जैसा होता है। सहरिया जनजाति अपना सहराना अधिकांशतः जगलों में ऊंची पहाड़ियों की तुलना में समतल मैदान में बसाना अधिक पसन्द करते है। सहरियों के मकानों की बसावट अंग्रेजी के अक्षर उल्टे यू की तरह होती है। इनके सहराना का एक ही प्रवेश द्वार होता है। बीच में चौक होता है। जिसमें बंगला (अतिथि) घर होता है। इनके मकान आमने सामने पक्तिबद्ध चौकोर शैली में बने होते है।

सहरिया जनजाति अपने घर घास फूस, बॉस, लकड़ी और गारे से मिट्टी की दीवारो पर पत्थर के पाट(पट्टिया)रखकर बनाते है। इनके घरों में एक बडा कमरा तथा रसोईघर मुख्यरूप से बनाया जाता है। घर में अनाज भरने के लिये मिट्टी की बड़ी बड़ी कोठी (पेई) प्रत्येक घर में होती है। घर आँगन में ओटला बनाने की प्रथा पायी जाती है। दरवाजों के आजू बाजू लकड़ी से घोड़िले (घोड़े के सिर), घर की सुन्दरता बढ़ाने के लिये लगाये जाते है।

- **सामाजिक व्यवस्था :** सहराना में सहरियाओं के कई परिवार रहते है। प्रत्येक परिवार में एक मुखिया होता है। सहरिया पंचायत में कोटवार, बुराई भोपा / हथनरिया, पटेल, परधान होते है। सहरिया जनजाति अपनी समस्त समस्याओं का समाधान पंचायत के माध्यम से समाप्त करने का प्रयास करती है। सहराना का मुखिया पटेल होता है। इसे **खुटिया पटेल** [MPPSC SES 2022] भी कहते है। पटेल की नियुक्ती जाति परम्परा के अनुसार पीढ़ी दर पीढ़ी होती है। समाज और पटेल के कामों को पूरी निष्ठा से निभाने वाला व्यक्ति परधान कहलाता है। पटेल का मुख्य कार्य समाज के धार्मिक,

सामाजिक कार्यो में सम्मिलित होना ओर पंच निर्णय करना हेाता है। वही परधान का कार्य पंचायत जोड़ने, निर्णय सुनाने, दण्ड बसूली, सगाई ब्याह ओर अतिथियों की व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग करना है। परधान का चयन भी परम्परागत ढंग से होता है। पंचायत में स्त्रियों की कोई हिस्सेदारी नहीं होती है। परन्तु पंचायत का निर्णय हर स्त्री को मानना अनिवार्य है। परित्यत्ता या बेसहारा लड़की के माई - बाप पंच होते है। समाज में अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति में ''बराई'' संदेश वाहक होता है। वह डोंडी पीटता है। भोपा सहरिया जनजाति के लिये तंत्र - मंत्र, झाड़ - फूँक और अन्य सभी बीमारियों का इलाज करने वाला होता है। तथा हथनरिया या गुनिया सहरियाओं का वैध होता है। गुनिया को जड़ी बूटियों तथा तारक - मारक मंत्रो का ज्ञान होता है।

- **वेशभूषा :** पहले सवरों में नाम मात्र को ही वस्त्र धारण किये जाते थे। पुरूष मुख्य रूप से धोती प्रायः रंगीन कमीज और साफा पहनते है। तथा स्त्रियाँ लहँगा घाघरा, लुगड़ा, पेट्या, सलूका पहनती है। इनकी वेशभूषा पर राजस्थानी परम्परा का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इनके वस्त्रों का रंग गहरे चटकदार हरे, पीले, नीले और लाल होते है। आभूषण स्त्री और पुरूष दोनों आमतौर पर पहनते है। विवाहित सहरिया महिलाओं में गहने पहनने की ललक इतनी तीव्र होती है। कि आर्थिक हालत ठीक न होने पर भी वह कम से कम कान गले, कमर और पैर के आभूषण जरूर खरीदती है। फिर चाहे यह पीतल, एल्यूमीनियम के ही क्यों न हों सहरियाओं का रहन सहन सादा और आडम्बर हीन होता है।

- **खान – पान :** सहरियाओं के खान पान में पौष्टिक तत्व नहीं के बराबर होते है। मोटे अनाज जिनमें पौष्टिकता अपेक्षाकृत कम होती है। जुवार, बाजरा, मक्का, चना, चावल सहरियाओं का मुख्य भोजन है। सहरियाओं की जीवन पूर्ण रूप् से प्रकृति पर आश्रित है। सब्जियों का उपयोग मौसम के अनुसार किया जाता है। प्राकृतिक रूप से उगने वाली कंद, मूल, फल, हरी पत्तियां खाने का सहरियाओं का सबसे प्रिय शौक है। वनस्पतियों का ज्ञान इन्हें पुरखों से मिला हुआ है। शरीर के लिये संतुलित भोजन का अभाव और उदासीनता का भाव होने से अधिकांश सहरिया बीमारियों से जकड़े रहते है। इसके अलावा सहरिया जनजाति पक्षियों का शिकार करने व मछली पकड़ने का कार्य भी करती है। दारू (मदिरा) आदिम जातियों की तरह सहरिया समाज का अनिवार्य अंग है। सहरिया गर्मी में महुआ इकट्ठा करते है। और फिर उसे सड़ाकर प्रचलित मटकी यंत्र से मदिरा बनाते है। धार्मिक सामाजिक व अनुष्ठानिक कार्यो में दारू को प्रथम स्थान दिया गया है।

- **गौत्र :** सहरिया समाज अनेक गोत्रों में बंटा है। एक गोत्र के लोग कुटुम्बी, गोती, सगोती या भाईबन्दी कहलाते है। सहरिया गोत्र को गोत या बेक कहते है। गौरव बखानने के लिये सहरिया अपने गोत का नाम लेकर कसम खाते है। मूँछो पर ताव देते है। गोत्र जातीय इतिहास की पहचान का प्रतीक है।

- **विवाह :** विवाह समाज का एक आवश्यक अंग है। आदिम समूहों में विवाह की पद्धतियों बड़ी रोचक और मौलिक होती है। प्रत्येक जनजाति में विवाह के कुछ परम्परागत नियम होते है। जिनका निर्वाह समूह के प्रत्येक सदस्य को करना होता है। सहरियों का विवाह प्रायः वयः सन्धि पार होने पर होता है। संभववता संसार के सभी आदिम समूहों में यह प्रथा है। मध्य प्रदेश और राजस्थान की सीमा पर कोटा जिले के सीताबाड़ी स्थल पर सहरियों का एक वार्षिक मेला प्रतिवर्ष जेठ माह में वट पूजनी आमावस्या से दस दिन तक लगता है। इसमें म.प्र. और राजस्थान से हजारों सहरिया आबाल वृद्ध पहुंचते है। अपने पूर्वज बाल्मीकि के दर्शन करते है। और युवक युवतियां अपने जीवन साथी का चुनाव करती है। आशा पूरी होने पर मनौती चढ़ाते है। तथा ऐसी मान्यता है। कि यदि कोई युवक मेले में किसी युवती के सामने पान या बीड़ी का बंडल फेंक देता है तो उसका अर्थ है। उसे लड़की पसन्द है। और यदि लड़की उसे उठा लेती है। तो

लड़की को लड़का पसन्द है। सीतावाड़ी का मेला सहरियों के नाम से विख्यात है। वयः सन्धि के उपरान्त विवाह होने के लिये कन्या का विवाह तीर से कर दिया जाता है।

- **विवाह प्रथायें**
- **सगाई विवाह :** सगाई विवाह में दोनों पक्षों की राजी बाजी से पहले सगाई की रस्म की जाती है। क्योंकि इसमें लड़के - लड़की की मर्जी के साथ माता - पिता की स्वीकृति होती है। ऐसे विवाह अधिक टिकने वाले होते है। विवाह की तिथि पंच मिलकर तय करते है। तथा विवाह देवउठनी ग्यारस से प्रारंम्भ होते है। इस विवाह में लगुन, गणेश पूजा, हल्दी, तेल, चढौवा मण्डप, बारात आगवानी, भॉवर, भोज विदाई गौना सहरियाओं के परम्परागत विवाह की खास रस्में है।
- **झगड़ा विवाह :** कोई व्यक्ति किसी विवाहित स्त्री को भगाकर ले जाता है। या स्त्री स्वयं प्रेमी के साथ भाग जाती है। तो दोनों परिवार के व्यक्ति उन्हे ढूँढते है। दोनों के मिल जाने पर उनका पुर्नविवाह कर दिया जाता है। तथा स्त्री के पूर्व पति को नये पति द्वारा झगड़ा देना पड़ता है। झगड़े के मूल्य का निर्धारण पंचायत करती है।
- **विधवा विवाह :** विधवा स्त्री किसी व्यक्ति से पुनर्विवाह कर सकती है। परन्तु पुनर्विवाह का पहला हक उसके देवर का होता है। फिर भी यह विधवा की मर्जी पर निर्भर करता है।
- **खेका विवाह :** यदि विधवा किसी अविवाहित पुरुष के घर में बैठ जाती है। और पुरुष भी उसे रखने को तैयार हो जाता है। तो उनका खेका विवाह जाता है।
- **झार – फेरा :** लड़की का सम्बन्ध किसी परिवार में तय हो जाने के बाद उसका पिता प्रलोभन में आकार सम्बन्ध तोड़ देता है। और उसका सम्बन्ध अन्यत्र कर देता है। तो ऐसी स्थिति में पूर्व परिवार वाले अपनी प्रतिष्ठा के लिये उसके विवाह के पूर्व ही युवती का जबरदस्ती अपहरण कर लिया जाता है। और अपने लड़के के साथ उसकी भांमर या फेरे कर देते हैं। इस विवाह को झार - फेरा विवाह कहते है।

- **सहरिया जनजाति के देवी देवता**

  - **ठाकुर देव :** बच्चों और बूढ़ों की रक्षा करने वाला ग्राम देवता है। ठाकुर देव गांव के किसी छोर पर पेड़ के नीचे स्थापित होते है। बच्चों को निमोनियां और बुढ़ों की पसली गलने पर ठाकुर देव की मनौती होती है। तथा ठाकुर देव की पूजा में भोपा के द्वारा दारू और बकरे की बलि दी जाती है।
  - **भैरो देव :** भैरो देव से बॉझ स्त्रियां पुत्र प्राप्ति की कामना करती है। बकरे मुर्गे की बलि दी जाती है। भैरों देव की स्थापना किसी पेड़ के नीचे या खुले चबूतरे पर एक सिन्दूर लगे लम्बे गोल पत्थर के रूप में होती है। भैरों देव प्रत्येक गांव में होते हैं।
  - **नाहर देव :** नाहर देव की स्थापना जंगल में होती है। नाहर का अर्थ शेर है। कई आदिम जातियों में शेर या बाघ की पूजा और उसे देवता मानने का चलन प्राचीन परम्परा की एक कड़ी है। इसके पीछे शेर का भय भी है।

  - **परीत देव :** किसी प्रतिष्ठित सहरिया की मृत्यु होने पर उसके खेत में उसका दाह-संस्कार किया जाता है। यदि वे परिवार को कष्ट देते है। तो भोपा क निर्देशानुसार उनका चबूतरा बना दिया जाता है। प्रत्येक अमावस्या पूर्णिमा को दूध नारियल बताशे चढ़ाकर परिवार द्वारा उनका पूजन किया जाता है।
  - **दरेठ देव :** बच्चों का मुण्डन संस्कार दरेठ देव के सम्मुख किया जाता है। चैत्र कुंआर माह की नवमी में पान प्रसाद, बलि चढ़ाकर इनका पूजन किया जाता है। निःसंतान को संतान देने वाले दरेठ देव है। यह चौहानों के कुल देवता है।

- **कारस देव :** विष सोखने वाला देव है। सर्प या बिच्छू दंश पर कारस देव का नाम स्मरण कर रोगी को मिट्टी के बन्ध बांधे जाते है। जिससे रोगी ठीक हो जाता है। भादो की शुक्ल पंचमी को कारस देव की विधिवत पूजा की जाती है। कारस देवता खडया गोत्र का देवता है।

- **भूमिया देव :** ग्राम देवता है। प्रत्येक सहराना के बीच भूमिया देव का ओटल्या बनाकर पत्थर पर उत्कीर्ण मूर्ति या सादा पत्थर स्थापित किया जाता है। भूमिया देव गांव का संरक्षक देव है। चिंहारे की पूजा में एक सुअर की बलि दी जाती है। तथा बलि देने वाले सुअर को सहराना की सीमा पर घुमाते है।
- **हीरामन देव :** मनुष्य व पशु को सर्प के काटने पर हीरामन देव के नाम से बन्ध बांधे जाते है।
- **तेजाजी महाराज :** तेजाजी राजस्थान के लोक देवता है। लेकिन म.प्र. के मालवा - निमाड़, ग्वालियर अंचल में तेजाजी की व्यापक प्रतिष्ठा है। गांव में तेजाजी के चबूतरे स्थापित किये जाते है।

इनके अलावा सहरिया जनजाति में बीजासन माता, कैला माता, कंकाली माता, जिन्द या जिन्न पूजन आदि प्रचलित है।

► **त्यौहार / पर्व :** सहरिया जनजाति दीपावली, होली, दशहरा, आदि सभी त्यौहार मनाती है।

- **हरियाली अमावस्या :** खेत जोतने से पूर्व पूजा का त्यौहार हरियाली अमावस्या है। तथा इस पर्व में अच्छी फसल की कामना की जाती है।
- **तेजा नवमी :** तेजा नवमी को सहरिया लोग अपना विशेष पर्व मनाते है। सहरियां का तेजाजी में अटूट विश्वास है। इसलिये कई ग्रामों में तेजाजी के ओटले बने होते है। तेजाजी सर्प काटने से भी बचाते है। इसलिये लोग तेजाजी के नाम लाल रेशमी धागो से बन्ध बांधते है।

► **आर्थिक आधार :** सहरियाओं के परम्परागत धन्धे कृषि, मजदूरी ओर बनोत्पाद संग्रह करना है। परम्परागत शिल्प और शिकार भी अल्प आर्थिक स्त्रोत है। परन्तु उपरोक्त कार्य से इनके जीवन का निर्वहन होना मुश्किल है। अतः ये शहरी मजदूरी कारखानों में काम, हम्माली रिक्सा चलाने जैसे धन्धों में खप रहे है इसके अतिरिक्त सहरिया जनजाति कृषिगत मजदूरी भी करती है।

- सवरों का मुख्य धन्धा वनोत्पाद इकट्ठा करना और खेती है तथा मधुमक्खी के छत्ते से शहद निकालने में निपुण है।
- साओंर अभी भी एक नोकदार छड़ी से जुवार बोते है। उनका मानना है। कि नोकदार छड़ी (औजार) उन्हें महादेव ने भेंट किया है।
- सहरिया हाली, खेतिहर मजदूरी करते है।
- इसके अलावा सहरिया महुवा, ऑवला, शहद गोंद, तेदूपत्ती व पहाड़ों पर ज्वार की खेती करके अपना पेट पालते है तथा सहरिया जनजाति को जड़ी बूटियों का अच्छा खान होने के कारण यह जड़ी बूटियों के संग्रहण का भी कार्य करते है।

► **बोली :** सहरिया जनजाति कोलारियन परिवार की मानी जाती है। इसलिये इनकी भाषा मुण्डारी या कोलारियन परिवार की रही होगी। परन्तु मध्य प्रान्त में आने के कारण आर्यो की हिन्दी बोलने लगे है।

सहरिया समाज में बात-बात पर कहावतों का प्रयोग सहज रूप से देखा जा सकता हैं सहरिया कहावतों को केवत या केनात कहते है।

▶ **लोग गीत/ नृत्य :**

1. हल्दी गीत
2. भतैया गीत
3. जेवनार
4. बन्ना गीत
5. गारी गीत
6. रसियां गीत
7. बंधाई गीत
8. लंगोरिया गीत
9. गोंठ लीला
10. भेंट
11. भजन
12. लहंगी नृत्य

▶ **मृत्यु संस्कार :** मृत्यु का भय सहरिया समाज में अधिक डरावना होता है। मृत्यु के भय से पूरा का पूरा सहराना किसी और जगह चला जाता है। सहराना में लगातार या अस्वाभाविक मौते होने पर सहराना दूसरे स्थान पर बसा लेते है। सहरियों में मृतकों को जलाने और गाड़ने दोनों की प्रथा है।

किसी की मृत्यु होने पर परिवार के सदस्य पहले गांव में फिर रिश्तेदारों को सूचना देते है। उसके बाद मृतक के कपड़े उतारकर उसके शरीर पर हल्दी मल दी जाती हैं बॉस की लकड़ियों से ठठरी बनाई जाती हैं मृतक के मुंह में हल्दी पैसे तथा सिरहाने जुवार के दाने और मृतक का प्रिय खाने पीने की चीजें तम्बाकू बीड़ी आदि रख देते है। तीसरे दिन प्रातः गांव के सभी लोग रोटी लेकर अस्थियाँ इकट्ठी करने के लिये श्मसान भूमि जाते है। तथा शवयात्रा के दौरान बने पत्थरों के ढेर पर चड़ाते है। तथा शमशान जाकर अस्थियाँ (छास – माटी) एकत्र करते है। शाम के समय मृत्यु स्थान पर तीन गड्डे खोदकर मृतक की आत्मा का आवहान किया जाता है। भेंट, पूजा, दारू चड़ाकर गड्डो को बंध कर दिया जाता है। तीन गड्डे मनुष्य की तीन अवस्था बचपन जवानी और बुढ़ावा को बताती है। तथा खूंटा अमर आत्मा का प्रतीक है।

Exercise no 10

1. सहारिया जनजाति किस क्षेत्र में अधिक संख्या में निवास करती है [MPPSC Tax Assistant 2012]
   (a) मण्डला शहडोल
   (b) बुंदेलखण्ड
   (c) मुरैना-श्योपुर शिवपुरी
   (d) रीवा-सीधी
2. इनमें से मध्यप्रदेश की कौन-सी विशेष जनजाति है [MP Vyapam Block Development Officer Exam 2016]
   (a) सहरिया
   (b) अगरिया
   (c) धनवार
   (d) कोल
3. निम्नलिखित में से किस जनजाति को आदर के साथ खुटिया पटेल के रूप में संबोधित किया जाता है। [MPPSC SSE 2022]
   (a) सहरिया
   (b) बैगा
   (c) भूमिया
   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
4. चम्बल क्षेत्र में रहने वाली विशेष पिछड़ी जनजाति कौन-सी है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) सहरिया
   (b) मुरिया
   (c) कोरकू
   (d) भारिया

1. (c) 2. (a) 3. (a) 4.(a)

1.11 कोल जनजाति

कोल मुण्डा समूह की एक अत्यंत प्राचीन आदिम जनजाति है यह आस्ट्रिक परिवार समूह से संबंधित जनजाति है, कोल जनजाति की संस्कृति और इतिहास पुरातन है। कोल जनजाति का वर्णन ऋग्वेद, मत्स्य, **रामायण** [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017] एवं महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों मे है कोल शब्द का अर्थ मानव है, कोल और कोरकू दोनों मुन्दरी भाषा परिवार से संबधित है ये अपनी उत्पत्ति अपने देवता ओटे बोरम और सिंग बोंगा (सूर्य देव) के द्वारा उत्पन्न नर और नारी से मानते है। कोल रामायण काल से भी अपना संबंध जोड़ते है तथा अपने आप को शबारी की संतान मानते है।

कोलगढ़ी रीवा जिले के त्योंथर कस्बे के एक ऊंचे टीले पर टमस नदी के किनारे स्थित है. यहां का किला जर्जर हालत में है।

कोलगढ़ी के किले के जीर्णोद्धार के लिए प्रदेश सरकार ने 324.70 लाख रुपए मंजूर किए हैं। सीएम शिवराज जीर्णोद्धार के कार्य का भूमि पूजन किया। तथा इसमे बिरसा मुंडा और शवरी माता की मूर्ति लगाने का भी ऐलान किया। कोलगढ़ी आदिवासी कोल राजाओं के वैभवशाली शासन का प्रतीक है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कोलगढ़ी के जीर्णोद्धार के साथ यहां पर कोल संस्कृति के संरक्षण के लिए संग्रहालय के निर्माण का भी निर्देश दिया है। इस संग्रहालय में कोल समुदाय की संस्कृति से जुड़ी वस्तुएं प्रदर्शित की जाएंगी। इसके अलावा यह कोल समाज के लिए तीर्थ स्थल के रूप में भी जाना जाएगा।

- **भौगोलिक विवरण :** मध्य प्रदेश का उत्तर पूर्वी क्षेत्र बघेलखण्ड के नाम से जाना जाता है। कोल जनजाति का प्रभाव बघेलखण्ड के **रीवा, सीधी, सतना, शहडोल, जबलपुर, रायगढ़ और मण्डला** में है । मध्यप्रदेश के अलावा कोल जनजाति उत्तरप्रदेश, बिहार, ओडिशा और त्रिपुरा में निवास करती है। मध्य प्रदेश की कोल जनजाति अपनी उत्पत्ति का मूल स्थान रीवा जिले के **फरेन्दा और कुराली** गाँव को मानती है,प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में भी कोल जाति का विवरण राज्य वंशों के रूप में किया गया है। महाभारत काल में कोल दैत्य नामक राजा था, जो मथुरा के राजा कंस का मित्र था। 15 वी सदी में अकबर तथा महाराणा प्रताप के बीच युद्ध में माड़ा के कोल राजा मड़निहा ने सैन्य बल से महाराणा की काफी मदद की, इनका राज्य विंध्याचल क्षेत्र के बैढन - सीधी में था जिसकी राजधानी माड़ा थी ।

- **जनसंख्या :**

कोल जनजाति मध्यप्रदेश की तीसरी सबसे बड़ी अनुसूचित जनजाति है। इनकी जनसंख्या वर्ष-2011 की जनगणना के अनुसार 1167694 जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का 1.068 प्रतिशत है, इनका देश की संस्कृति, गौरवशाली परम्परा और स्वंतत्रता आन्दोलन में अहम योगदान है । प्रदेश में कोल जनजाति मुख्य रूप से रीवा, सतना, शहडोल, सीधी, पन्ना एवं सिंगरौली जिलों में निवास करती है।

- कोल जनजाति की उपजातियां : कोल जनजाति में उपजाति की संख्या सात है

  - रउतिया, रौतेले ,ठकुरिया, बिंज, खंगार, खरवार, कथरिया

- **आवास / निवास स्थान:**

कोल जनजाति गाँव में जहां रहती है, उसे कोलिन टोला कहते है। इनके घर मुख्य रूप से से मिट्टी, घास, फूस के बने होते है, इन्हे मड़िया या झोपड़ी कहाँ जाता है,कोल जनजाति समूह में रहना पसंद करती है। कोल जनजाति अपने मकानों का मुख्य द्वारा दक्षिण दिशा में नहीं करते है। जिन क्षेत्रों में कोलों की आबादी घनी होती है उसे **कोल्हना** कहाँ जाता है।

- **खान-पान**

कोल शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के होते है इनकी प्रमुख खादयान फसल ज्वार, गेहू, कोदो, मिझरी, सांवा, काकुन, धान, अरहर, मूंग आदि होते है। कोल जनजाति के दैनिक जीवन में **मदाइन(मदिरा)** का विशेष महत्व होता है।

▶ **रहन सहन /वेशभूषा**:

कोल पुरुष पंचा- धोती कुर्ता और सिर पर साफा बांधते है। वर्तमान परिवेश में शहरी क्षेत्रों के निकट रहने वाले कोल पेंट-शर्ट पहनते है,कोल महिलाये जिस साड़ी को पहनती है, उसे **बंडी** कहा जाता है। कोल महिलाये गहना प्रिय होती है, ये मुख्य रूप से चांदी और गिलट से बने आभूषण पहनती है। गले में सूता, गुरियामाला, कंठी, भुजा में बहूँटा, हाथ की कलाई में चुरवा, नऔगिरीही, करधन आदि पहनती है।

- ढाती खोसब -सिर से कान तक पहने जाने वाला आभूषण।
- ढार- कान में पहने जाने वाला आभूषण।
- पुलिया – नाक का आभूषण।

▶ **आर्थिक जीवन**

कोल मुख्य रूप से खेती पर निर्भर है। अधिकांश कोल बड़े किसानों के खेतों में सालाना के हिसाब से खेती करते है। जिसे **बनी** मजदूरी करना कहा जाता है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले कोल वन विभाग के लिए वन उपज का संग्रहण करते है। कोल महिलाये घरेलू कार्य के साथ साथ बनी मजदूरी में सहायता करती है।

▶ **जन्म संस्कार**

आदिम समूहों में जन्म, विवाह और अन्त्येष्टि मुख्य संस्कार है। संस्कारों का संचालन घर की महिलो एवं पुरुषों द्वारा पारंपरिक गीतों के माध्यम से होता है,कोल जनजाति संतान प्राप्ति की कामना से अतिप्रसन्न होता है,क्योंकि अधिक संतान परिवार की संवृद्धि का सूचक होता है,कोल जनजाति में लड़के के जन्म को शुभ माना जाता है। शिशु जन्म के लिए घर में एक अलग कक्ष होता है जिसे सोबरिया कहा जाता जाता है। प्रसव का कार्य दाई सम्पन्न कराती है। शिशु जन्म के बारहवे दिन नामकरण का कार्य किया जाता है तथा सोहर गीत गाये जाते है,रात्री में कोल दहका नृत्य किया जाता है।

▶ **विवाह संस्कार**

यह समाज व पारिवारिक जीवन हेतु अनिवार्य संस्कार है स्त्री को पुरुष से अधिक महत्व दिया जाता है,इसलिए वधू मूल्य जैसी परंपरा निभाई जाती है। शादी के लिए प्रस्ताव लड़के के मामा या फूफा के द्वारा लड़की के यहां लेजाया जाता है। लगुन लिखते समय **वधू मूल्य** का भुगतान करना पड़ता है।

▶ **मृत्यु संस्कार**

कोल जनजाति में मृत्यु के बाद शव को जलाने, दफनाने यवं जलदाग देने की प्रथा है, बच्चों एवं कम उम्र के अविवाहितों की मृत्यु होने पर दफनाया जाता है, विवाहित बड़े-बूढ़े, स्त्री-पुरुष का अग्नि दाह करते है। कोल जनजाति में स्त्री की मृत्यु होने पर शव यात्रा में कोल पुरुष के साथ महिलाये भी शामिल होती है। शव को जलाने से पूर्व नहलाया जाता है।

▶ **पर्व -त्योहार**

कोल उल्लास के साथ पर्व त्योहार मानते है, कोलों के मुख्य त्योहार हरियाली अमावस्या, नागपंचमी, जनमास्टमी, तीजा, नवदुर्गा, दीपावली, खिचरहाई, शिवरात्रि, होली है। कोल जनजाति सावन के महीने में हरियाली अमावस्या का त्योहार मानती है । यह जनजाति नागपंचमी के दिन हल नही चलाती है। होली का त्योहार इनके जीवन में नई उमंग भरता है। नवाखानी का त्योहार नए अनाज के आने पर मनाया जाता है तथा नई फसल को अपने देवी देवता पर चढ़ाते है।

▶ **सामाजिक संगठन/पंचायत**

कोल जनजाति में सामाजिक संगठन में परिवार, नारी, मुखिया या चौधरी, बरुआ, भुईहार, ओझा, पण्डा, देवार और निउतिहा का महत्वपूर्ण स्थान है, समाज के हित में कार्य करना तथा जातीय नियमों का पालन करना सभी लोगों का परम कर्तव्य है। कोल जनजाति के पंचायत को गोहिया कहाँ जाता है। कोल जनजाति की पंचायत में मुखिया, बरुआ, भुईहार, निउतिहा मुख्य होते है।

- **मुखिया**-कोल जनजाति का मुखिया गाँव, **टोला का सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी** होता है। मुखिया को चौधरी, महतो या गौटिय भी कहते है। प्रशासकीय कार्यों के साथ साथ सामाजिक कार्यों में इनकी महती भूमिका होती है। इसका मुख्य कार्य गाँव के विवादों का निपटारा करना, शासकीय करो की वसूली करना है।

- **बरुआ** – बरुआ कोलों का धार्मिक नेता है। इसे देवी देवताओ के भाव आते है। कोल परिवार में किसी भी प्रकार की आपदा आने पर वे बरुआ से उचित परामर्श प्राप्त करते है कोल जनजाति का विश्वास है, कि कोई व्यक्ति मवेशी या गाँव किसी दैवीय आपदा से पीड़ित होता है तो बरुआ द्वारा तंत्र मंत्र और बलि पूजा से उपचार कराकर दैवीय शक्तियों को प्रसन्न करता है।

- **भुईहार**-कोलों के धार्मिक नेता बरुआ के बाद यह दूसरा पद है क्षेत्रीय प्रभाव के करण भुईहार को ओझा, पंडा या देवर भी कहा जाता है। जड़ी बूटी, तंत्र मंत्र, झाड फूंक, पूजा पाठ एवं अनुष्ठान की विधियों में पारंगत होता है।

- **निउतिहा**- कोल समाज में जन्म, छठी, बरहुँव, शादी या अन्य उत्सवों के अवसर पर सभी का निमंत्रण का कार्य करता है।

▶ **संगीत- नृत्य**

कोल जनजाति संगीत और नृत्य प्रिय जनजाति है कोलदहका या कोलदहकी इनका सर्व प्रिय नृत्य है इसके अलावा कोल जनजाति केहरा, दोतलिया और नारदी नृत्य करते है। कोल जनजाति संगीत प्रिय जनजाति है,ये मुख्य रूप रूप से सोहर गीत, विवाह गीत, नरती गीत, दादर गीत, भगत गीत, फाग, हिंदली, कजली, टप्पा और देव गीतों का गायन करते है।

- सोहर गीत**:** बच्चे के जन्म के समय गाये जाते है।
- विवाह गीत: विवाह के दौरान गाये जाते है जैसे गारी, सोहाग, सजनई ,लवापरोसन,परछन गीत आदि।
- दादर गीत: बारात जब बधू के दरवाजे पर आती है,उसक दौरान पुरुषों के द्वारा गाया जाता है,स्त्रियाँ नृत्य करती है।
- केहरा गीत:केहरा स्त्री पुरुष दोनों के द्वारा गाया जाता है।
- भगत गीत: नवरात्रि के दौरान गाये जाते है।
- कोलदहका नृत्य : खुशी के अवसरों पर कोल जनजाति के द्वारा किया जाने वाला महत्वपूर्ण नृत्य है।
- केहरा नृत्य: केहरा नाच का प्रचलन सारे बघेलखण्ड में है केहरा में स्त्री और पुरुष दोनों अलग अलग शैली में नाचते है इसका मुख्य ताल कहराव है।
- दोतलिया नारदी नृत्य : ये नृत्य कोल जनजाति की स्त्रियों के द्वारा किया जाता है।

▶ **कोल जनजाति के देवी देवता**

कोल जनजाति के कई देवी देवता है जिन पर वे अटूट आस्था रखते है।

- ठाकुर देव :ये ग्राम देवता होते है,ये ग्राम रक्षक होते है, ठाकुर देव के **बरुआ** होते है, जिन पर भाव आते है तथा ये गाँव की विपत्तियाँ दूर करते है। गाँव में महामारी आने पर ठाकुर देव की आराधना करते है, ठाकुर देव का स्थान गाँव के बाहर किसी पेड़ के नीचे होता है।
- बड़का देव :बड़का देव सभी वस्तुओ में व्याप्त होते है इसलिये **महादेव बड़का देव** के रूप में पूज्य है, गाँव की पूर्व दिशा में बड़का देव का स्थान होता है।
- अहीरबाबा : घर के अंदर उत्तर पश्चिम दिशा की ओर घर के कोने में एक चौतरा बनाकर अथवा जमीन में मिट्टी के दो शिवलिंग जैसी आकृति बनाकर अहीरदेव की पूजा की जाती है। इनका विश्वास है कि अहीर बाबा घर क सबसे बड़े देवता है ।
- घासी-घमसान- घासी घमसान कोलों के पूर्वज है, इसका चौरा बना कर इनकी पूजा की जाती है। पुत्र की कमाना के लिए इनकी पूजा की जाती है।
- सन्यासी देव : ये देव बाह्य बाधाओ का गाँव में प्रवेश को रोकते है।
- वनसती देवी : कोल वनग्रामों में रहते है, और वनस्पतियाँ के उपयोग से सदा उपकृत होते रहने के कारण उन्होंने वनस्पतियों के प्रति अपनी प्रति प्रसन्नता प्रकट करने के लिए वनसती देवी के रूप में मानकर अपनी आस्था प्रकट की है।
- शारदा माई: बघेलखण्ड के कोल **शारदा माई मैंहर** वाली को मानते है।

Exercise no 11	
1. मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजाति कौन-सी नहीं [MP Dairy Federation Exam 2016] (a) कोल (b) सहरिया (c) बैगा (d) भारिया	2. रामायण में निम्नलिखित जनजातियों में से कौन-सी जनजाति का उल्लेख है [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017] (a) कोल (b) भील (c) गोण्ड (d) उपरोक्त सभी
1. (a) 2. (d)	

1.12 आदिवासी सलाहकार परिषद

9. म. प्र. का हर पांचवा व्यक्ति जनजाति वर्ग से है। आदिवासी सलाहकार परिषद वर्तमान में भारत के **10 राज्यों** में है। आदिवासी सलाहकार परिषद का गठन भारतीय संविधान की **धारा 244(1)** [MPPSC SFS Main Paper 2019] के अनुसार पांचवी सूची[MPPSC SFM SP Exam 2019] के अतंर्गत राष्ट्रपति के आदेश पर किया जाता है। आदिवासी सलाहकार परिषद में किसी भी स्थिति में **20 से अधिक** [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020] सदस्य नहीं हो सकते है। जिनमें से लगभग 3/4 लोग राज्य विधानसभा में ST के प्रतिनिधि होगे। (विधायक)

- वर्तमान राज्यो की सूची जिनमें आदिवासी सलाहकार परिषद है।

1. आन्ध्रप्रदेश
2. तेलंगाना
3. छत्तीसगढ़
4. गुजरात
5. हिमाचल प्रदेश

6. झारखण्ड
7. मध्यप्रदेश
8. महाराष्ट्र
9. ओडिशा
10. राजस्थान

Exercise no 12	
1. जनजातिय सलाहकार परिषद की व्यवस्था भारतीय संविधान की निम्नलिखित में से किस अनुसूची में है। [MPPSC SFM SP Exam 2019] (a) पॉचवी अनुसूची (b) छठी अनुसूची (c) सातवी अनुसूची (d) आठवी अनुसूची 2. संविधान के किस अनुच्छेद में जनजातीय सलाहकार परिषद की स्थापना का प्रावधान किया गया है। [MPPSC SFS Main Paper 2019]	(a) 365 (b) 340 (c) 244 (d) 342 3. ..... सदस्यों की मध्यप्रदेश में जनजातीय सलाहकार परिषद (टी.ए.सी.) बनी है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020] (a) 21 (b) 20 (c) 22 (d) 19
1. (a) 2. (c) 3.(b)	

1.13 जनजाति शिक्षा, पुरुस्कार एवं उनके लिए संचालित कल्याणकारी योजना

▶ जनजाति शिक्षा

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय	33
आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	8
गुरूकुलम (6th to 12th)	4
कन्या शिक्षा परिसर	82
जिला स्तरीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	9

▶ एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय

- एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयो का गठन फर्म एण्ड सोसायटी एक्ट के अंतर्गत हुआ। इनका संचालन 'म.प्र. ट्रायबल बेलफेयर रेसिडेंसियल एण्ड आश्रम ऐजुकेशनल इस्टीट्यूशन सोसायटी भोपाल' द्वारा किया जाता है। वर्तमान में म.प्र. में 33 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय है।
- 29 अनुसूचित जनजाति एवं 04 विशेष रूप से कमजोर समूहों (P.V.T.G) हेतु संचालित जो इंदौर, गुना, जबलपुर, करहल (श्योपुर) में संचालित है।
- आदर्श आवासीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय :- वर्तमान में कक्षा 6 वी से 12 वी तक संचालित है। इनकी संख्या 08 है।
- गुरूकुलम विद्यालय :- यह विद्यालय संभाग स्तर पर संचालित किये जाते है। वर्तमान में इनकी संख्या 4 है।
  1. शहडोल
  2. इंदौर
  3. जबलपुर

4. भोपाल

- छात्रावास दिवस योजना : 1 नबम्वर को मनाया जाता हैं
- जनजाति छात्र - छात्राओ के लिये 23 क्रीडा परिषद हैं। इसमे 17 बालक तथा 06 कन्याओं के लिये है।

▶ **विशिष्ट क्रीडा परिसर - 07**

1. बालक क्रीडा परिसर - इंदौर - एथेलेटिक्स, स्वीमिंग, डायविंग
2. बालक क्रीडा परिसर - श्योपुर - एथेलेटिक्स
3. बालक क्रीडा परिसर - खरगौन - जिमनास्टिक
4. बालक क्रीडा परिसर - शहडोल - क्लाइम्बिग बोल्डरिंग
5. कन्या क्रीडा परिसर - जबलपुर - साइकिलिंग
6. कन्या क्रीडा परिसर - धार - टेबल टेनिस, बेडमिंटन स्वॅश
7. कन्या क्रीडा परिसर - झाबुआ - तीरंदाजी

▶ **पुरस्कार**

- **शंकर शाह पुरस्कार एवं रानी दुर्गावती पुरस्कार :** कक्षा 10 वी एवं 12वी की बोर्ड परिक्षाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रथम तीन जनजातीय छात्र को शंकरनारायण व छात्रा को दुर्गावती अवार्ड **वर्ष 2015** से दिया जा रहा है। इसके तहत प्रथम स्थान वाले का 51,000 तथा द्वितीय 40,000 तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को 30,000 है।

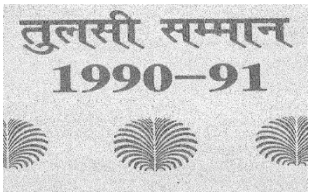

- **राष्ट्रीय तुलसी सम्मान :** मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा प्रतिवर्ष जनजातीय, लोक एवं पारम्पारिक कलाओं में उत्कृष्टता और श्रेष्ठ उपलब्धि को सम्मातनित करने के लिए वार्षिक राष्ट्रीय तुलसी सम्मान की स्थापना वर्ष 1983 में की गई है, जो **केवल पुरुष कलाकार** को प्रदान किया जाता है। राष्ट्रीय तुलसी सम्मान तीन वर्ष में दो बार प्रदर्शनकारी कलाओं और एक बार रूपंकर कलाओं के लिए दिया जाता है।

- **राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान**[MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]**:** जनजातीय लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में **महिला कलाकार** को सम्मानित करने के लिए राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान की स्थापना विभाग द्वारा **वर्ष 1996** में की गई है।

राष्ट्रीय तुलसी एवं देवी अहिल्या सम्मान के अंतर्गत सम्मानित होने वाले कलाकारों को सम्मान स्वरूप 2 लाख की सम्मान राशि, सम्मान पट्टिका एवं शॉल-श्रीफल प्रदान किया जाता है।

- मेधावी विद्यार्थी पुरस्कार योजना : प्रदेश के बोर्ड परिक्षा में प्रथम 50 बालक तथा 50 बालिकाओं का प्रोत्साहन रासी जिला स्तर पर 1000 रुपये व प्रशस्ती पत्र प्रदान करने का प्रावधान है।
- **भारत दर्शन योजना :** प्रदेश में 51 जिलों तथा 15 जिलों में 10 वी बोर्ड में सर्वाधिक अंक पाने वाले जनजातिय वर्ग के 01 छात्र, 01 छात्रा को प्रतिवर्ष 23 से 28 तक भोपाल में आंमत्रित कर नेतृत्व विकास बढ़ान हेतु 03 दिवसीय शिविर का आयोजन किया जाता है। 2018-19 से 89 आदिवासी विकासखण्ड से भी एक छात्र व एक छात्रा बुलाई जाती है।

- **आकांक्षा योजना** [MPPSC SSE 2020] **:** अनुसूचित जनजाति के छात्र / छात्राओं जिन्होने कक्षा 10 वीं में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हो तथा 11वीं या 12वी में अध्ययनरत रहते हुये राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा की तैयारी हेतु 04 संभागीय मुख्यालय इंदौर, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर में द्विवर्षीय कोचिंग दिये जाने हेतु आंकाक्षा योजना संचालित है।
- **म.प्र. आदिवासी वित्त एवं विकास निगम :** म.प्र. आदिवासी वित्त एवं विकास निगम की स्थापना इंडियन कंपनी एक्ट 1956 की धारा 25 के अंतर्गत की गई रजिस्टार ऑफ कंपनीज ग्वालियर द्वारा इसका पंजीयन दिनांक 29.09.1994 को किया गया। निगम द्वारा आर्थिक स्वरोजगार योजनाओं का क्रिया क्रियान्वयन दिनांक अप्रैल 1995 से प्रारम्भ किया गया। इसका मुख्यालय **भोपाल** है।

▶ **जनजाति शिक्षा एवं योजनायें**

- **कन्या साक्षरता योजना (2005-06) :** स्नातक की पढ़ाई के लिये प्रोत्साहन राशि। म.प्र. में शिक्षा गारन्टी योजना। जनवरी 1997 से प्रारम्भ है। जिसने जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में 25 बच्चे होने पर 90 दिन के भीतर स्कूल खोलने का प्रावधान है।
- **टंट्या भील स्वरोजगार योजना 2008 :-** शिक्षित युवक युवतियो को 50000 से 25 लाख तक का ऋण देने का प्रावधान है।
- **भगवान बिरसा मुंडा स्व-रोजगार योजना 2022**[MPPSC DSP_Radio 2020] **:** बिरसा मुंडा में स्व-रोजगार के लिए एक लाख से 50 लाख रुपए तक के प्रोजेक्ट शामिल रहेंगे।

- **आवास सहायता योजना 2016 :** विभाग द्वारा जनजातीय बालक एवं बालिकाओं को अपने गृह निवास से बाहर उच्च स्तर की शिक्षा निरंतर रखने के लिये आवास सहायता योजना संचालित है।

योजना के अंतर्गत देय सहायता राशि - भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन संभागीय मुख्यालय के लिये 2000 अन्य जिला मुख्यालय के लिये 1250 तहसील स्तर पर 1000 प्रतिमाह की दर से देय है।

- विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों का गणवेश प्रदाय : इस योजना को प्रदेश के 15 जिलों में लागू किया गया है। यह योजना विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा, सहारिया, भारिया, के शैक्षणिक विकास के लिये है।
- **प्रतिभा योजना :** यह योजना वर्ष 2017 से प्रारम्भ की गई। इसके तहत राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षाओं में भाग लेने के लिये प्रोत्साहन राशि दी जाती है। (Ex: NEET, JEE, CLAT, NDA, etc)

▶ **बस्ती विकास योजना एवं विद्युतीकरण योजना :** अनुसूचित जनजाति बस्तियों में मूलभूत आवश्यकताओं से संबधित अधोसंरचना विकास कार्य विभिन्न योजनाओं के माध्यम से राज्य शासन द्वारा किया जाता है।

▶ **हितग्राही मूलक योजनाएं**

- **आहार अनुदान योजना :** इस योजना का प्रारम्भ दिसम्बर 2017 में हुआ। यह योजना विशेष पिछड़ी जनजाति सहारिया, बैगा और भारिया का कुपोषण से मुक्ति दिलाने हेतु है। पहली किस्त 21 अगस्त 2020 को लाभार्थीयो को दी गई

- **मुख्यमंत्री कौशल्या योजना :** 18 से 35 वर्ष आयु के शिक्षित युवाओं को विभिन्न रोजगारोन्मुखी व्यवसायो में नियोजित करने हेतु वर्ष 2017 - 18 में प्रारम्भ की गयी।
- **मुख्यंमत्री स्वरोजगार योजना :** न्यूनतम 50 हजार से रुपये 10 लाख तक का बैंक ऋण देने हेतु योजना वर्ष 2014 में प्रारम्भ की गयी।
- **मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना :** इस योजना के अंतर्गत 50 हजार तक के ऋण 18 से 55 वर्ष आयु के बी.पी.एल श्रेणी के व्यक्तियों को दिया जाता हैं योजना का प्रारम्भ 1 अगस्त 2014 में हुआ।
- **मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना :** 18 से 40 वर्ष तक के युवाओ को न्यूनतम 10 लाख रूपये से 2 करोड़ रूपये तक का बैंक ऋण उपलब्ध कराया जाता है।

► स्वास्थ संबंधित योजनाएं

- **सिकल सेल एनीमिया** [MPPSC ADPO 2021; MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]

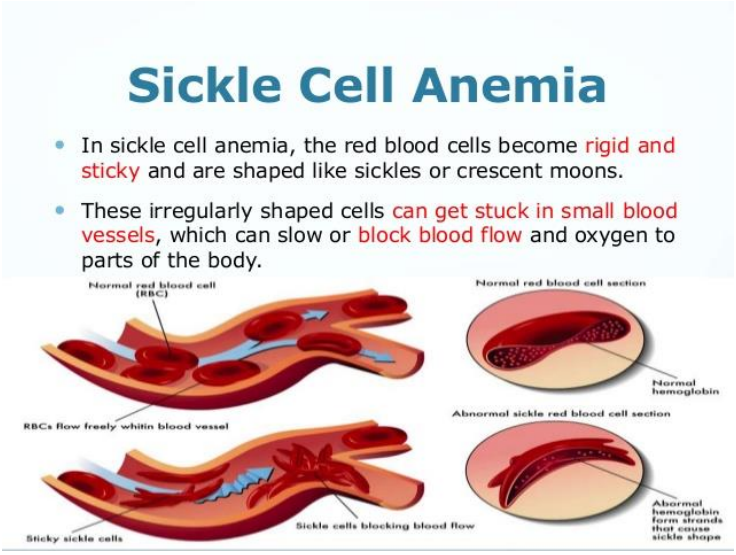

सिकल सेल रोग के प्रबंधन के लिए प्राथमिक क्षेत्र भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में सिकल सेल रोग को समाप्त करने का उल्लेखित समयबद्ध लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, समुदाय में इस बीमारी के बारे में जागरूकता बढ़ाने, समय रहते पहचान के लिए मास स्क्रीनिंग गतिविधियों को कार्यान्वित करने, प्राथमिक स्तर पर नैदानिक और चिकित्सा देखभाल प्रदान करने, निरंतर मॉनिटरिंग प्रणाली को कार्यान्वित करने, सिकल सेल रोग से संबंधित रणनीतियों को सम्मिलित करने के लिए मौजूदा प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल में मजबूती लाने, प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल टीमों की क्षमता का विकास करने और उच्च स्तरीय देखभाल सुविधाओं में लागत प्रभावी तरीके से व्यवस्थाओं का निर्माण करने की आवश्यकता है। सभी सिकल सेल रोग से ग्रस्त रोगियों के लिए सस्ते और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना, जागरूकता फैलाना, प्रथाओं के बदलाव और स्क्रीनिंग निर्देश कार्यो के माध्यम से प्रसार को कम किया जाना ही इस कार्यक्रम का संपूर्ण लक्ष्य है।

उद्देश्य

1. सभी सिकल सेल रोगियों को सस्ती, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराना।

2. सिकल सेल रोग के प्रसार को कम करना।

इस कार्यक्रम को मिशन मोड में आयोजित किया जाएगा जो जन्म से लेकर 40 वर्ष आयु तक की सम्पूर्ण जनसंख्या को शामिल करेगा। पहले वर्ष में, प्राथमिकता उन जनसंख्या को दी जाएगी जो जन्म से अठारह वर्ष की आयु तक होंगे, जिसके बाद दूसरे और तीसरे वर्ष में 40 वर्ष आयु तक सम्पूर्ण जनसंख्या की स्क्रीनिंग की जाएगी । यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का हिस्सा होगा और इसका मुख्य ध्येय समग्र आदिवासी और अन्य उच्च प्रबलता वाले क्षेत्रों में सिकल सेल एनीमिया के जनसंख्या पर आधारित स्क्रीनिंग, रोकथाम और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करना है। प्रारंभिक चरण में, मिशन की

प्राथमिकता उच्च प्रबलता वाले राज्यों में हस्तक्षेप करना होगा, और योजना के चरणबद्ध ढंग से आगे बढ़ते हुए सभी राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल करने की परियोजना बनाई जाएगी। मिशन का लक्ष्य है कि तीन वर्षों में 7 करोड़ लोगों की स्क्रीनिंग, रोकथाम के लिए परामर्श और सिकल सेल वाले लोगों की देखभाल प्रदान करना तथा भारत में सिकल सेल रोग की सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या को **वर्ष 2047** से पहले समाप्त करना है। शुरू में **17 राज्यों** को प्राथमिकता दी गयी है जहां सिकल सेल रोग का अधिक प्रसार है, जैसे **मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान,छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्नाटक, असम, आंध्र प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और केरल**।

Exercise no 13

1. मध्य प्रदेश सरकार की संत रविदास स्वरोजगार योजना का संचालन निम्नलिखित में से किसके द्वारा किया जाता है। [MPPSC DSP Radio 2020]
   (a) अनुसूचित जनजाति कल्याण निगम
   (b) अनुसूचित जाति वित्त विकास निगम
   (c) पिछड़ा वर्ग विकास निगम
   (d) जन कल्याण वित्त निगम
2. मध्यप्रदेश सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना की अनुशंसा 2022 में किस तिथि पर की। [MPPSC DSP_Radio 2020]
   (a) 6 अगस्त
   (b) 9 सितम्बर
   (c) 6 सितम्बर
   (d) 9 अगस्त
3. वर्ष 2022 में मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय आदिवासी गौरव दिवस किस स्थान पर मनाया गया। [MPPSC Paper Computer Programmer Exam 2021]
   (a) भोपाल
   (b) इंदौर
   (c) झाबुआ
   (d) शहडोल
4. आकांक्षा योजना संबंधित है। [MPPSC SSE 2020]
   (a) अनुसूचित जनजातीय छात्रों को प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं हेतु कोचिंग देने से
   (b) अनुसूचित जनजातीय छात्रों को खेल हेतु कोचिंग देने से
   (c) अनुसूतिच जनजातीय छोत्रों में उद्यमिता बढ़ाने हेतु
   (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
5. देवी अहिल्या सम्मान पुरुस्कार निम्न में से किस क्षेत्र से जुड़ी महिलाओ को दिया जाता है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) लोककला,आदिवासी कला
   (b) दलित साहित्य
   (c) लिंग समानता
   (d) बलिका शिक्षा
6. मध्यप्रदेश में जनजाति कल्याण विभाग जनजातीय बच्चों को शिक्षा की सुविधा हेतु कौन सी योजनाओं को चलाता है [MPPSC Tax Assistant 2010]
   (a) पाठशालाएं
   (b) छात्रवृत्तियां
   (c) छात्रावास
   (d) ये सभी
7. सिकल सेल एनीमिया मिशन 2047 का शुभारंभ किस राज्य से किया गया है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) मध्यप्रदेश
   (b) छत्तीसगढ
   (c) झारखंड
   (d) राजस्थान

1. (b) 2. (c) 3. (d) 4. (a) 5. (a) 6. (d) 7. (a)

1.14 आदिवासी शोध केन्द्र, संग्रहालय एवं निगम

देश का पहला आदिवासी शोध संचार केन्द्र खोलने की घोषणा वर्ष **1994** में की गई। इसके अंतर्गत वर्ष 1994 में आदिवासी शोध संचार केन्द्र का शिलान्यास भी किया गया। इस केन्द्र को म.प्र. के झाबुआ जिले में बनना था परन्तु वर्तमान में कार्य बंद है।

▶ **इंदिरा गांधी जनजातिय विश्वविद्यालय**[MPPSC SSE 2021] : IGNTU अपनी तरह का भारत का पहला जनजाति विश्वविद्यालय है। जिसका निर्माण विश्वविद्यालय अधिनियम 2007 के तहत हुआ। जो वर्ष 2008 में प्रभाव में आया।

- इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय का निर्माण अमरकंटक (अनुपपुर) में किया गया है।

▶ **बादल भोई जनजातीय संग्रहालय छिदंवाड़ा**[MPPSC State Forest Service Main Examination 2020] : इस संग्रहालय की स्थापना 20 अप्रैल 1954 में हुई थी।

- 1975 में इस संग्रहालय को राज्य संग्रहालय का नाम दिया गया। परन्तु 8 सितम्बर 1997 ई. को इसका नाम बदल कर बादल भोई जनजाति संग्राहालय रख दिया गया।
- 15 अगस्त 2003 को यह संग्राहालय पर्यटकों के लिये खोल दिया गया।

▶ **आदिवासी कला संग्रहालय, खजुराहो (छतरपुर) :** आदिवासी कला को सहेज कर रखने के लिये म.प्र. के खजुराहो में आदिवासी कला संग्रहालय की स्थापना की गई।

▶ **म.प्र. जनजाति संग्रहालयय, भोपाल :** म.प्र. जनजाति संग्रहालय भोपाल की स्थापना वर्ष 1964 में राज्य संग्रहालय के रूप में हुयी। परन्तु नवीन भवन की स्थापना 2013 में हुई जिसका उद्घाटन तत्कालीन भारतीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने किया।

- इसके भवन की रूपरेखा (डिजाइन) रेवाची कामथ ने दी है।

▶ **म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद, भोपाल**

- म.प्र. लोक कला परिषद, भोपाल की स्थापना सन् 1980 में हुयी।
- कला परिषद द्वारा चौमासा नामक पत्रिका का संपादन का कार्य वर्ष 1980 से निरंतर किया जा रहा है। (संपादक:- धर्मेंद्र पारे)

▶ **राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान (NIRTH), जबलपुर** [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020] : Indian Council Medical Research (ICMR) की सहायता से राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की स्थापना वर्ष 1984 नेताजी सुभाष चन्द्र बोस मेडीकल कॉलेज जबलपुर में की गई। RMRCT (Regional Medical Research Center for Tribal) अपनी मुख्य ईमारत में अप्रैल 2002 में स्थानांतरित हुआ। इसका वर्तमान नाम राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान वर्ष 2014 में दिया गया।

- यह संस्थान जनजाति स्वास्थ्य वायरल निदान, आणविक आनुवांशिकी, आणविक परजीवी विज्ञान, आनुवांशिकी महामारी विज्ञान आदि पर अनुसंधान करता है।

► **आदिवासी प्रकोष्ठ का गठन :** म.प्र. राज्य की अनुसूचित जनजाति की रूढ़िजन्य विधि संहिता 1992 बनाने के उच्च न्यायालय की अनुशंसा पर 9 जनवरी 1984 को आदिवासी प्रकोष्ठ का गठन हुआ। आदिवासी प्रकोष्ठ का गठन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह के कार्यकाल में हुआ इसकी प्रथम बैठक 17-08-1984 को हुई।

अध्यक्ष	मुख्यमंत्री	1
उपाध्यक्ष	विधि मंत्री व जनजातीय मंत्री	2
सलाहकार		5
सदस्य		8
सचिव		1
सहायक सचिव		1

► **वन्या प्रकाशन**

वन्या प्रकाशन [MPPSC ADPO 2021] की स्थापना वर्ष **1980** को म.प्र. शासन, आदिम जाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के उपक्रम के रूप में हुई है। वन्या का पंजीयन मध्यप्रदेश फर्म्स एवं सोसायटीज म.प्र. भोपाल द्वारा किया गया।

वन्या के मुख्य उद्देश्य -

- मध्यप्रदेश के आदिवासियों के हित में आदिवासी संस्कृति से संबंधित श्रेष्ठ साहित्य को आदिवासी समाज में पहुँचाना।
- नव साक्षर एवं शिक्षित आदिवासियों के लिए श्रेष्ठ साहित्य की खरीदी, निर्माण, प्रकाशन एवं वितरण।
- प्रमुख आदिवासी बोलियों में श्रेष्ठ साहित्य एवं पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन।
- आदिवासी क्षेत्रों एवं आदिवासी जन-जीवन से संबंधित मूल्यवान पुराने अभिलेखों का संपादन एवं प्रकाशन तथा पूर्व प्रकाशित दुर्लभ साहित्य का पुनर्प्रकाशन।
- अदिवासी क्षेत्रों में अनुसंधान सामग्री का प्रकाशन। भारतीय संस्कृति एवं महापुरूषों से संबंधित चुनी हुई सामग्री का प्रकाशन एवं इनके संबंध में पूर्व प्रकाशित सामग्री का मूल प्रकाशकों से अनुबंध कर प्रकाशन तथा आदिवासी क्षेत्रों में उनका वितरण।
- अन्य प्रकाशकों के द्वारा प्रकाशित चुनी गई पुस्तकों को आदिवासी क्षेत्रों, छात्रों तथा संस्थाओं के लिए खरीद एवं वितरण तथा उनके विशेष संस्करणों का प्रकाशन।
- आदिवासी संस्कृति का अनुरक्षण तथा उसके प्रसार के लिए आवश्यकतानुसार उपर्युक्त सामग्री का संकलन एवं प्रकाशन।
- संचालक मण्डल की सहमति से अन्य कल्याणकारी योजनाओं को कार्यान्वित करना, जिन से अनुसूचित जाति, आदिवासी छात्र/छात्राओं के शैक्षणिक स्तर का उन्नयन हो सके तथा इस निमित्त दान एवं आर्थिक सहयोग देना।

Exercise no 14	
1. आदिवासियों की बोलियों में संवाद करने एवं सूचनाएँ प्रसारित करने वाले सामुदायिक रेडियो का नाम क्या है। [MPPSC ADPO 2021] (a) अरूणिमा (b) वन्या (c) संवेदना (d) नवजीवन 2. मध्य प्रदेश में प्रथम भील सामुदायिक रेडियो केन्द्र कहॉ प्रारंभ किया गया है। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021] (a) नरसिंहपुर (b) भाबरा (c) महू (d) सैलाना 3. श्री बादल भोई राज्य आदिवासी संग्रहालय स्थित है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]	(a) रीवा (b) बालाघाट (c) छिन्दवाड़ा (d) मण्डला 4. इन्दिरा गांधी ट्राईबल विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश के किस शहर में स्थित है। [MPPSC SSE 2021] (a) महेश्वर (b) अमरकंटक (c) मुरैना (d) दतिया 5. आई. सी. एम. आर. द्वारा स्थापित राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान …….. स्थित है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020] (a) भोपाल (b) जबलपुर (c) इंदौर (d) ग्वालियर
1. (b), 2. (b), 3. (c), 4. (b), 5. (b)	

मध्यप्रदेश आदिवासी वित्त एव विकास निगम

निगम से संबंधित सामान्य जानकारी: निगम की स्थापना मध्य प्रदेश आदिवासी वित्त एवं विकास निगम की स्थापना इंडियन कंपनी एक्ट 1956 की धारा 25 के अंतर्गत (लाभ के लिए नहीं) की गई है। रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज़, ग्वालियर द्वारा इसका पंजीयन दिनांक 29.09.1994 को किया गया। निगम द्वारा आर्थिक एवं स्वरोजगार योजनाओं का क्रियान्वयन दिनांक **01 अप्रेल 1995** से प्रारंभ किया गया।

निगम के उद्देश्य: मध्य प्रदेश के आदिवासियों का आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास करना। शोषण समाप्त कर उन्हें विकसित कर गरीबी रेखा से उपर उठाना। उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सुविधाजनक ऋण/अनुदान उपलब्ध कराना।

निगम के दायित्व : प्रदेश के आदिवासी वर्ग के युवाओं को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिये स्वरोजगार हेतु आदिवासी वित्त विकास निगम द्वारा संचालित स्वरोजगार योजनाओं के अन्तर्गत बैंकों के माध्यम से ऋण दिलाकर स्वावलम्बी बनाना।

निगम की अधिकृत अंशपूंजी निगम की अधिकृत अंशपूंजी 50.00 करोड़ रूपये है, जिसमें राज्य शासन का हिस्सा 51 प्रतिशत तथा केन्द्र सरकार का हिस्सा 49 प्रतिशत है।

निगम द्वारा संचालित योजनाएँ.

1. **मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना** [MPPSC DSP_Radio 2020]
2. मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना

उद्यमी विकास संस्थान, मध्य प्रदेश

संस्थान की स्थापना: उद्यमी विकास संस्था की स्थापना 20 मार्च 1980 को मध्य प्रदेश आदिन जाति, अनुसूचित जाति तथा पिछड़ कल्याण विभाग के उपक्रम के रूप में हुई है। संस्थान का पंजीयन फर्म्स एवं सोसायटीज भोपाल द्वारा किया गया है। संस्थान का पंजीयन क्रमांक 8874 है।

संस्थान के मुख्य उद्देश्य

मध्यप्रदेश के आदिवासी, अनुसूचित जाति तथा आर्थिक रूप से पिछड़े हुए व्यक्तियों को उद्योग तथा व्यापार प्रारंभ प्रशिक्षण, आर्थिक तथा तकनीकी सहायता, उत्पादन और इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण, आर्थिक तथा तकनीको सहायता, उत्पादन तथा उसके विपणन में सहयोग करना तथा उनके उद्यमों का मार्गदर्शन, समन्वय तथा नियंत्रण करना। उद्यमी विकास कन्द्रों (उत्पादन सह प्रशिक्षण केन्द्रों) की स्थापना करना, गतिविधियों का संचालन, मार्गदर्शन

तथा नियंत्रण करना। शासन द्वारा स्थापित ऐसे उत्पादन सह प्रशिक्षण केन्द्रों एवं अन्य संस्थाओं का संचालन मार्गदर्शन एवं नियंत्रण करना जिनके लिए शासन संस्थान को अधिकृत करे।

1.15 मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति वर्ग की भूमिका

अंग्रेजों के खिलाफ आदिवासियों की लड़ाई सशस्त्र संघर्ष की गाथा है। मुक्ति के लिए हथियार उठाना सदियों से आदिवासी परम्परा रही है। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ हुए आदोलनों मे भी जनजाति वर्ग ने अपनी इसी परंपरा को अक्षुण बनाए रखा।

- **भील विद्रोह (1818) :** 1818 तक आते आते सम्पूर्ण भारत के साथ साथ सुदूर अंचल भी ब्रिटिश उपनिवेशवाद के शिकार हो गए। मध्यप्रदेश का कोना कोना अंग्रेजों के आधिपत्य में आ गया। मध्यप्रदेश आदिवासी बहुल क्षेत्र है। उत्तर मे विंध्याचल से लेकर दक्षिण में पश्चिम घाट तक भील बाहुल्य क्षेत्र है 1817 मे खानदेश में भीलों का विद्रोह प्रारंभ हुआ। इसी के साथ मध्यप्रदेश में राष्ट्रवाद के विकास का प्रारंभ माना जाता है। सामंत सरदारों के द्वारा भीलों को हर तरह से सताया गया था। इन अत्याचारों से बचने के लिए भीलों ने भागकर पहाड़ियों पर शरण ली। तथा इनमें सामंत सरदारों के खिलाफ विद्रोह की भावना उत्पन्न हो गई। इन असंतुष्त भीलों ने उत्तर मे सतपुड़ा की पहाड़ियों को ओर दक्षिण में सतमाला की पहाड़ियों को अपना अड्डा बनाया। 1818 में खान देश में अंग्रेजों के आते ही भील उनसे भिड़ गए अंग्रेजों ने उनके विद्रोह के दमन के लिए अनेकों कदम उठाए परंतु भील बहादुरों का साहस कम ना कर पाए। भील **राष्ट्रीयता** के संदेश के लिए दो चिन्ह नियत किए गए थे।
  - लाल कमल – सेना के सिपाही बलिदान के प्रतीक के रूप में
  - रोटी - क्रांति में संम्मलित होने के लिए

  1831 – धार में भीलों का विद्रोह

  1846 - मालवा में भीलों का विद्रोह

  1852 में पुनः खानदेश में भीलों ने मोर्चा लगाया।

- **बुंदेला विद्रोह (1842) :** 1818 में जब पेशवा के पद से हट दिया गया तो मध्यप्रदेश का सागर ओर दमोह जिले अंग्रेजों के हाथ में आ गए। इस क्षेत्र के भूमि स्वामी मुख्तः गोंड़, लोधी, बुंदेला राजपूत थे। उत्तरी सागर के चंद्रपुर के जवाहर सिंह बुंदेला ओर नरहुत के मधुकर शाह ने 1842 में अग्रेजी शासन के खिलाफ बिगुल फूँक दिया। इस कार्य में गोंड़ जमीदारों ओर मुखियाओ ने भरपूर सहयोग किया। यह विद्रोह नरसिंहपुर जिले में सबसे अधिक सफल हुआ। यहाँ इसका नेतृत्व मदनपुर का गोंड़ मुखिया राजा दिलहन शाह कर रहा था। नरहुत के मधुकर शाह ओर गनेश जू को बानपुर रियासत में पकड़ लिए गए। उन्हे सागर जेल में फासी दी गई यही पर इनकी समाधि बनी हुई है।

  जबलपुर जिले में यह विद्रोह अप्रैल 1842 में पहुँचा। यहाँ के विद्रोह का नेता हीरपुर तालुके के राजा हिरदेशाह थे। दशहरे के उत्सव के दिन राजा हिरदेशाह और उनके अनेक साथियों पर अंग्रेजों ने हमला कर दिया। परंतु हिरेदशाह बच निकला। **22 दिसंबर 1842** **(तत्कालीन गवर्नर – एलेनबोरो)** [MPPSC ITI Assistant Principal 2023] को वह अपने परिवार के साथ गिरफ्तार कर लिए गए।

क्रांतीवीर खाज्या नाईक

- **भोसले विद्रोह (1818) :** अप्पा साहेब और उनके सहयोगी सुरक्षित रूप से भागकर जब सतपुड़ा की महादेव पहाड़ियों की ओर चले गए। वहाँ पर जनजाति वर्ग ने उनकी बहुत मदद की हुर्राई के राजा चैनशाह ओर अनेकों गोंड़ मुखियाओं ने शक्तिशाली सेना के गठन मे अप्पा साहेब की मदद की। इसके कारण ही गोंड़ जमीदारों को अपनी जमीनो से हाथ भी धोना पड़ा। किन्तु उन्होंने अप्पा साहेब का साथ नहीं छोड़ था।

- **मंडलेश्वर जेल कांड (22 अगस्त 1859) :** 22 अगस्त 1859 की बरसाती रात मे मंडलेश्वर जेल में बंद क्रान्तिकारियो ने विद्रोह कर दिया। तथा जेल पर कब्जा कर लिया और अग्रेज एजेंट कैप्टन हैमस को मार दिया। जेल का पिछला दरवाजा तोड़ कर वे अपने साथ कोश मे रखे 7696 रुपये भी ले आए। इस कांड के पीछे तात्कालिक कारण भीमा नायक की माता जी का अग्रेजों द्वारा दी गई यातनाओ से निधन होना था।

1857 की क्रांति मे जनजाति वर्ग की भूमिका : संपूर्ण भारत में जब 1857 के स्वाधीनता संग्राम को जब अग्रेजों द्वारा कुचल दिया गया था। तब भी 1861 तक निमाड़ के आदिवासी ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध लोहा लेते रहे थ। इससे निपटने के लिए अग्रेजों को गुजरात से 9 वी बंगाल इंफेनट्री बुलानी पड़ी थी। सेंधवा से खानदेश जाते समय इन्होंने ब्रिटिश खजाना लूटा। R.H. KETINGS ने स्वयं भीमा नायक ओर उनके साथियों को समाप्त करने का प्रण लिया। भीलो से उनकी पहली मुठभेड़ धावाबाबड़ी नामक पर्वतीय घाटी में हुई परंतु भील वहा से भाग निकले परंतु सतपुड़ा के पहाड़ों में रामगढ़ दुर्ग के पास पंचवाली नामक स्थान पर 13 फरबरी 1859 को निर्णायक लड़ाई हुई। जिसमे कई भील भी मारे गए। कुछ भील भाइयों को गिरफ्तार कर लिया गया जिन्हे मंडलेश्वर जेल में रखा गया।

- **खाज्या नायक** : खाज्या नायक का जन्म साउगवी के गुमान नायक के घर हुआ। 1833 में गुमान नायक की मृत्यु के बाद खाज्या नायक को सेंधवा घाट का नायक बनाया गया। खाज्या नायक ने प्रारंभ मे विद्रोही भीलो के खिलाफ कैप्टन मारिस को सहयोग दिया। किन्तु कुछ समय बाद सेधावा घाट की चोकीदारी से उन्हे निलंबित कर दिया गया। एक हत्या के जुर्म में उन्हे 10 वर्ष की सजा भी दी गया परंतु सरकार द्वारा 1856 में उन्हें छोड़ कर वापस नौकरी पर रख लिया किन्तु अब ख्वाजा नायक का मन नौकरी मे नहीं लगा ओर वह विद्रोहात्मक कार्य करने लगे। और उनके दल में 800 लोग हो गए। 17 अक्टूबर 1857 को महादेव नायक, ओचित्या नायक, देवलिया नायक अपने 200 साथियों के साथ दल में शामिल हो गए। तथा उन्होंने सिरपुर धावा बावली को लूटा। रोहितदीन नामक युवक ने गद्दारी करके नदी में नहाते वक्त गोली मारकर इनकी हत्या कर दी और माँ भारती का यह सपूत हमेशा के लिए उनकी गोद में सो गया। नायक बंधु गोरिल्ला युद्ध मे महारथ हासिल किए हुए थे।

- **भीमा नायक :** भीम नायक का जन्म बड़वानी जिले पंचवाली के जंगलों के बीच में पंचमोहली नामक भीलों की एक छोटी सी बस्ती में हुआ था। भीम नायक बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित था। वह अपने दल के साथ खाज्या नायक के दल में मिल गया। ख्वाजा नायक का उस समय भीलओ पर गहरा प्रभाव था। भीम नायक मई 1858 में अधिक दवाब के कारण मेजर कीटिंग के सामने हाजिर हो गया। तथा उन्हे मंडलेश्वर जेल में बंद रखा गया। उन्हे मौवा सिया नायक को लाकर हाजिर करने की शर्त पर छोड़ दिया। किन्तु भीमा नायक ने पुनः अपनी क्रांतिकारी गतिविधिया प्रारंभ कर दी और तात्या टोपे से जा मिला। 2 अप्रैल 1867 को बालकुआ से 3 मील दूर पकड़ लिया गया जब वह सो रहे था। उनके ऊपर मुकद्दाम चला कर उन्हे अण्डमान जेल भेज दिया। इन्हे निमाड़ के **"रॉबिन हुड"** के रूप मे जाना जाता है नायक बंधु गोरिल्ला युद्ध में महारथ हासिल किए हुए थे।

- **टंट्या भील :** भारतीय रॉबिन हुड[MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] के नाम से मशहूर टंट्या[MPPSC SSE 2020] भील का जन्म सन् 1840 में तत्कालीन मध्य प्रांत के पूर्वी निमाड़ (खंडवा ज़िले) [MP BA. – B.Ed. 2017] की पंधाना तहसील के बड़दा अहीर गांव में भाऊसिंह भील के घर पर हुआ था। कहीं-कहीं पर सन् 1842 में इनके जन्म का उल्लेख भी मिलता है टंट्या भील का वास्तविक नाम तॉतिया था। अग्रेजों द्वारा तॉतिया को सही से ना बोल पाने के कारण उन्हे टंट्या कहते थे। लोगों मे उनके प्रति प्रेम ओर भील जनजाति में मामा को अत्यंत सम्मान सूचक मानते है इसलिए इन्हे प्रेम से टंट्या मामा के नाम से भी बुलाया जाता था। उन्हें सभी आयु वर्ग के लोगों द्वारा आदरपूर्वक 'मामा' कहा जाता था। टंट्या मामा के दो अनुयायी थे। जिनका नाम दीप्या, बिजनिया था। जो 1880 मे अग्रेजों के द्वारा पकड़ लिए गए तथा बिजनिया को फासी पर चड़ा दिया गया। टंट्या भील जब अपनी बहन के घर राखी बधवाने गए। वहाँ पर कुछ विश्वस्त लोगों के विश्वासघात के कारण अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिये गए। उन्हें इंदौर में ब्रिटिश रेजीडेंसी क्षेत्र में सेंट्रल इंडिया एजेंसी जेल में रखा गया था। बाद में जबलपुर जेल में रखा गया। सत्र न्यायालय जबलपुर ने उन्हें 19 अक्टूबर, 1889 को फाँसी की सजा सुनाई और फिर 4 दिसंबर, 1889 को फाँसी दी गई। फाँसी के पश्चात इंदौर के पास खंडवा रेल मार्ग पर पातालपानी रेलवे स्टेशन के नजदीक आसपास के गांवों में विद्रोह भड़कने के

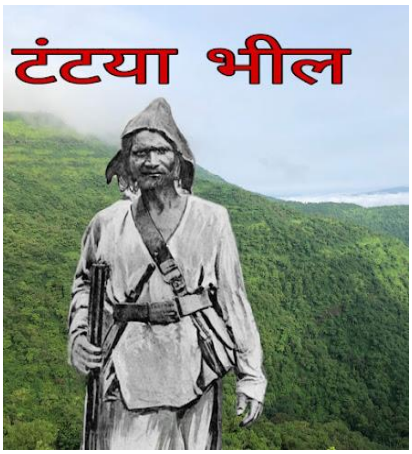

डर से चुपचाप रात में उनके शव को उस स्थान, जहाँ पर उनके लकड़ी के पुतले रखे थे, फेंककर अर्थात् रखकर चले गए। इस स्थान अर्थात पातालपानी को आज 'टंट्या भील की समाधि स्थल' के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में मध्य प्रदेश सरकार ने इनकी समाधि स्थल पर टाट्या मामा का मंदिर बना दिया गया है। टंट्या मामा गोरिल्ला युद्ध मे महारथ हासिल किए हुए थे,इन्होंने गोरिल्ला युद्ध कला का ज्ञान **तात्या टोपे** [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021] से प्राप्त किया था।

- **राजा शंकर शाह और कुँवर रघुनाथ शाह**[MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021] **:** गोंडवाना राजवंश के अमर हुतात्मा राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह ने वनवासी क्रांति का सूत्रपात कर अंग्रेजी शासन को हिला दिया था। शंकर शाह का जन्म प्रतापी गोंड राजघराने में सन 1789 को राजा सुमेर शाह के यहाँ हुआ था। उस समय राजा सुमेर सिंह को मराठों ने बंदी बना लिया था और उन्हें सागर के किले में कैद कर रखा था। एक लंबे समय तक राजा के आने का इंतजार करने के बाद रानी अपने बेटे शंकर शाह के साथ जबलपुर राजधानी में गढ़ा पुरवा में आकर रहने लगी थीं। 1857 की क्रांति के समय शंकर शाह कंपनी सरकार के पेंशन भोगी थे। ओर पुरवा में अपने पुत्र रघुनाथ शाह के साथ रहते थे। पिता पुत्र यक अच्छे कवि थे। वे अपनी कविताओ के माध्यम से लोगों में राष्ट्रवाद की भावनाएं जाग्रत करते रहते थे। उनकी कविताओ में वीर रस की प्रधानता थी। उनके अधीन उस समय मात्र 3 गाँव के जागीर थी। उन्होंने योजना बनाई की मुहर्रम के पहले दिन छावनी पर आक्रमण किया जाए परंतु क्लार्क ने राज्य की जासूसी के लिए गिरधारी लाल दास नामक व्यक्ति को नियुक्त कर दिया था। ओर क्लार्क को दो दिन पहले ही सूचना मिल गई कि छावनी पर हमला होने वाला है। फलतः क्लार्क ने 14 सितम्बर को किले पर हमला कर दिया ओर उन्हे गिरफ्तार कर लिया।18 सितम्बर को सुबह दोनों को अलग अलग तोपों के मुह से बांध कर उड़ा दिया गया। अंतिम समय में व पिता पुत्र कविता कहते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। और यशस्वी गोंड़ वंश का सूर्य सदैव क लिए अस्त हो गया।

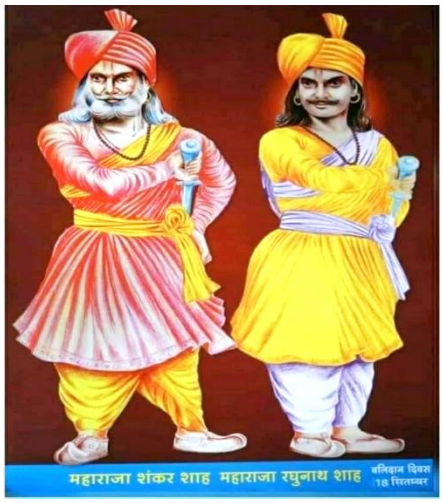

- **वीर बिरजू नायक :** मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले की राजपुर तहसील के नगर पलसूद के निकट ग्राम मटली एवं सावरदा के बीच स्थित एक पहाड़ी पर स्थित क्षेत्र की प्रसिद्ध "बांडी हवेली" है। जो वीर बिरजू नायक का जन्म स्थान है, यह वर्तमान मे भी मौजूद है हालांकि वह अब खंडहर में तब्दील हो चुकी है, जिसको संरक्षित करने की आवश्यकता है। वीर बिरजू नायक इसी बांडी हवेली से अपने साथियों के साथ अंग्रेजो के विरुद्ध अपनी योजनाए बनाकर उन्हें अंजाम देते थे। स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे के पश्चिम निमाड़ के आगमन पर राजपुर क्षेत्र के गुप्त रास्तो से नर्मदा नदी पार करवा कर मंजिल तक पहुचाने में भीमा नायक, खाज्या नायक एवं बिरजू नायक तथा साथियो का अहम योगदान था। इसी योगदान के बदले उन्हें "वीर की उपाधि" दी गई थी। सिंधी घाटी क्षेत्र में वीर के नाम से चर्चित थे, आज भी उनके नाम के आगे लोग वीर लिखना नही भूलते है। निवाली से (सिंधी घाटी) राजपुर तक उनका गढ़ रहा है। 1857 की क्रांति के दौर में अंग्रेजो के खिलाफ आदिवासीयो के अम्बापानी विद्रोह,सेंधवा विद्रोह जैसे कई विद्रोह में अहम योगदान रहा है। ग्राम मटली में स्थित झरने (कुंडी) पर नहाने जाया करते थे, उन्हें धोखे के तहत रणनीति बनाकर मारने के लिए अंग्रेजों ने करीबी साथी का सहारा लिया, क्योंकि बिरजू नायक को मारना आसान नहीं था। अंग्रेजों ने उन्हें मारने के लिए कई प्रयास किए पर असफल रहे। वे युद्ध कला में निपुण थे, बिरजू नायक प्रतिदिन की तरह एक बार झरने (कुण्डी) पर नहाने पहुचे थे। तभी अंग्रेजो द्वारा भेजे गए किसी परिचित ने उनका सर धड़ से अलग कर दिया। ऐसा बताया जाता है कि सर धड़ से अलग होने के बावजूद वे उपला स्थित समाधि स्थल तक दौड़ते हुए आ गए थे। वही पलसूद के नजदीक ग्राम उपला में इनका समाधि स्थल है, जहा वर्तमान में भी क्षेत्र के समाजजन/सगाजन पहुचकर वीर योद्धा को श्रद्धांजलि सुमन अर्पित करते है, वही कुछ संगठनों द्वारा प्रतिवर्ष 2 मई को वीर बिरजू नायक का शहीदी दिवस भी मनाया जाता है।

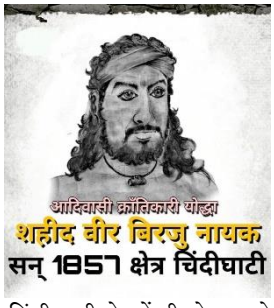

► **बादल भोई नामक :** छिंदवाड़ा जिले के इमरत भोई बादल भोई एक क्रांतिकारी नेता थे। इनका जन्म 1845 में परसिया तहसील के डूँगरिया तीतरा गाँव मे एक गोंड परिवार हुआ था। उनकी माता का नाम विमला परानी और पिता का नाम कल्याण परानी था। बादल भोई का गोत्र परानी है। गोंड परंपराओं के मुताबिक, यह गोत्र सात देवों में एक माना जाता है। भोई उनका जातिगत उपनाम नहीं था बल्कि सम्मानजनक उपाधि थी जिसका मतलब सम्पन्न व्यक्ति होता है। बादल भोई की औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी। लेकिन इसके बावजूद वे एक कुशल नेतृत्वकर्ता थे। उन दिनों मध्य प्रदेश का छिंदवाड़ा जिला बेशकीमती लकड़ियों और कोयले के लिए प्रसिद्ध था। अंग्रेजों ने इस प्राकृतिक सम्पदा के दोहन के लिए स्थानीय लोगों को मजदूर के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। वे लोगों पर तरह-तरह के जुल्म ढाते थे। यह देख बादल भोई ने अंग्रेजों के खिलाफ मुहिम छेड़ दी। उन्होंने 1923 में गांधी जी के साथ अहसायोग आदोंलन में भाग लिया व जेल यात्रा की। 21 अगस्त 1930 को उन्होंने छिंदवाड़ा से लगभग 45 किलोमीटर दूर रामकोना नामक स्थान पर अंग्रेजों के वनाधिकार कानून का उल्लंघन किया और जबरन लोगों के साथ जंगल में घुसकर वहां के वनोत्पाद को उठाकर ले आए। लेकिन इसी बीच अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर किया। बादल भोई को उनके अन्य साथियों से अलग चांदा सेंट्रल जेल, चंद्रपुर, महाराष्ट्र में भेज दिया गया। वहां अंग्रेजों ने उनके ऊपर बहुत जुल्म किये। उनके जेल में रहने के बावजूद अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जो आंदोलन उन्होंने शुरू किया था, वह बढ़ता ही जा रहा था। साथ ही अंग्रेजी सरकार की परेशानियां भी बढ़ती जा रही थीं। 1940 में अग्रेजों द्वारा उन्हे जहर देकर जेल में मार दिया गया इनकी स्मृति को चिरस्थाई बनाये रखने के लिए 8 सितंबर 1997 को छिंदवाड़ा मे जनजाति संग्रहालय की स्थापना की गई है।

► **जंगल सत्याग्रह** [MPPSC ITI Assistant Principal 2023] **:** अप्रैल 1930 को वीरांगना दुर्गावाती के समाधि स्थल पर हजारों की संख्या में आदिवासी जुट गए थे। इन्होंने जंगल सत्याग्रह के माध्यम से नमक सत्याग्रह में भाग लिया। जंगल सत्याग्रह दो जगह प्रमुखता से हुआ।

1. टुरिया जंगल सत्याग्रह जिला सिवनी
2. घोडा डोंगरी जंगल सत्याग्रह जिला बैतूल

टुरिया जंगल सत्याग्रह जिला सिवनी [MPPSC ITI Assistant Principal 2023]

सिवनी के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दुर्गाशंकर मेहता के नेतृत्व में जंगल सत्याग्रह चलाया। सिवनी जिले में जंगल सत्याग्रह के अंतर्गत चंदन के बग़ीचों की घास काटी गई ओर अपना विरोध प्रकट किया गया। यहाँ के आदिवासी आदोंलन का नेता मूका था। 9 October 1930 को पुलिस दरोगा और रेंजर ने सत्याग्रहियों का समर्थन करने आए जनसमुदाय के साथ बहुत अभद्र व्यवहार किया। जिससे जनता उत्तेजित हो उठी। सिवनी के डिप्टी कमिश्नर के इस हुक्म पर कि "टीच देम ए लेसन" पुलिस ने गोली चला दी। घटनास्थल पर ही तीन महिलाएँ- गुड्डों दाई, रैना वाई, बेमा बाई और एक पुरुष विरजू गोंडू शहीद हो गए, चारों शहीद आदिवासी थे। इस घटना से मध्यप्रदेश के गिरिजन समुदाय में भी स्वतंत्रता को ज्योति प्रज्वलित होने का पुष्ट प्रमाण मिलता है। इन शहीदों के शव भी अंतिम संस्कार के लिए इनके परिवार वालों को नहीं दिए गए।

घोडा डोंगरी जंगल सत्याग्रह जिला बैतूल

आदिवासी जन आदोंलन के इतिहास में घोडा डोंगरी व बैतूल का विशिष्ट महत्व है। 9 October 1930 घोडा डोंगरी में उपद्रव असाधाराण गंभीर (हिंसक हो उठा) हो उठा जहाँ रेल्वे स्टेशन और लकड़ी के एक बड़े टाल को आग लगा दी गई थी। जंगल सत्याग्रह के समय

शाहपुर बंजारी ढाल का बंजारी सिंह कोरकू व गजन सिंह कोरकू इसका नेता था। पुलिस की गोली से कोमा गोंड़ शहीद हो गया। जम्बाड़ा में गिरफ्तार आदिवासी को छुड़ाने के लिए भीड़ एकत्रित हुई। पुलिस की गोली से रामू ओर मकडू गोंड़ शहीद हो गए।

- सविनय अवज्ञा आंदोलन ,व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के अंतर्गत मध्यप्रदेश के आदिवासी भाइयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजनवाटी 1939 को बदराटोल डोंगरगड में रामधील गोंड शहीद हुए।
- 9 अगस्त 1942 को घोडा डोंगरी ओर उसके आस - पास के गाँव आदिवासी आंदोलन से प्रभावित हुए। पुलिस अत्याचार मे उत्तरों उत्तर वृद्धि हो रही थी। गोंड़ सरदार विष्णु सिंह ने वनांचल के आदिवासी जनों को संगठित किया 19 अगस्त 1942 को 5 हजार आदिवासी घोडा डोंगरी स्टेशन के पास इकठ्ठे हुए और रेल की पटरिया उखाड़ दी गई। रानीपुर थाना जला दिया गया। घोडा डोगरी डाकघर भी जला दिया गया। बोंगदो पर कब्जा होने से दिल्ली मद्रास रेलमार्ग यातायात अवरुद्ध हो गया।
- 22 अगस्त 1942 को पाँच लाख से अधिक बाँसों के रखे हुए गठ्ठे में आग लगा दी गई **हीकेरशन** फॉरेस्ट अधिकारी घटनास्थल पर आया तथा आदिवासीयो पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इस नरसंहार मे **विरसा गोंड** शहीद हो गए। **जिर्रा गोंड़** को गिरफ्तार कर लिया जिनकी जेल में मृत्यु हो गई। इस घटना मे कई आदिवासी भाई गिरफ्तार हुए। जिन्हे बैतूल और नागपुर जेल भेज गया। गोंड और कोरकू भाइयों का यह संघर्ष आजादी की लड़ाई की एक मिसाल बन गया।
- बैतूल के आमला के पास नाहिया गाँव है। स्कूल के सरकारी रिकार्ड को आंदोलनकारियों ने आग के हवाले कर दिया। इस घटना मे पिता केला ओर पुत्र उदय अंग्रेजों की गोली सी शहीद हो गए।

Exercise no 15

1. टंट्या भील ने किस प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से आक्रमण की गोरेल्ला युद्ध शैली सीखी थी। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
   (a) तात्या टोपे
   (b) नाना साहेब पेशवा
   (c) कुंवर सिंह
   (d) शंकर शाह
2. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पिता पुत्र की सही जोड़ी चुनिए। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
   (a) शंकर शाह – भभूत सिंह
   (b) शंकर शाह – रघुनाथ शाह
   (c) रघुनाथ शाह – माले राव
   (d) नाना साहिब – शंकर शाह
3. अंग्रेजों के विरुद्ध भीलों द्वारा क्रांति प्रारंभ की गई थी [MPPSC Pre 2010]
   (a) मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र में
   (b) मध्यप्रदेश एवं बिहार में
   (c) बिहार एवं बंगाल में
   (d) बंगाल एवं महाराष्ट्र में
4. निम्न लिखित में से कौन भारतीय आदिवासियों के रॉबिनहुड़ के नाम से प्रसिद्ध है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) दलपत शाह
   (b) विरसा मुंडा
   (c) टंट्या भील
   (d) रघुनाथ शाह
5. निम्न में से कौन सा कथन म.प्र. में स्वतन्त्रता आन्दोलन के सम्बन्ध में असत्य है। [MPPSC SSE 2021]
   (a) खजा एवं भीमा नायक भील नेता थे, जिन्होने ब्रिटिश सत्ता के विरद्व सघर्ष किया।
   (b) स्वतन्त्रता सेनानी शंकरशाह गढ़ा मण्डला राज्य के थे।
   (c) रामगढ़ के झूजार सिंह के पुत्र देवनाथ सिंह ने ब्रिटिश सत्ता के विरद्व सघर्ष किया था।
   (d) सिपाही बहादुर सरकार की स्थापना इन्दौर में की गई थी।

1. (a) 2. (b) 3. (a) 4. (c) 5. (d)

1.16 जनजाति कला एवं उनसे संबधित कलाकार

संत रविदास मध्य प्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड

म.प्र. के प्रामाणिक हथकरघा एवं हस्तशिल्प उत्पाद और उनके स्थायी संरक्षण के लिए **वर्ष 1981** से कार्यरत है । मध्य प्रदेश असंख्य सदियों से संस्कृतियों, विरासत और परंपराओं का एक वास्तविक मिश्रण और प्रेरित रहस्यमय शिल्प कौशल का एक विशाल भंडार रहा है। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 1981 में स्थापित संत रविदास मध्य प्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम, राज्य के पारंपरिक और गैर-पारंपरिक शिल्प के संरक्षण और प्रचार के लिए समर्पित है। यह संस्था राज्य के कारीगरों और बुनकरों को स्थायी रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए हस्तशिल्प और हथकरघा के निर्माण, विपणन और बिक्री में लगी हुई है। आधुनिक रुचियों के अनुरूप बने रहने के लिए, निगम कौशल उन्नयन, प्रशिक्षण और उत्पाद डिजाइनिंग ज्ञान भी प्रदान करता है।

गोंड आदिवासी चित्रकला

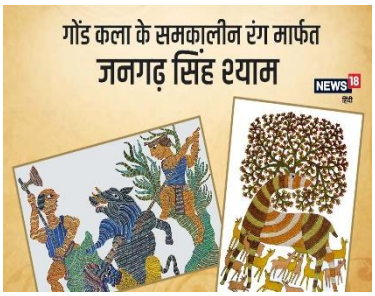

गोंड जनजाति भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक है और उनकी चित्रकला की अनूठी शैली को गोंड पेंटिंग के नाम से जाना जाता है। एक ऐसी कला जो एक प्रेरित आत्मा के साथ शुरू हुई जिसने अपनी ज्वलंत कल्पना और आसपास की दुनिया की अनूठी धारणा के साथ **अपने गांव की दीवारों को चित्रित** किया।

इन चित्रों की विशिष्ट विशेषताएँ मुक्तहस्त शैली और द्वि-आयामी दृश्य हैं। **मुक्तहस्त चित्रकला शैली** हर पेंटिंग को अपनी तरह की खास बनाती है और इसमें तीसरा आयाम कलाकार के मन की सरलता को दर्शाता है। गोंड अपनी प्राकृतिक और पौराणिक दुनिया का अभूतपूर्व चित्रण करते रहे हैं। उनका काम विवरण, रंग, रहस्य और हास्य से समृद्ध है। यह महज़ सजावट नहीं है, बल्कि गोंड कलाकारों की अपनी धार्मिक मान्यताओं और भावनाओं की अभिव्यक्ति भी है। गोंड पेंटिंग के विभिन्न विषयों में स्थानीय त्योहार, पशु, पक्षी, देवता, दैनिक जीवन और यहां तक कि आधुनिक नवाचार जैसे हवाई जहाज, कार आदि शामिल हैं।

पिथौरा कला

झाबुआ जिले के भाबरा ग्राम को पिथौरा कला का उद्गम स्थल माना जाता है। इस कला में पारंपरिक रंगों का प्रयोग किया जाता था। पहले इसमे घरों की दीवारों पर चित्रकारी की जाती थी, परंतु वर्तमान में यह कागजों, केनवास, कपड़ों आदि पर की जाने लगी है। पिथौरा चित्रकला का इन जनजातीय लोगों के जीवन में विशेष महत्व है आमतौर पर इनमे **घोड़ों की चित्रकारी** की जाती है। उनका मानना है कि इस चित्रकला को घरों की दीवारों पर चित्रित करने से घर में शांति, खुशहाली और सौहार्द का विकास होता है। पिथौरा चित्रकला का चित्रण भील जाति [MPPSC SFM 2021] के लोग ही सबसे अधिक करते हैं और अत्यंत ही साधारण स्तर के लेकिन धार्मिक लोग होते हैं। इस चित्रकला के चित्रण में ये लोग बहुत धन लगाते हैं और जो अपने घर में अधिकाधिक पिथौरा चित्र रखते हैं। साथ ही इसे पिथौरा चित्रकार को लिखिंद्रा कहा जाता है और जो इन चित्रकलाओं का रिकॉर्ड रखते हैं उन्हें **झोखरा** कहा जाता है। सर्वोच्च पद पर आसीन जो पुजारी धार्मिक अनुष्ठान करवाता है। उसे बड़वा पुजारी कहते हैं। इस चित्र में पीले, नारंगी, हरे, नीले, सिंदूरी, लाल, आसमानी, काले और चांदनी रंगों का प्रयोग किया जाता है। ब्रश बनाने के लिए बेंत या टहनी के किनारों को कूटा जाता है परंतु आज इनका स्थान बाजार में उपलब्ध ब्रुशों ने ले लिया है।

पाषाण शिल्प

पाषाण शिल्प एक हस्तनिर्मित प्रक्रिया है जहां पत्थर को नियंत्रित तरीके से हटाकर खुरदरे प्राकृतिक पत्थर के टुकड़ों को आकार दिया जाता है। मूर्तिकार मिट्टी या मोम में एक मॉडल बनाकर, कागज पर मूर्ति के रूप को चित्रित करके या पत्थर पर मूर्ति की सामान्य रूपरेखा बनाकर शुरुआत करता है। तराशने के लिए तैयार होने पर, कलाकार आमतौर पर अवांछित पत्थर के बड़े हिस्से को तोड़कर शुरुआत करता है। एक बार जब मूर्ति का सामान्य आकार निर्धारित हो जाता है, तो मूर्तिकार विवरण जोड़ने के लिए आकृति को परिष्कृत करने के लिए अन्य उन्नत उपकरणों का उपयोग करता है। नक्काशी प्रक्रिया का अंतिम चरण सैंडपेपर का उपयोग करके परिष्करण और पॉलिश करना है।

पत्थर शिल्प कारीगरों द्वारा विभिन्न प्रकार की मूर्तियां बनाई जाती हैं, जो लोकप्रिय हैं शालभंजिका, हिंदू देवता, महिला आकृतियाँ, और विरासत भवन मॉडल।

बेल धातु

बेल मेटल या 'ढोकरा' [MPPSC SSE 2022] हड़प्पा और मोहनजोदड़ो काल के प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही धातु ढलाई की सबसे प्रारंभिक ज्ञात विधियों में से एक है।

यह प्रक्रिया उत्पाद को मोम में तराशने से शुरू होती है। बड़े उत्पादों के लिए, आकृति को पहले मिट्टी में तैयार किया जाता है और फिर मोम की एक पतली परत से ढक दिया जाता है। फिर इसे महीन मिट्टी के पेस्ट की एक परत के साथ लेपित किया जाता है और फिर घास के साथ गाढ़ी मिट्टी के पेस्ट की लगातार दो परतों के साथ मिलाया जाता है। एक बार सूख जाने पर, मिट्टी से ढके टुकड़े को गड्ढे वाले ओवन में पकाया जाता है।

पीतल और तांबा जैसी धातुओं का उपयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है। पिघली हुई धातु को मिट्टी के सांचे में एक छेद के माध्यम से डाला जाता है। एक बार ठंडा होने पर मेटल कास्ट उत्पाद को देहाती लुक देने के लिए निकाल लिया जाता है। प्रत्येक उत्पाद एक विशुद्ध रूप से हस्तनिर्मित कला-कृति है जिसे कई दिनों में सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है।

जनजातीय समूहों ने पारंपरिक रूप से घंटियाँ, देवता की आकृतियाँ, चिमनी और धार्मिक समारोहों के लिए कई छोटे-छोटे प्रसाद और अपने स्वयं के उपयोग के लिए पारंपरिक जनजातीय आभूषण भी बनाए हैं। समय के साथ और बेल मेटल कास्टिंग के शिल्प को पुनर्जीवित करने के लिए एमपीएचएसवीएन की पहल के साथ, यह शिल्प उत्पादों की एक विशाल श्रृंखला प्रदर्शित करता है, जो ग्राहक की मांगों और सौंदर्य संबंधी रुचियों के अनुसार अनुकूलन के साथ भी उपलब्ध है।

पुंजा दरी [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017]

यह सुनिश्चित करने के लिए कि धागे बुनाई के मैट्रिक्स में मजबूती से स्थित हैं, कारीगर जानबूझकर उन्हें पुंजा नामक कंघी जैसे उपकरण का उपयोग करके दबाते हैं, जो गांठों की नई पंक्तियों को पेश करते हुए बुने हुए कपड़े को मजबूत बनाता है। पट्टी एक अन्य उपकरण है जिसका उपयोग कालीन को पीटने के लिए किया जाता है ताकि सभी गांठें और धागे व्यवस्थित हो जाएं। अन्य स्थानीय रूप से आविष्कृत उपकरण जैसे धुरी का उपयोग बुनाई के बाद अतिरिक्त धागे को काटने के लिए किया जाता है। हालाँकि, अब सभी धागों को एक समान आकार में काटकर ऐसा करने की यांत्रिक सुविधा उपलब्ध है।

सीधी पारंपरिक पुंजा दरी और कालीन बुनकरों का घर है। बहुत सुंदर डिज़ाइन, जीवंत रंग, समृद्ध वस्त्र और 50 वर्षों से अधिक के उच्च स्थायित्व के साथ, सीधी की पुंजा दरी और कालीन गुणवत्ता और सुंदरता की पहचान हैं। सीधी के सिहावल ब्लॉक में समूहों में लगभग 40 पुंजा दारी और कालीन बुनाई इकाइयाँ काम कर रही हैं। दरी और कालीनों ने अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर हस्तशिल्प मेलों के माध्यम से ख्याति प्राप्त की है। इसके प्रचार-प्रसार के लिए दरी को "एक जिला एक उत्पाद" योजना के तहत भी चुना गया है

दाबू प्रिंट

दाबू प्रिंट एक प्राचीन मिट्टी प्रतिरोधी हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग तकनीक है, जिसे इसका नाम प्रिंटर समुदाय के स्थानीय देवता 'नंददेव' से मिला है। यह शिल्प विशेष रूप से झाबुआ क्षेत्र की जनजातियों को खूबसूरती से मुद्रित 'ओढ़नी', 'घाघरा' और पगड़ी से ढकने के लिए विकसित हुआ। नंदना के केवल चार रूपांकन हैं- **'जालम बूटा', 'अम्बा बूटा', 'चंप काली' और 'मिर्ची'** इस शिल्प के लिए, शिल्पकार लकड़ी के ब्लॉकों का उपयोग करके कपड़े पर छाप बनाने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किए गए मिट्टी के मिश्रण का उपयोग करते हैं। रूपांकन और रंग कारीगरों के प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान का प्रतिनिधित्व करते हैं और स्थानीय कारीगरों को ज्ञात फूलों और अन्य वनस्पतियों से प्राप्त होते हैं।

बाटिक प्रिंट

बाटिक एक प्राचीन कला है, जिसमें कपड़ों पर दृश्य कला बनाने के लिए मोम और रंगों का उपयोग किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि बाटिक शब्द 'अंबाटिक' शब्द से लिया गया है, जिसका अनुवाद करने पर इसका शाब्दिक अर्थ छोटे बिंदुओं वाले कपड़े का एक टुकड़ा या मोम से लिखना या टूटी हुई रेखाएं बनाना है। ऐसा माना जाता है कि बाटिक चीन, जापान, भारत, इंडोनेशिया, थाईलैंड, यूरोप और अफ्रीका में मौजूद था। मध्य प्रदेश में पवित्र शिप्रा नदी के तट पर बाटिक शिल्प का व्यापक रूप से अभ्यास किया जाता है।

कारीगर मोम से भरे कपड़े पर प्रतिरोध के रूप में पेन जैसे उपकरण का उपयोग करके बिंदु और रेखाएं रखकर और फिर कपड़े को जीवंत रंगों में रंगकर फ्री-हैंड डिज़ाइन बनाते हैं। कपड़े की सजावट की इस तकनीक को भारत में मोम लगाने के लिए नारियल के हेयर पेन का उपयोग करके अपनाया गया है और त्वरित उत्पादन के लिए लकड़ी/धातु ब्लॉकों का उपयोग भी किया जाता है। रंगाई करने पर, लगाया गया मोम कपड़े की सतह पर फट जाता है, जिससे रंग अंदर चले जाते हैं। अंततः गर्म पानी में उबालकर मोम को कपड़े से हटा दिया जाता है।

नंदना फैब्रिक

नंदना मध्य प्रदेश का एक मिट्टी प्रतिरोधी ब्लॉक-प्रिंटिंग शिल्प है और अपने मूल रूप में प्रचलित बहुत कम शिल्पों में से एक है। **नंदना ब्लॉक प्रिंट** का प्रचलन **नीमच जिले के तारापुर गांव** में होता है। इस प्रकार मुद्रित कपड़े को स्थानीय भील जनजातियों की महिलाएं अपनी पारंपरिक पोशाक के रूप में पहनती हैं। लेकिन जो बात नंदना प्रिंट्स को अन्य मुद्रित कपड़ों से अलग करती है, वह है उनका अक्षुण्ण देहाती लुक और प्राचीन रूपांकन, जो उनके समकालीनों द्वारा समान रूप से प्रतिष्ठित हैं।

नंदना हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग प्रक्रिया में कपड़े को पहले बेगार (फिटकरी) से मुद्रित किया जाता है और फिर लाल डिज़ाइन पैटर्न प्राप्त करने के लिए एलिज़ारिन से रंगा जाता है। परंपरागत रूप से राल पेस्ट का उपयोग बेहतर प्रतिरोध के रूप में किया जाता है ताकि कपड़े को गहरे नीले होने तक कम से कम 5-6 बार नील के टैंक में डुबोया जा सके। नंदना की छपाई में 4 रूपांकनों का उपयोग किया जाता है, अर्थात् चंपाकली, अंबा (आम)। मिर्च और जालम बूटा (क्रीपर वेब) और यह प्रमुख रूप से इंडिगो के आधार पर काम किया जाता है। तो, अगर आप मृगनयनी जाएं तो अपने लिए यह खूबसूरत कला खरीदना न भूलें।

बाग प्रिंट

बाग का नाम स्थानीय **नदी 'बाघिनी'** से लिया गया है। बाग के ब्लॉक प्रिंटरों ने अपनी मूल तकनीकों को बरकरार रखते हुए इन प्रिंटों को विकसित करने के लिए नदी और उसके आसपास से प्रेरणा ली।

बाग मुद्रण एक अत्यंत कठिन प्रक्रिया है; कपड़े का एक टुकड़ा अंततः उपयोग के लिए तैयार होने से पहले 25-30 दिनों तक विभिन्न परिवर्तनों से गुजरता है। सबसे पहले, कपड़े को कच्चे समुद्री नमक, गैर-परिष्कृत अरंडी के तेल, बकरी के गोबर में भिगोकर और लगातार तीन बार सुखाकर छपाई के लिए तैयार किया जाता है। अंतिम रूप से सूखने के बाद इसे हरदा पाउडर के घोल में डुबोया जाता है। छपाई के लिए लाल रंग फिटकरी (फिटकरी) के साथ मिश्रित इमली के बीजों का उपयोग करके बनाया जाता है। काला रंग, लोहे के बुरादे और गुड़ का उपयोग करके तैयार किया जाता है जिसे 15-20 दिनों के लिए छोड़ दिया जाता है। छपाई अड्डे (टेबल) पर फैले कपड़े पर नक्काशीदार लकड़ी के ब्लॉकों से की जाती है। प्रत्येक ब्लॉक का एक नाम है

जैसे चमेली (चमेली), मैथिर (मशरूम), लहरिया (लहरें), केरी (आम), और जुरवरिया (छोटे बिंदु)। कपड़े को 15 दिनों तक सुखाया जाता है, फिर बहती नदी के पानी में धोया जाता है और अंत में तांबे के बर्तन में धावड़ी के फूल और अलीज़ारिन (आल के पेड़ की जड़) मिश्रित पानी में उबाला जाता है।

भीली गुड़िया

आदिवासी गुड़िया मध्यप्रदेश **के झाबुआ जिले के भील और भिलाला** जनजातियों द्वारा बनाई जाती है। यह उनकी विरासत भी है। गुड़िया बनाने की कला आदिवासियों की आजीविका में भी योगदान करती है। आदिवासी इन गुड़ियों को कई रंगों में से सजाते हैं। इन्हें अलग-अलग तरहों की पोशाकों से तैयार किया जाता है। जैसे इन्हें आदिवासी शादी की पोशाक, पारंपरिक कपड़े और चांदी के आभूषणों पहनाए जाते है। इसके साथ ही गुड़ियों की सजावट के लिए उनके साथ-साथ उपयोगी सामान जैसे बांस की टोकरियां और मिट्टी के बरतन भी इनके साथ बनाए जाते है।

अक्सर लोग इन गुड़ियों को उपहार के लिए खरीदते हैं। हालहि में इसे जीआई टैग भी प्राप्त हुआ है। आदिवासी गुड़िया (भीली गुड़िया) के लिए वर्ष 2023 का पदमश्री रमेश परमार एवं शांति परमार को दिया गया।

लोहा

मध्य प्रदेश में मेटलवर्क का अस्तित्व इसी से है राज्य का आदिवासी समुदाय. विभिन्न जनजातियों के पास है अपने स्वयं के अर्थ को दर्शाने वाले विविध उत्पाद बनाए परंपराएँ, लेकिन गोंड और मारिया इसके लिए सक्षम नहीं हैं। उनके प्रागैतिहासिक रूप अत्यधिक आकर्षित करते हैं विदेश से आए अनेक आगंतुकों की सौंदर्य संबंधी संवेदनाएँ। अभी भी बनाई गई कुछ सामान्य वस्तुओं में शामिल हैं- तेल लैंप, उपकरण, मूर्तियाँ, और जानवरों की आकृतियाँ। अभी इसे सुंदर शिल्प कई भारतीय घरों को सुशोभित करता है। इन उत्पाद त्योहार के उपहार के रूप में बेहद लोकप्रिय हैं।

► **जनजाति कलाकर**

- **जनगड सिंह श्याम** [MPPSC SSE 2022]

  जनगड सिंह श्याम का जन्म **मंडला पाटनगढ (प्रतापगड म.प्र.)** मे हुआ था। जो अपने चित्रकारी शिल्पकला भित्तीचित्र के लिये प्रसिद्ध गोंड कलाकार थे उन्हे भारतभवन (भोपाल सग्रंहालय) मे जगदिश स्वामिनाथन ने प्रेरित किया उन्हे चित्रकार के रूप मे प्रोत्साहित किया उन्होने गोंड पेंटिग चित्रकारी को नयी ऊंचाई पर पहुचाया परंतु गोंड चित्रकला पारंपरिक चित्रकला से भिन्न है पारंपरिक चित्रकला का अर्थ है ऐसी चित्रकला जो पीढ़ी दर पीढ़ी बनाई जा रही है। वह किसी एक व्यक्ति द्वारा या संस्था द्वारा किसी विशेष दिन या समय अथवा जगह पर शुरू नही कि गई है।

- **श्रीमती दुर्गा बाई व्याम** [MPPSC SSE 2021]

  दुर्गाबाई व्याम जिला डिण्डोरी की निवासी हैं। दुर्गाबाई के चित्र **(डिगना कला), गोंड प्रधान समुदाय** के देवकुल पर आधारित हैं। आपकी सबसे चर्चित किताबों में से एक भीमायना है। इस किताब में आपने अंबेडकर जी की जीवनशैली को दर्शाने की कोशिश की हैं। इन्हें रानी दुर्गावती राष्ट्रीय सम्मान से भी नवाजा जा चुका है डिगना कला यह शादी-विवाह और उत्सवों के मौकों पर घरों की दीवारों और फर्शो पर ज्यामिती पैटर्न को चित्रित करने की एक पारंपरिक कला है। तथा वर्ष 2022 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

दैनिक भास्कर

गोंड शैली की कला के लिए जानी जाती हैं दुर्गा बाई

दुर्गा बाई (कला)

दुर्गा बाई ने गोबर से घर की दीवारें लेपने से लेकर विभिन्न रंगों की गीली मिट्टी एकत्र करने तक हर तरह के काम का आनंद उठाया है। उनके चित्र बेहतरीन है। उनकी कला की मांग हमेशा ज़ोरों पर रही है।

- **श्री अर्जुन सिंह धुर्वे**

श्री अर्जुन सिंह धुर्वे डिण्डोरी जिला के बैगाचक क्षेत्र वनग्राम धुरकुटा के निवासी हैं। श्री धुर्वे बैगा परधोनी नृत्य के नृत्यकार हैं, वे बैगा जनजाति से सम्बन्ध रखते हैं। इन्हे वर्ष 1993-94 में उन्हें जनजातीय संपदा के कलात्मक संवर्धन विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा तुलसी सम्मान से विभूषित किया गया था। तथा वर्ष 2022 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

- **पेमा फत्या**

पेमा फत्या को देश के बड़े कलाकारों में शामिल किया जाता था उन्होंने पिथौरा बनाने का कार्य वंशानुगत परंपरा से सीखा पेमा फत्या झाबुआ जिले के रहने वाले थे। **पिथौरा पेंटिंग** को पिठोरा के नाम से भी जाना जाता है, जो कि भील जनजाति की एक विशिष्ट कला है इसमें ध्वनि सुनना एवं उसे आकृति के रूप में उकेरने अद्भुत कला का प्रदर्शन किया जाता है। यह कला भारत में एकमात्र ऐसी कला है जिसमें विशिष्ट ध्वनि सुनना उसे समझना और लेखन से चित्र रूप प्रदान करना आदि प्रमुख है। भील आदिवासियों के समाज में पिथौरा सजावट के लिए चित्र ही नहीं है यह विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठान है जिसमें चित्रकार अपने मन से कोई रूपांकन नहीं करता है यह उर्वरता और समृद्धि के देवों के आहवाहन और उनको समर्पित छवियां हैं जिनमें सौंदर्य था का उतना महत्व नहीं जितना कि विधान का है। जो स्वामीनाथन ने पेमा के पिथौरा में शामिल रूपों की पहचान इस तरह की है- बाबा गणेश, काठी घोड़ा ,चंदा बाबा, सूरज बाबा, तारे ,आकाश ,जामि माता, ग्राम में देवता, पिथौरा बाप जी, रानी काजल , हग राजा कुंवर, मेघनी घोड़ी, नाहर, हाथी, पानी वाली, बावड़ी, सांप, बिच्छू, भिश्ती, बंदर और पोपट के साथ ही चिन्नाला एकटंगया, सुपारकन्या घोड़ा पिठोरा (पिथौरा) के केंद्र में होता है झाबुआ के कलेक्टर रहे जी गोपालकृष्णन ने पहली बार जब प्रेमा के चित्र देखें तो वह इससे काफी प्रभावित हुए और पेमा की पेंटिंग को उन्होंने प्रदर्शनी में भेज दिया और इसे राज्य स्तर के दो पुरस्कार भी मिले। पेमा को प्रदेश सरकार ने वर्ष 1986 में शिखर सम्मान से नवाजा था और वर्ष 2017 में मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा आदिवासी लोक व पारंपरिक कलाओं के क्षेत्र में वार्षिक तुलसी सम्मान से भोपाल के जनजातीय संग्रहालय में सम्मानित किया। पेमा फत्या का 31 मार्च 2020 की रात को निधन हो गया वे लगभग 15 सालों से पैरालाइसिस के शिकार थे।

- **भूरी बाई** [MPPSC SSE 2020]

भूरी बाई भारत के मध्य प्रदेश की एक भील कलाकार हैं। मध्य प्रदेश में **झाबुआ जिले के पिटोल गाँव** में जन्मी भूरी बाई भारत के सबसे बड़े आदिवासी समूह भीलों के समुदाय से हैं। उन्होंने मध्य प्रदेश सरकार, शिखर सम्मान द्वारा कलाकारों को दिए गए सर्वोच्च राजकीय सम्मान सहित कई पुरस्कार जीते हैं। पितौल की भूरी बाई अपनी चित्रकारी के लिए कागज तथा कैनवास का इस्तेमाल करने वाली प्रथम भील कलाकार थी। भारत भवन के तत्कालीन निदेशक जे. स्वामीनाथन ने उन्हें कागज पर चित्र बनाने के लिए कहा। उस दिन भूरी बाई ने अपने परिवार के पैतृक घोड़े की चित्रकारी की और वह उजले कागज पर पोस्टर रंग के स्पर्श से उत्पन्न प्रभाव को देखकर रोमांचित हो उठी। किंतु चित्रकारी का जादू शीघ्र ही उन में समा गया। भूरी बाई अब भोपाल में आदिवासी लोककला अकादमी में एक कलाकार के तौर पर काम करती हैं। उन्हें मध्यप्रदेश सरकार से सर्वोच्च पुरस्कार शिखर सम्मान (1986-87) प्राप्त हो चुका है। 1998 में मध्यप्रदेश सरकार ने उन्हें अहिल्या सम्मान से विभूषित किया। भूरी बाई का कहना है कि हरेक बार जब भी वह चित्र बनाना शुरू करती हैं तो वह अपना ध्यान भील जीवन और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर पुन: केंद्रित करती हैं और जब कोई विशेष विषय-वस्तु प्रबल हो जाती है तो वह अपने कैनवास पर उसे उतारती हैं और उनके चित्रों में जंगल में जानवर, वन और इसके वृक्षों की शांति तथा गाटला (स्मारक स्तंभ), भील देवी-देवताएं, पोशाक, गहने तथा गुदना (टैटू), झोपड़ियां तथा अन्नागार, हाट, उत्सव तथा नृत्य और मौखिक कथाओं सहित भील के जीवन के प्रत्येक पहलू को समाहित किया गया है। भूरी बाई ने हाल ही में वृक्षों तथा जानवरों के साथ-साथ वायुयान, टेलीविजन, कार तथा बसों का चित्र बनाना शुरू किया है। उन्हें 2021 में भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

- **जोधइया बाई**

इनका जन्म उमरिया जिले के लोढ़ा गाँव में हुआ। जोधाइया बाई बैगा जनजाति की पारंपरिक पेटींग बनाती है। इनके द्वारा बनाई पेंटिंग की देश विदेश में प्रदर्शनी लगाई जा चुकी है। इन्हे वर्ष 2022 में नारी शक्ति पुरुस्कार तथा वर्ष 2023 में पदमश्री से सम्मानित किया गया है

Exercise no 16

1. आनंद सिंह श्याम एवं धनइया बाई कलाकारों का संबंध निम्नलिखित में से किस कला से है। [MPPSC SSE 2022]]
   (a) ढोकरा कला
   (b) गोण्ड चित्रकला
   (c) पिथौरा चित्रकला
   (d) बाघ प्रिंटिग
2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्रसिद्ध ढोकरा कला के लिए सही नहीं है। [MPPSC SSE 2022]
   (a) यह कला बैतूल की भारेवा आदिवासी समुदाय से संबंधित है।
   (b) यह एक अलौह धातु ढलाई कला है।
   (c) यह विवाह समारोह से जुड़ी एक सजावटी कपड़ा कला है।
   (d) सभी कथन सही है।
3. श्रीमती दुर्गा बाई व्याम किस जनजातीय कला से संबंधित है। [MPPSC SSE 2021]
   (a) गोंड शैली
   (b) भील शैली
   (c) बैगा शैली
   (d) सहरिया शैली
4. तीजनबाई किसके लिए प्रसिद्ध है [MPPSC State Engineering 2014]
   (a) ठुमरी
   (b) दादरा
   (c) पंडवानी
   (d) कोलदहका
5. कंघी शिल्प निम्न में से किस जनजाति से संबंधित है [MP Dairy Federation Exam 2016]
   (a) भील
   (b) गोण्ड
   (c) बंजारा
   (d) कोरकू
6. पद्मश्री भूरी बाई किस लिए प्रसिद्ध है ? [MPPSC SSE 2020]
   (a) चित्रकारी
   (b) नृत्य
   (c) संगीत
   (d) लेखन
7. 'भीली गुड़िया' का केन्द्र निम्नलिखित में से किस जिले में स्थित है ? [MPPSC SFM 2021]
   (a) धार
   (b) झाबुआ
   (c) मंडला
   (d) डिंडोरी
8. पिथौरा चित्रकला किस जनजाति से संबंधित है ? [MPPSC SFM 2021]
   (a) कोल
   (b) सहरिया
   (c) गोंड
   (d) भील

1. (b) 2. (c, d) 3. (a) 4. (c) 5. (c) 6. (a) 7. (b) 8. (d)

1.17 मध्यप्रदेश से संबंधित अन्य जनजाति और युवा गृह

► अबूझमाड़िया जनजाति

अबूझमाड़िया जनजाति का निवास क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ क्षेत्र में है। जिसके कारण इन्हें स्थानीय बोली में अबूझमाड़िया कहा जाता है । मध्यप्रदेश में यह जनजाति बालाघाट, **छिड़वाडा** [MP Vyapam Labour Inspector Exam 2017] जिलों में निवास करती है। अबूझमाड़िया जनजाति शहरी व ग्रामीण समाज से पृथक अबूझमाड़ क्षेत्र के गहन वन एवं पहाड़ों से परिपूर्ण प्राकृतिक परिवेश में निवास करती है। अबूझमाड़िया, अबूझमाड़ क्षेत्र को "मेटाभूमि" अर्थात "**पर्वतीय भूमि**" तथा स्वयं को "**मेटा कोईतोर**" अर्थात "पर्वतीय भूमि के निवासी" कहते है।

उत्पत्ती

अबूझमाड़िया जनजाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में ऐतिहासिक प्रमाणों का अभाव है। अबूझमाड़िया जनजाति गोंड जनजाति की उपजाति है। माड़िया तीन प्रकार के हैं - वर्तमान में अबूझमाड़िया, कुवाकोंडा हलके माडिये और तेलंगे माड़िये."

अबूझमाड़िया जनजाति की आवास गहन वन एवं पहाड़ों से युक्त अबूझमाड़ क्षेत्र में अबूझमाड़ियों के ग्राम छोटे व विरल जनसँख्या के होते हैं। अबूझमाड़िया ग्राम पहाड़ी ढलान या पहाड़ों के समीप के समतल स्थल पर बसे होते हैं। पूर्व में अबूझमाड़िया ग्राम **पेंदा खेती** (स्थानांतरित कृषि) के कारण निश्चित अवधि में नियत भू-भाग में स्थानांतरित होते थे किन्तु वर्तमान में शिक्षा, पेयजल, स्वास्थ्य व पोषण, राशन दुकान सम्बन्धी अधोसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास एवं पेंदा खेती में कमी के कारण ग्राम की बसाहट स्थायी हो रही है। अबूझमाड़िया आवास के चारों ओर बांस या लकड़ी के खम्बो की बाड़ होती है, मध्य भाग में "लोन" (आवास) स्थित होता है।

आर्थिक जीवन

अबूझमाड़िया सदस्य वनों से कंदमूल एवं वनोपज संकलन करते हैं। संकलन का कार्य परिवार के सभी अर्धकार्यशील व् कर्मशील सदस्य करते हैं। ये वनों से अनेक प्रकार के जंगली कंद, भाजियां, पत्तियां, फूल-फल, बांस का नवीन कोमल तना (बास्ता या करील) विभिन्नप्रकार के मशरूम आदि का संकलन खाद्य सामग्री के रूप में करते हैं। वे आंवला, आम, इमली, जामुन, कोसा, शहद, चार, फुलबाहरी, महुआ बीज आदि का संग्रहण बाज़ार में मुद्रा या वस्तु विनिमय के लिए करते हैं जिसके माध्यम से वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। कृषि अबूझमाड़िया जनजाति की आर्थिक क्रियाओं का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। अबूझमाड़िया परिवार लगभग पूरे वर्ष कृषि से सम्बंधित क्रियाओं में संलग्न रहते हैं। वर्तमान में अबूझमाड़िया जनजाति की कृषि तकनीक तीन प्रकार की है- **पेंदा कृषि**, **दीपा कृषि** एवं **स्थायी कृषि** । कृषि उत्पादों में इनके द्वारा कोदो, कुटकी, धान, कोसरा, मुंग, उड़द आदि अनाज का उत्पादन किया जाता है।

परिवारिक संरचना

अबूझमाड़िया जनजाति में गठन के आधार पर केंद्रीय संयुक्त तथा विस्तृत परिवार पाए जाते हैं। इनमें वैवाहिक स्थिति के आधार पर एकल विवाही एवं बहुपत्नी विवाही परिवार पाए जाते हैं। अबूझमाड़िया परिवार पितृसत्तात्मक परिवार हैं अर्थात परिवार में पिता प्रमुख होता है।

सम्पूर्ण अबूझमाड़िया समाज गोत्र, वैवाहिक तथा सामजिक संबंधों के नियमन के लिए "अक्कोमामा" एवं "दादाभाई" दो बहिविवाही अर्धशों में विभक्त है।"ओक्कोमामा" शब्द वैवाहिक संबंधियों गोत्र के लिए तथा "दादाभाई" शबत रक्त संबंधियों गोत्र के लिए प्रयुक्त होता है।

जन्म संस्कार

अबूझमाड़िया जनजाति में जन्म को सामान्य प्राकृतिक घटना माना जाता है। अबूझमाड़िया स्त्री को नये या बढ़ते फूल, पत्ते, शाखा को तोड़ने पर निषेध होता है। प्रसव घर के समीप बने झोपडी **"कुरमा लोन"** में होता है। जिसमें ग्राम की दो-तीन स्त्रियाँ मदद करती है। नाल काटने में चाकू या तीर का उपयोग किया जाता है। "नाल" को घर के पीछे गाड़ा जाता है। प्रसूता को आठ दिनों तक "कुरमा लोन" में रहना पड़ता है। इस अवधि में बच्चे को पिता भी कुछ नियमों और निषेधों का पालन करता है। नाल झड़ने या आठ दिनों के बाद बच्चे का नामकरण संस्कार होता है। अबूझमाड़िया पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं, इसलिए नवजात शिशु के नामकरण के पूर्व अनेक विधियों से यह ज्ञात करते हैं कि शिशु के रूप में किस पूर्वज का पुनर्जन्म हुआ है। जिस पूर्वज का पुनर्जन्म ज्ञात होता है, उसके पिछले जन्म के नाम के आधार पर नवजात शिशु का नामकरण किया जाता है।

विवाह इनमें एकल या बहुपत्नी विवाह प्रचलित है। विवाह मई-जून माह में "ककसाड़ त्यौहार " के पश्चात किया जाता है। वधुमूल्य प्रथा प्रचलित है। विवाह के अवसर पर वर पक्ष, वधू पक्ष को रुपये, शराब, कोसरा, अनाज, मुर्गा, दो कपडे-तलदोया (पगड़ी) व पिंगोड़ गेतलांग देता है। इनमें सहमती विवाह अधिक होते हैं। जीवनसाथी चुनने हेतु लमसेना विवाह (लामडे वायता), विनियम विवाह (कोविडिदांग), पलायन या प्रेम विवाह (गोचूट वायता), अपहरण विवाह (पोयस तनाना), हठ विवाह (ओड़ी वायता) एवं पुनर्विवाह प्रचलित है। इनमें विवाह विच्छेद बहुत कम पाए जाते हैं। अबूझमाड़िया जनजाति में किसी व्यक्ति कि मृतक होने पर अंतिम संस्कार के लिए शवदाह एवं दफ़नाने की प्रक्रिया प्रचलित है मृत्यु प्राकृतिक रूप से हुई होती शव को दफनाया जाता है, अप्राकृतिक मृत्यु होने पर शव को सामान्य दुर्घटना, बिमारी या वन्य प्राणी के हमले द्वारा हो तो शव को जलाया जाता है। मृत्यु के निश्चित अवधि पश्चात मृतक स्तंभ स्थापित किया जाता है। मृतक स्तंभ हेतु गोत्र के अनुसार भूमि निश्चित होती है। अबूझमाड़िया लोगों में विशवास है कि मृतक पूर्वजों के स्तम्भ के आकार में वृद्धि होती है।

सामाजिक संघटन

अबूझमाड़िया राजनैतिक संगठन वंश परम्परा पर आधारित है। इनके ग्राम अनेक **पारों या टोलों** में दूर-दूर बसे होते हैं पारा या टोला के प्रमुख को पंच या **परा मुखिया** कहते हैं। अनेक पारों से मिलकर बने ग्राम के प्रमुख को पटेल कहा जाता है। वह पंचों का नेतृत्व करता है। अनेक ग्रामों से मिलकर "परगना"बना होता है। सम्पूर्ण अबूझमाड़िया क्षेत्र अनेक परगनों में विभाजित है। उसके प्रमुख को **"परगना माझी"** कहते हैं। परगना माझी परगना के ग्रामों के पटेलों का नेतृत्व करता है। परगना माझी का मुख्य कार्य अपने परगना क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने का होता है।

अबूझमाड़िया जनजाति के स्त्री-पुरुष को नाच-गान का बहुत शौक होता है। विभिन्न मेला और मड़ई, तीज-त्यौहारों में युवक-युवतियां अपने रीती-रिवाजों, संस्कृति के साथ लोक-नृत्य-गायन करते हैं। वाद्य यन्त्र ढोल, मांदर, बांसुरी, नगाड़ा. तुड़बुड़ी के साथ गेड़ीनाच, काक्सर,रिलों नृत्य किया जाता है।

► कोरबा जनजाति

उत्पति

कोल प्रजाति की जनजाति मध्यप्रदेश में छोटा नागपुर (वर्तमान छतीसगढ़) से ही आयी है। वर्तमान छतीसगढ़ में यह बिलासपुर, रायगढ़ और सरगुजा जिला में प्रमुख रूप से पायी जाती है। ये धातु गलाने का काम करने वाले लोग हैं।

भौगोलिक विस्तार

यह जनजाति पश्चिम की ओर सरगुजा, रायपुर तथा पालाभाड़ा पठार पर से होती हुई अधिक संगठित जनजाति कुर तथा रीवा के मुसाइयों तक पहुंचती है। सेन्ट्रल प्राविन्स में वह विन्ध्याचल से सतपुड़ा तक पहुंच जाती है। बहुत ही पिछड़ी जनजातियों में से एक है। यह जनजाति उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर, मध्यप्रदेश के जशपुर और सरगुजा और बिहार के पलामू जिलों में मुख्य रूप से पायी जाती है। उत्तरप्रदेश के कोरबा का मजूमदार और पलामू के कोरबा का सण्डवार नामक विद्वानों ने विस्तृत अध्ययन किया था। पहाड़ों में रहने वाले कोरबा पहाड़ी कोरबा कहलाते हैं तथा मैदानी क्षेत्रों के कोरबा डीह कोरबा कहलाते हैं। मिर्जापुर के कोरबा अपने को डीह कोरबा तथा पहाड़ी कोरबा के अतिरिक्त डंड कोरबा श्रेणियां बताते हैं।

शारीरिक संरचना

कोरबा कम ऊंचाई के तथा काले रंग के लोग हैं। इनके पैर शरीर की तुलना में कुछ छोटे दिखाई पड़ते हैं। पुरूषों की औसत ऊंचाई 5 फिट 3 इंच तथा महिलाओं की 4 फिट 9 इंच पायी जाती है। पहाड़ी कोरबाओं की दाढ़ी और मूंछों के अलावा शरीर के बाल भी बड़े रहते हैं। साधारणत: वे कुरूप दिखलाई देते हैं। पहाड़ी कोरबा मध्यप्रदेश की आदिम जातियों में से है जिसका जीवन-स्तर तथा विकास अत्यंत ही प्रारंभिक व्यवस्था में हैं। यह उनके जीवन के प्रत्येक कार्यकलापों में देखा जा सकता है। रहन-सहन के मामले में वे शारीरिक स्वच्छता से कोसों दूर हैं। उनके सिर के बाल मैल के कारण रस्सी जैसी लटाओं में परिवर्तित हो जाती है। महिलाओं के कपड़े निहायत गंदे रहते हैं। शरीर के अंग प्रत्यंगों पर मैल की परत पायी जाती है।

सामाजिक संगठन

इनकी अपनी पंचायत है जिसे **"मैयारी"**[MP Dairy Federation Exam 2016] कहते हैं। सारे गांव के कोरबाओं के बीच एक प्रधान होता है जिसे "मुखिया" कहते हैं। बड़े-बुढ़े तथा समझदार लोग पंचायत के सदस्य होते हैं। पंचायत का फैसला सबको मान्य होता है। इनका घर बहुत ही साधारण होता है। ये जंगल में घास-फूस से बने छोटे-छोटे घरों में रहते हैं। जो लोग गांव में बस गए हैं, वे बांस और लकड़ी के घर बनाते और खपरैल तथा पुआल से छाते हैं।

आर्थिक जीवन

पहाड़ी कोरबा पहले बेआरा खेती (शिफ्टिंग कल्टिवेशन) भी करते थे, लेकिन सरकारी नियमों के तरह इस प्रकार की खेती पर बंदिश है। डीह कोरबा साधारण खेती करते हैं। कोरबा जनजाति की एक उपजाति कोरकू है और जिस तरह सतपुड़ा की दूसरी कोरकू जनजाति मुसाई भी कहलाती है उसी तरह कोरकू भी "मुसाई" नाम से पहचाने जाते हैं। जिनका शाब्दिक अर्थ है चोर या डकैत। कूक कोरबा और कूक को एक ही जनजाति के दो उपभेद मानते हैं। जबकि ग्रिमर्सन भाषा के आधार पर उनकी भाषा को असुरों के अधिक निकट पाते हैं। कोरबा लोगों में "मांझी" सम्मान सूचक पदवी मानी जाती है। संथालों में भी ऐसा ही है। शिकार प्रियता के साथ शिकार से संबंधित उनके अंधविश्वास ओर टोने-टोटके भी हैं। जैसे शिकार प्रियता के साथ शिकार से संबधित उनके अंधविश्वास ओर टोने-टोटके भी हैं जैसे शिकार यात्रा के समय **बच्चे का रोना अशुभ** माना जाता है। कुण्टे महोदय के अनुसार शिकार यात्रा पर जाते समय एक व्यक्ति ने अपने दो वर्षीय बच्चे को पत्थर पर पटक दिया क्योंकि उसने रोना चालू कर दया था। इसी भांति वे शिकार की यात्रा के पूर्व मुर्गों के सामने अन्न के कुछ दाने छिटका देते हैं। यदि मुर्गों ने ठोस दाने को पहले चुना तो यात्रा की सफलता असंदग्धि मानी जाती है। कोरबा के लोगों में किसी प्रकार के आदर्श को महत्व नहीं दिया जाता, जंगल का कानून ही उनकी मानसिकता है। शिकार यात्रा के समय बच्चे का रोना अशुभ माना जाता है।

महिलाएं आभूषण के आधार पर केवल लाल रंग की चिन्दियां सिर पर बांध लेती है। उनकी सामाजिक मान्यताएं भी अन्य आदिवासियों की तुलना में काफी पिछड़ी हुई है , जैसे कहा जाता है कि पहाड़ी कोरबा कुछ परिस्थितियों में बहन से भी विवाह कर सकते हैं। पहाड़ी कोरबा में विवाह के लिए माँ-बाप की अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

► हल्बा जनजाति

मध्य प्रदेश सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग मंत्रालय का कहना है कि ये जनजातियां मुख्य रूप से मध्यप्रदेश के **बालाघाट**[MP Dairy Federation Exam 2016], लांजी गढ़, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला जिले के कुछ क्षेत्रों में निवास करती है। अगर कोई व्यक्ति यह साबित कर दे कि वह इन जिलों का हल्बा जनजाति का मूल निवासी है, तो उसे हल्बा जनजाति का प्रमाण पत्र दिया जा सकता है.

हल्बा जनजाति छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और ओडिशा में पाई जाती है। हल्बा जनजाति के लोग हल्बी भाषा बोलते हैं। हल्बा जनजाति के लोग मुख्य रूप से कृषि समुदाय हैं। हल्बा मिश्रित जनजातियाँ या आदिवासी जाति हैं, जो गोंड और हिंदुओं के संघ से निकली हैं। हल्बा शब्द की उत्पत्ति हल शब्द से हुई है। बीजापुर के हलबा लोग मानते हैं कि उनके **पूर्वज राजा अनाम देव वारंगल** से थे। बस्तर की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था में हल्बा जनजाति का योगदान अतुलनीय है.

► अगरिया जनजाति

अगरिया जनजाति पितृ वंशीय, पितृ सत्तात्मक व पितृ निवास स्थानीय जनजाति है। **इनमें पथरिया तथा खुटियाँ दो उपजाति पायी जाती** है। एक जो लोहा को पत्थर पर रख कर हथोड़ी से पीट कर उपकरण बनाता है उसे पथरिया अगरिया कहते है। तथा दूसरा जो लोहे को खूंटी पर रख कर गर्म लोहा को पीटकर उपकरण बनाता है उसे खूंटिया अगरिया कहते है। सरगुजा के इलाकों में ये असुर अगरिया कहलाते है। यह मुख्य रूप से भारत में छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, झारखंड आदि राज्यों में है।

अगरिया जनजाति का इतिहास

अगरिया जनजाति का कोई एतेहासिक प्रमाण नहीं है लेकिन किवदंतियों के अनुसार गोड़ जाति से अलग हुआ एक उपजाति है। इसी गोंड जनजाति में दो भाई थे। इनके जीवन में जीने का साधन केवल कंदमूल संग्रह और शिकार करना था। एक इन दोनों भाइयों के बीच लडाई हो गयी उसके बाद एक भाई घर छोड़ कर जंगल की ओर चला गया। और झोपड़ी बना कर रहने लगा। रात में भूख लगने के कारण उसने आग जलायी और कुछ कंदमूल ढूंढने लगा ताकि उसे भून कर खा सके पर उसे कुछ न मिला। कुछ न मिलने के कारण वह गुस्से में आ कर पास मैं रखे पत्थर को आग में डाल कर सो गया। सुबह उठने के बाद देखता है की वह पत्थर लोहा का पत्थर था जो आग में पिघल कर लोहा बन गया। इसे देख कर लोहा बनाने का ज्ञान प्राप्त हो गया। और उसके जीने का आजीविका साधन बन गया और उसी समय से इन का वंशज अगरिया कहलाए जाने लगे।

अगरिया जनजातियों का वस्त्र एवं आभूषण

महिलाएं अपने शरीर पर गोदना गुदवाती है। जो इनकी पहचान एवं सुंदरता की प्रतीक है। और नकली गिलट व चाँदी के आभूषण पहनती है। पुरुष प्रधान गमछा या पटकू, धोती तथा अंगरखा (बंडी) आदि पहनते है।

अगरिया जनजातियों का खान-पान एवं रहन सहन

अगरिया जनजाति के लोग वनो और पहाड़ी इलाकों में निवास करते है। इन का घर मिट्टी का और छत्त घास फूस तथा खपरैल का होता है। घर की दिवारे सफेद और पीली रंग की होती है। और फर्श मिट्टी का होता है जिसे घर की महिलाए मिट्टी से छबई और गोबर से लिपाई भी करती है। इनके घर में 2 से 3 कमरे होता है एक कमरा अनाज़ रखने के लिए होता है। ये लोग कोदो कुटकी, मक्का, उड़द व मूंग की दाल और मौसमी भाजी सब्जी और बरसात के मौसम में मछली खाते है अन्य मांसाहारी जैसे मुर्गा, बकरा आदि बना कर खाते है। महुवा का शराब बना कर पिया जाता है।

अगरिया जनजातियों का व्यवसाय

अगरिया जनजातियों का मुख्य व्यवसाय[MPPSC State Forest Service Main Examination 2021] **लोह अयस्क से लोहा बनाना** होता है। लोह अयस्क को कोयला में मिलाकर मिट्टी से बनी 3 से 4 फुट ऊंची भट्टी में नीचे आग में जलाकर गर्म किया जाता है। उसके बाद महिलाएं चमड़े की धोकनी पर खड़े होकर पैर से दबा कर भट्टी को हवा देती है। लोह अयस्क से लोहा गल कर अलग हो जाता है उसके बाद भिन्न भिन्न चीजें जैसे:- कुल्हाड़ी, फावड़ा, हंसिया, कुदाली, तीर के नोक और बहुत सारी चीजें जो की लोहे से बनती है इस जनजाति द्वारा बनायी जाती है। स्थानीय निवासी लोगों से आनाज़ के बदले या रुपयों के बदले इन वस्तुओं को ली जाती है। इसके अलावा जिनके पास खेती करने लायक जमीन है उसमें कुछ फसल जैसे कोदो कुटकी, मक्का, उड़द, मूंग आदि बोते है। जंगलों से तेंदू पत्ता, महुआ, गुल्ली और कंदमूल इकट्ठा करते है। बरसात के दिनों में अपने खाने के लिए मछली पकड़े है।

अगरिया जनजातियों का महत्वपूर्ण त्यौहार

इनके प्रमुख त्योहार नवाखानी, दशहरा, होली, करमा पुजा आदि

लोकगीत एवं लोकनृत्य

लोकगीत- करमा गीत, ददरिया, सुवा गीत, विवाह गीत, फाग आदि प्रमुख है|

लोकनृत्य- करमा नृत्य, दिवाली में पड़की एवं विवाह में विवाह नृत्य प्रमुख है|

अगरिया जनजातियों के देवी-देवता

अगरिया जनजातियों के प्रमुख देवी देवता बूढ़ा देव, लोहासुर, ठाकुरदेव, दूल्हा देव, शीतला माता, बाघदेव, जोगनी, घुरलाघाट आदि इसके अलावा हिन्दू धार्मिक जीवन में देवी देवता है उनकी आस्था में पुजा की जाती है। यह जनजाति के लोग काले जादू टोना, भूत प्रेत, अंध विश्वास पर भी विश्वास करते है। दशहरा के दिन लोहासुर को काले मुर्गे की बाली दी जाती है।

अगरिया जनजातियों का विवाह

अगरिया जनजातियों का विवाह ढुकू (घुसबैठ) व उढ़रीया (सहपालयन) कुछ सामाजिक दंड लेकर विवाह के रूप में मान्यता दी जाती है। विधवा, पुनर्विवाह होता है।

▶ **पारधी जनजाति**

पारधी मराठी भाषा के शब्द 'पारध' का एक तत्भव रूप है, जिसका अर्थ होता है 'आखेट' या शिकार | मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में यह जनजाति पायी जाती है किन्तु इनकी सर्वाधिक जनसंख्या सीहोर और रायसेन जिलों में मिलती है। **'पारधी ' जनजाति** [MPPSC Tax Assistant 2012] के लोग वन्य पशुओं का शिकार करने और उन्हें पकड़ने में बहुत सिद्धहस्त हैं। पारधी जनजाति के कई उपविभाग हैं जैसे- गोसाँई पारधी, चीता पारधी, भील पारधी, शीशी का तेल पारधी, फाँस पारधी तथा बहेलियों को भी इसमें शामिल कर लिया जाता है।

'चीता पारधी' चीता पकड़ने में बहुत माहिर होते हैं, शैशव अवस्था में चीता पकड़कर उसे प्रशिक्षण देते हैं। 'फाँस पारधी' फंदे की सहायता से शिकार करते हैं। शीशी का तेल पारधी ' मगर का शिकार कर उसकी चर्बी से तेल निकालते हैं और शीशी में रखकर बेचते हैं। पारधी समाज में महिलाओं को शिकार की अनुमति नहीं है।

▶ **पनिका जनजाति**

- पनिका अथवा परिका जनजाति मध्यप्रदेश के **सीधी तथा शहडोल** जिलों में पाई जाती है। यह जनजाति द्रविड़ प्रजाति की सदस्य है।
- उपवर्ग : शक्ति, साकेत, पनिका, कबीर पंथी।
- पनिका लोगों की मान्यता है कि कबीर का जन्म जल में हुआ था तथा उनका पालन पोषण एक पनिका महिला द्वारा किया गया था। यही कारण है पनिका कबीर पंथी होते है तथा स्वयं को 'कबीरहा' कहते है।
- वस्त्र निर्माण में संलग्न पनिका जाति को बुनका भी कहा जाता है।
- मुख्य भोजन : पेज, उड़द, मूंग तथा चावल।
- कबीरहा मांस मदिरा का सेवन नहीं करते है, तथा कबीर की ही तरह निर्गुण विचारधारा के उपासक होते है। पनिका का आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि पर आधारित है। यह कुशल आखेटक होते है।
- पनिका जनजाति की एक पंचायत होती है। जो गांव के सभी विवादों के निपटाने के लिए उत्तरदायी है।

▶ **खैरवार जनजाति**

- खैर वृक्ष से कत्था निकालने के कारण खैरवार कहलाने वाली इस जनजाति को **खैरूआ** भी कहते है। जनजाति का वितरण उमरिया, सीधी, अनूपपुर तथा शहडोल में मुख्यतः है।

- खरियागढ़ (कैमूर पहाड़ियों) को यह अपना मूल निवास स्थान मानते है।
- पन्ना छतरपुर में इन्हें **कोंदार** कहा जाता है।
- मुख्य व्यवसाय : विंध्य क्षेत्र एवं मंडला में कत्था निकालना इसके अतिरिक्त वनोपज संग्रहण तथा मजदूरी का कार्य।
- खैरवार के विभिन्न निवास क्षेत्रों में इनके जीवन स्तर में काफी विभिन्नताएँ पाई जाती है।

► उरांव

सीधी, सिंगरोली, अनूपपुर तथा शहडोल जिलों में निवासरत उरांव जनजाति की उत्पत्ति द्रविड़ों से मानी जाती है। मुख्यतः उरांव जनजाति छत्तीसगढ़ में निवास करती है। मध्यप्रदेश में कुछ ही लोग इस जनजाति के पाए जाते हैं। उरांव दक्षिण भारत से आए हैं। इनका मुख्य कार्य खेती-मजदूरी रहा है। इनका मुखिया 'महतो' तथा पुरोहित 'बैगा' कहलाता है। इनका एक 'परहा राजा' होता है जो झगड़ों को निपटाता है। ईसाई धर्म सबसे अधिक स्वीकारने वाली जनजाति उरांव है। मिज, लकड़ा, केरकेट्टा इनके पारम्परिक गोत्र है। इनके युवागृह **'धुमकोरिया'**[MPPSC SFM SP Exam 2019] कहलाते हैं।

पर्व-त्यौहार : सरना पूजा, करमा पूजा, कुल देव पूजा |

नृत्य : सरहुल, करमा, घुड़िया डण्डा।

► परधान (पटेरिया)

परधान गोंड राजाओं के मंत्री थे तथा उनकी प्रशस्ति गाया करते थे। इस प्रकार परधान गोंड की ही उपजाति है। गोंड राज्यों के पतन के बाद परधान गायन-संगीत में आ गये। मुख्य क्षेत्र : मैकल क्षेत्र, नर्मदा घाटी, बघेलखण्ड।

► बिंझवार

विंध्याचल पर्वत इनका मूल स्थान था। विंध्याचल के नाम पर जनजाति का नाम बिंझवार पड़ा। विंध्यावासिनी के पुत्र **बारहभाई बेटकर** को अपना पूर्वज मानती है। बैगा जनजाति का विकसित वर्ग **'बिंझवार'** माना जाता है। अर्थात् बैगा आदिम जीवन (Premitive Culture) जीते है, जबकि बिंझवार वे बैगा है, जो धीरे-धीरे सभ्य समाज के संपर्क में आये।

बिंझवार के चार वर्ग : बिंझवार, सोनझार, बिरझिया और बिसिया।

मध्यप्रदेश के आदिवासी जनजाति के युवागृह	
जनजाति	युवागृह
मुडिया	घोटुल
भुइयाँ	धागरबांसा
भारिया	रंग-बंग
उरांव	धुमकोरिया
मुण्डा	गतिओरा

युवा गृह जनजातीय संस्कृतियों की प्राचीनता और मौलिक संस्थाएँ में से एक हैं। यह जनजातियों की एक ऐसी संस्था है जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। युवक-युवतियों की प्रगति के लिये जनजातियाँ कितनी सजग हैं, तथा उनकी चतुर्मुखी अभि- वृद्धि के लिये ये क्या-क्या करते रहते हैं।
सामान्य रूप से जनजातीय युवागृह अविवाहित लड़कों और लड़कियों का एक ऐसा संगठन है जिसका कार्य उन्हें अपने समाज की संस्कृति से परिचय कराना तथा अपनी संस्कृति के अनुरूप 'उनके मानसिक विकास को सुनिश्चित करना है। जोड़ों में रहने वाले युवकों को **चेलक** और युवतियों को **मोटियारी** कहा जाता है।

युवा गृह का प्रचलन

गोंड जनजाति में युवा सदस्यों के मनोरंजन का सर्व प्रमुख केन्द्र घोटुल है। युवागृह अंग्रेजी शब्द डारमेट्री (Dormitory) का हिन्दी रूपान्तर है जिसे जर्मनी में **'जुगलिग्स हाउस "** कहा जाता है। जनजातीय समाज के युवा-युवतियों को उनके समाज की संस्कृति तथा अन्य बातों में दीक्षित करने के लिये यह संस्था भारत में ही नहीं बल्कि संसार की सभी जन- जातियों में पायी जाती है। बोली की विविधता के कारण यह संस्था असम के नागा में "या किचुकी", भोटिया में "रंगबंग", ऊराँव में "धूमकुरिया", मुण्डा और हो में "गतिओरा", जुआंग में "दरबार", भुइयाँ में "धनगरवस्सी", असम के कोयनह नागा में "मोरंग", गारो मैं "नोक-पाँतें", बोन्दो समाज में "सेलानी डिंगो", ओ जनजाति में "आरिचू" तथा मुरिया और गोंड जनजाति में "घोटुल" की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। लड़कों तथा लड़कियों के युवागृह विभिन्न जनजाति में भिन्न-भिन्न नामों से जाने जाते हैं। लहोठा नागाओं में लड़कों के युवागृह "चम्पो" (Champo), कोयनक नागा में "मोरंग", मेंमी में "इखुमिची" के नाम से प्रचलित हैं। खासी जनजाति में "चांग", मिकिर में "रिसोमार" (Risomar) तथा तंग्सा जनजाति में "लेपोंग" (Loopong) में लड़कियों के पृथक युवागृह हैं, जिन्हें "लूप" अथवा "लिकप्यास" (Likpyas), येमी में "इलायची", कोयनक नागा में "यो" नाम से जाना जाता हैं।

युवागृह के उद्देश्य

मनुष्य ने जब से समूह में रहना प्रारम्भ किया, तब से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये तरह-तरह के संघों का निर्माण भी करना शुरू कर दिया। माना जाता है कि आदिम समाजों में संघ सामान्य रूप से लिंग, व्यवसाय, आयु तथा सामाजिक स्थिति के

आधार पर बनाये गये, जिनमें भी लिंग तथा आयु का आधार महत्वपूर्ण रहा। युवागृह के निर्माण के पीछे निश्चित आयु के भी ये ही तत्व प्रमुख रहे होंगे। इस संघ की सदस्यता स्वतः प्राप्त हो जाती है।

युवागृह के प्रकार्य

युवागृह केवल शयनगृह और यौन प्रशिक्षण का केन्द्र ही नहीं है, अपितु उसकी सामाजिक प्रकार्यात्मक भूमिका भी है। इसके सदस्य सामूहिक रूप से कार्य करते हैं जिससे पारस्परिक स्नेह, सद्भावना और एकता की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार युवागृह "समाजवादी व्यवस्था" के प्रतीक हैं। एक शैक्षणिक संस्था के रूप में युवागृह अपने सदस्यों के समूह की संस्कृति, परम्परा, विश्वासों और जनजातीय नियमों के अनुसार व्यवहार पालन पर बल देते हैं। बाहरी रूप से इसकी कार्य प्रणाली बड़ी रोचक व मनोरंजक होती है। सन्ध्या उपरान्त, भोजन के पश्चात् गीत, नाच, किस्से कहानियाँ, हास-परिहास द्वारा परस्पर मनोरंजन सामाजिक धरातल पर पारस्परिक परिचय का द्योतक है। यह मान्यता है कि **"घोटूल"** उनके लिये **"लिंगो" देवता** का वरदान है। अतः युवागृह के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य उस देवता के प्रति विश्वास की रक्षा तथा अनुशासन व संयम का पालन है। इसके प्रमुख प्रकार्य माने जाते हैं।

युवागृह का पतन

जनजातीय संस्कृति की यह प्राचीन संस्था अब अपनी मौलिकता खोने लगी है। वर्तमान में युवागृह का पतन होने लगा है। युवागृह गोंड जनजातीय समाज की मौलिक संस्था है जो "घोटुल" के नाम से प्रचलित है। सभ्य समाज के सम्पर्क से युवक और युवतियों के आमोद-प्रमोद के साधन केन्द्र हो गये हैं। शिक्षा के प्रसार से वे अपने आपको श्रेष्ठ महसूस करते हैं तथा 'युवागृह' में जाना पिछड़ेपन का प्रतीक मानते हैं। अपने अधूरे व अविकसित ज्ञान से वे युवागृहों के विरुद्ध सभी जगह भ्रामक प्रचार करने लगे हैं। कुछ युवक इस श्रेणी के भी हैं जो युवागृह जाते हैं किन्तु सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान हेतु नहीं, बल्कि मनोरंजन हेतु जाते हैं।

Exercise no 17

1. कंवार जनजाति म.प्र. के किस जिले में पाई जाति है। [MPPSC AM 2021]
   (a) बालाघाट
   (b) मण्डला
   (c) सिंगरौली
   (d) शहडोल
2. अगरिया जनजाति की मुख्य आजीविका क्या है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) लोहा गलाना
   (b) खेती करना
   (c) मछली पकड़ना
   (d) कृषि उपकरण एवं औजार बनाना
3. कौन-सी जनजाति वन्य प्राणियों के शिकार एवं अन्य अपराधों के लिए अधिक जानी जाती है [MPPSC Tax Assistant 2012]
   (a) पारधी
   (b) अगरिया
   (c) कोरकू
   (d) इनमें से कोई नहीं
4. कोरबा जनजाति की पंचायत को कहते है [MP Dairy Federation Exam 2016]
   (a) मैयारी
   (b) मैक्स
   (c) रोकरी
   (d) रासा
5. हल्बा जनजाति का मुख्य निवास जिला है। [MP Dairy Federation Exam 2016]
   (a) रीवा
   (b) बालाघाट
   (c) सीधी
   (d) जबलपुर
6. अबूझमाड़िया जनजाति मध्यप्रदेश के किस जिले में पायी जाती है[MP Vyapam Labour Inspector Exam 2017]
   (a) खंडवा
   (b) रीवा
   (c) इंदौर
   (d) छिंदवाड़ा
7. निम्नलिखित में से किस विकल्प में जनजाति का नाम वहाँ प्रचलित युवा गृह के नाम से सुमेलित नहीं है। [MPPSC SFM SP Exam 2019]

जनजाति	युवा गृह
(a) माडिया	घोटुल
(b) मुण्डा	गतिओरा
(c) भुइया	रंग – भंग
(d) उरांव	धुमकोरिया

8. जनजातीय जीवन में गोटुल प्रतिनिधित्व करता है। [MPPSC SFS Main Paper 2019]
   (a) क्षेत्रीय देवता का
   (b) विवाह के स्वरूप का
   (c) युवा संगठन का
   (d) परम्परावादी नेता का

1. (b) 2. (a, d) 3. (a) 4. (a) 5. (b) 6. (d) 7. (c) 8. (c)

Copyright © by Hornbill classes

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored or transmitted in any form or by any electronic, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Hornbill classes.

Reference Books

क्र.	किताब का नाम	प्रकाशक	लेखक
1.	सम्पदा (मध्यप्रदेश की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य)	आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी	बसन्त निरगुणे, महेश चंद्र शांडिल्य, शेख गुलाब
2.	The Baiga	Gyan Publishing House	Verrier Elwin
3.	चौमासा	आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी	डॉ धर्मेन्द्र पारे
4.	पिठौरा (भील जनजातीय चित्रांकन और मिथ कथाएं)	आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद का प्रकाशन	बसन्त निरगुणे, भानुशंकर गेहलोत
5.	जनजातीय कार्य विभाग की विभागीय योजनायें	जनजातीय कार्य विभाग	जनजातीय कार्य विभाग, आयुक्त
6.	मध्यप्रदेश राज्य की अनुसूचित जनजातियों की रूढिजन्य विधि संहिता,1992	विधि और विधायी कार्य विभाग मध्य प्रदेश	
7.	समग्र (गोंड जनजातिय सांस्कृतिक अध्ययन)	आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी	निरंजन महावर
8.	समष्टि	मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद	कपिल तिवारी
9.	प्रतिरूप (मध्यप्रदेश के जनजातीय मुखोटे	मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद	कपिल तिवारी
10.	सहरिया	मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद	बसन्त निरगुणे
11.	काष्ठ शिल्प (मध्यप्रदेश कि जनजातीय काष्ठ शिल्प परम्परा	मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद	कपिल तिवारी, नवीन शुक्ला
12.	भिलाली (मौखिक साहित्य)	आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी	गजेन्द्र आर्य
13.	भीली (गीत एवं लोकोटियाँ)	आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद का प्रकाशन	मंगल गरवाल
14.	कोरों आना (कोरकू जनजातियों की कथाएं)	आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी	डॉ धर्मेन्द्र पारे
15.	गणचिन्हवाद	जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी	जेम्स जी. फ्रेजर. (अनुवादक- अजय कुमार घोष)
16.	प्रेम गीत (मध्यप्रदेश के जनजातीय प्रेम गीत)	आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी	कपिल तिवारी, नवीन शुक्ला
17.	Forest tribology and anthropology	Scientific publishers	Vinod M. Mhaiske Vinayak K.Patil Satish S Narkhede
18.	जनजातीय भारत	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	डॉ. आर. एन. श्रीवास्तव
19.	मध्यप्रदेश के गोंड राज्य	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	डॉ. सुरेश मिश्र
20.	मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	डॉ. हंसा व्यास
21.	मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	डॉ. शिवकुमार तिवारी
22.	मध्यप्रदेश का इतिहास	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	डॉ. सुरेश मिश्र
23.	मानव	एथनोग्राफीक एण्ड फोक कल्चर सोसाइटी लखनऊ	सुचित्रा विश्वकर्मा
24.	हुनर की जादूगरी	संत रविदास हस्त शिल्प, हथकरघा विकास निगम	
25.	सामान्य अध्ययन	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	आनंद कुमार पाण्डेय ,श्रीमती अर्चना पाण्डेय

18

Chapter

TRIBOLOGY

1.1 सामान्य प्रश्न

1. सही जोड़े बनाएं तथा नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिए [MPPSC Pre 2008]

(A) छिंदवाड़ा	1. भील
(B) मंडला	2. भारिया
(C) झाबुआ	3. गोण्ड
(D) शिवपुरी	4. सहरिया

Code

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	4	1	3
(b)	1	3	2	4
(c)	2	3	1	4
(d)	1	4	2	3

2. निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति म.प्र. की सबसे बड़ी जनजाति है [MPPSC Pre 2003]
   (a) जरावा
   (b) हो
   (c) भील
   (d) संथाल
3. निम्नलिखित में से कौन-सी जनजातियां म.प्र. में पायी जाती है [MPPSC Pre 2003]
   (a) मुण्डा, उरांव, संथाल, हो
   (b) बैगा, सहारिया, गोण्ड, संथाल
   (c) माडिया, भील, गोण्ड, संथाल
   (d) खारिया, माडिया, गौड, उरांव
4. मध्यप्रदेश के किस जिले में जनजातियों की जनसंख्या का प्रतिशत सबसे अधिक है [MPPSC Pre 2003]
   (a) मंडला
   (b) देवास
   (c) झाबुआ
   (d) बालाघाट.
5. गोण्ड जनजाति का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन निम्न में से किसने किया है: [MPPSC State Forest Service 2010]
   (a) प्रोफेसर श्यामाचरण दुबे
   (b) डॉ. आर. के. मुखर्जी
   (c) हाबहाउस
   (d) बेरियर एल्विन
6. निम्न में से कौन-सी जनजाति मध्यप्रदेश में नहीं पाई जाती है [MP Vyapam Assistant Grade 3, 2016 / MPPSC Tax Assistant 2010]
   (a) गोण्ड
   (b) भील
   (c) हल्बा
   (d) टोडा
7. इनमें से कौन-सी जनजाति मध्यप्रदेश में नहीं है [MP Vyapam Combined Assistant Grade 3, 2012]
   (a) गौंड
   (b) भील
   (c) भोटिया
   (d) कोरकू
8. म.प्र. में मान्य अनुसूचित जनजातियों की संख्या है [MP Vyapam ANM 2013, Platoon Commander 2014]
   (a) 46
   (b) 50
   (c) 48
   (d) 51

9. संविधान की किस अनुसूची के मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों कवर किया गया था [MP Vyapam Patwari Exam 2017]
   (a) अनुसूची 5
   (b) अनुसूची 11
   (c) अनुसूची 6
   (d) इनमें से कोई नहीं
10. 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में जनजातियों की जनसंख्या प्रतिशत में कितनी है। [MPPSC SFM SP Exam 2019]
   (a) 20.1%
   (b) 21.1%
   (c) 21.7%
   (d) 23.7%
11. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 164 के अन्तर्गत अनुसूचित जनजातियों के कल्याण हेतु अलग मंत्री नियुक्त किए जाते है। निम्न में से किस या किन राज्य में यह व्यवस्था विद्यमान है। [MPPSC SFM SP Exam 2019]
   (a) मध्य प्रदेश एवं ओडिशा
   (b) केवल मध्य प्रदेश
   (c) केवल ओडिशा
   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
12. मण्डला जिले में कितने जनजातीय खण्ड है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
   (a) 9
   (b) 8
   (c) 10
   (d) 7
13. मध्यप्रदेश में कुल कितनी अनुसूचित जनजाति निवास करती है? [MPPSC Assistant Registrar Examination 2022]
   (a) 46
   (b) 47
   (c) 48
   (d) 49

इसका सही उत्तर 43 है, परंतु MPPSC को जो सही लगता है। वही सही है,क्योंकि लोक सेवा आयोग सुनता तो किसी की नहीं है।

14. निम्न में से कौन-सी जनजाति मध्यप्रदेश की नहीं है [Platoon Commander 2014]
   (a) औनसारी
   (b) कोरकू
   (c) गोण्ड
   (d) भील
15. दि बैगा पुस्तक के लेखक कौन है। [MPPSC Animal Husbandry and Veterinary Science 2021]
   (a) वैरियर एल्विन
   (b) हरीश चन्द्र उप्रेती
   (c) नदीम हस्सन
   (d) मजूमदार एवं मदान
16. मध्यप्रदेश में सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति है
   (a) गोंड
   (b) भील
   (c) मीना
   (d) इनमें से कोई नहीं
17. निम्न में से कौन-से राज्य में सबसे अधिक अनुसूचित जनजाति के लोग निवास करते हैं ? [MP Vyapam Group 2 2017]
   (a) बिहार
   (b) मध्यप्रदेश
   (c) पश्चिम बंगाल
   (d) पंजाब
18. स्वतंत्रता के लिये संघर्ष में निम्नलिखित में से किसने अपना योगदान दिया है। [MP PSC Tax Assistant 2010]
   (a) रानी लक्ष्मीबाई
   (b) राजा शंकर शाह
   (c) रघुनाथ शाह
   (d) ये सभी

1.2 जननांकीय आंकडे

19. मध्यप्रदेश में अधिकतम आदिवासी बहुल जिले हैं [MP Vyapam ANM 2013]
   (a) धार, झाबुआ, मण्डला
   (b) ग्वालियर, मण्डला, धार
   (c) जबलपुर, भोपाल, ग्वालियर

(d) इनमें से कोई नहीं

20. सर्वाधिक अनुसूचित जाति की जनसंख्या प्रतिशत वाले मध्यप्रदेश के जिले का नाम है [MPPSC State Engineering 2014]
(a) उज्जैन
(b) दतिया
(c) सागर
(d) शाजापुर

21. प्रतिशत की दृष्टि से मध्यप्रदेश में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति वाला जिला कौन-सा है [MPPSC Pre 2016]
(a) झाबुआ
(b) रतलाम
(c) बड़वानी
(d) अलीराजपुर

22. मध्यप्रदेश के किस जिले में कुल जनसंख्या में से सर्वाधिक प्रतिशत जनजाति निवास करते हैं। [MPPSC Pre 2000]
(a) बस्तर
(b) मण्डला
(c) बैतूल
(d) झाबुआ

23. भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार .....मध्यप्रदेश की सबसे अधिक घनी आबादी वाला वर्ग है [MP Police Constable 2010]
(a) गोण्ड
(b) कोरकू
(c) भील
(d) बैगा

24. भारतवर्ष का सबसे अधिक आदिवासी जनसंख्या वाला राज्य कौन-सा है [MPPSC Pre 2010]
(a) असम
(b) मध्यप्रदेश
(c) उड़ीसा
(d) बिहार

25. ये मध्यप्रदेश के तीन जिले हैं ..... जिनमें आदिवासी आबादी का 50 प्रतिशत है [MP Vyapam ANM Tranning Selection Test 2016]
(a) धार, मंडला और झाबुआ
(b) रीवा, सीधी और सिंगरौली
(c) बैतूल, छिंदवाड़ा और खण्डवा
(d) नीमच, रतलाम और मंदसौर

26. विशेष जनजाति की जनसंख्या में नंबर एक स्थान पर राज्य है [MP Police Constable 2017, MP Vyapam Patwari exam 2017]
(a) राजस्थान
(b) मध्यप्रदेश
(c) छत्तीसगढ़
(d) उत्तराखंड

27. निम्नलिखित में से सबसे कम अनुसूचित जाति वाला कौन-सा है [MP Vyapam Block Development Officer Exam 2016]
(a) रायसेन
(b) जबलपुर
(c) भिंड
(d) डिंडौरी

28. मध्यप्रदेश के किस जिले में जनजातीय जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत है [MPPSC Pre 2018]
(a) झाबुआ
(b) अलीराजपुर
(c) बड़वानी
(d) डिंडोरी

29. 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत कितना है। [MPPSC Social Work 2021]
(a) 31.2
(b) 41.1
(c) 21.1
(d) 35.1

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

30. 2011 की जनगणना अनुसार मध्यप्रदेश के जनजातियों की साक्षरता दर ..... है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
(a) 50.6%
(b) 49.6%
(c) 48.6%
(d) 51.6%

31. सर्वाधिक जनजाति आबादी वाला जिला है [MPPSC Assistant Registrar 2018]
(a) शहडोल
(b) बालाघाट
(c) मण्डला
(d) झाबुआ

32. इस जिले में आदिवासी नागरिकों की संख्या कम है [MP High Court Grade 2/3 2012]
(a) बालाघाट
(b) श्योपुर
(c) बड़वानी
(d) डिण्डौरी

33. निम्नलिखित में से कौन-सा जिला न्यूनतम अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाले तीन जिलों में नहीं है [MP Vyapam Van Rakshak 2013]
(a) भिण्ड
(b) शाजापुर
(c) दतिया
(d) मण्डला

34. जनगणना 2011 के अनुसार मध्यप्रदेश में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत क्या है [MP Vyapam Grade 3 2016]
(a) 21.1 प्रतिशत
(b) 26.7 प्रतिशत
(c) 24.5 प्रतिशत
(d) 30.0 प्रतिशत

35. निम्नलिखित में से मध्य प्रदेश की कौन सी जनजाति जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी है? [MP PSC 2012]
(a) सहरिया
(b) भील
(c) कोल
(d) भारिया

36. मध्य प्रदेश के किस जिले में जनजातीय जनसंख्या सर्वाधिक प्रतिशत है ? [MP PSC 2003, 2018]
(a) झाबुआ
(b) बड़वानी
(c) अलीराजपुर
(d) डिंडोरी

1.3 गोंड जनजाति का प्राचीन इतिहास

37. निम्नलिखित में से किस लेखक ने रानी दुर्गावती की राजधानी चौरागढ़ की लूट का वर्णन किया है। [MPPSC ADPO 2021]
(a) बरनी
(b) अबुल फज़ल
(c) फैज़ी
(d) फिरदौसी

38. गढा मंडला की प्रसिद्ध रानी का नाम बताइए। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
(a) रानी चेनम्मा
(b) रानी अहिल्याबाई
(c) रानी कमलापति
(d) रानी दुर्गावती

39. गढ़ मण्डला का अंतिम यशस्वी और प्रतापी राजा कौन था। [MPPSC Dental Surgeo Exam 2022]
(a) राजा शाह
(b) विक्रम शाह
(c) शंकर शाह
(d) विष्णु शाह

40. सिंगोरगढ़ का किला मध्यप्रदेश के किस जिले में स्थित है। [MPPSC Dental Surgeo Exam 2022]
(a) सागर
(b) दमोह
(c) जबलपुर
(d) छतरपुर

41. रानी दुर्गावती के पिता का नाम क्या था । [MPPSC DSP_Radio 2020]
(a) दधिवाहन
(b) शालिवाहन
(c) दतिवाहन
(d) बलवाहन

42. गढ़ मण्डला का अंतिम यशस्वी और प्रतापी राजा कौन था। [MPPSC SES 2021]
(a) राजा शाह
(b) विक्रम शाह
(c) शंकर शाह
(d) विष्णु शाह

43. सिंगोरगढ़ का किला मध्यप्रदेश के किस जिले में स्थित है। [MPPSC SES 2021]
(a) सागर
(b) दमोह
(c) जबलपुर
(d) छतरपुर

44. वीरांगना दुर्गावती की शादी निम्न लिखित में से किस गोंड शासक के साथ हुई थी? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) रघुनाथ शाह
(b) चंपत शाह
(c) शंकर शाह
(d) दलपत शाह

45. अकबर के साथ युद्ध करने वाली दुर्गावती ..... की रानी थी। [MPPSC Pre 2010]
(a) मण्डला
(b) मांडू
(c) असीरगढ़ .
(d) रामगढ़

46. सही जोड़े बनाइए तथा नीचे दिये गये कूट में से सही उत्तर चुनिए [MPPSC Pre 2010]

(A) भोज	1. उज्जैन
(B) दुर्गावती	2. विदिशा
(C) समुद्रगुप्त	3. धार
(D) अशोक	4. गोंडवाना

Code

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	3	2	1
(b)	3	4	1	2
(c)	4	3	1	2
(d)	3	4	2	1

47. रानी दुर्गावती संबंधित है [MPPSC Pre 2009]
(a) रीवा से
(b) पत्रा
(c) ग्वालियर
(d) जबलपुर

48. मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में मूल रूप से ..... **का** शासन था [MP Vyapam ANM 2016]
(a) गोंड
(b) मराठों
(c) राजपूतों
(d) मौर्य

49. मध्यप्रदेश के राजगोंड राजाओं की नाबाद राजधानी रामनगर के निर्माता राजा थे [MP Block Development Officers 2016]
(a) खरजी
(b) संग्रामशाह
(c) दलपत शाह
(d) हृदय शाह

50. रानी दुर्गावती इस प्रदेश से संबंधित है [MP Vyapam Police Constable 2017]
(a) पन्ना
(b) ग्वालियर
(c) जबलपुर
(d) रीवा (रेवा)

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

51. निम्नलिखित में से किस संस्कृत काव्य साहित्य की रचना गोण्ड राजा संग्राम शाह ने किया था । [MPPSC ITI Assistant Principal 2023]
(a) संग्रामसाहीय विवेकदीपिका
(b) रसरत्नमाला
(c) हृदय कौतुक
(d) हृदय प्रकाश

52. रानी दुर्गावती ने भूतपूर्व मध्यप्रदेश की निम्नलिखित में से किस रियासत पर शासन किया था? [MP Vyapam Group 4 2018]
(a) गोंडवाना
(b) महेश्वर
(c) बुंदेलखण्ड
(d) ग्वालियर

53. जबलपुर में स्थित महत्वपूर्ण किला है? [MP Vyapam Jail Prahari 2017]
(a) राणा सांगा किला
(b) आमला किला
(c) महाराजा किला
(d) रानी दुर्गावती किला

54. जबलपुर में स्थित महत्वपूर्ण किला,..... है? [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) मदनमहल किला
(b) महाराजा किला
(c) राणा सांगा किला
(d) आमला किला

55. मंडला जिले का ऐतिहासिक किला ..... में है? [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) राम नगर
(b) घुघरी
(c) बिछिया
(d) मवाई

56. देवगढ़ किला किसने बनाया? [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) गोंड राजा-राजा जाराव
(b) चंद्रगुप्त मौर्य
(c) भोपाल का नवाब
(d) सम्राट अशोक

57. दमोह में पहाड़ी किला कहां स्थित है [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) सिंगौरागढ़
(b) बौरबरी
(c) फतेहपुर
(d) असीरगढ़

58. मध्यप्रदेश के किस जिले में गढ़ाकोटा किला है [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) होशंगाबाद
(b) ग्वालियर
(c) रायसेन
(d) सागर

59. निम्नलिखित में से कौन-सा किला हरदा जिले में है [MP Vyapam Patwari 2017, MP SI 2017]
(a) मकड़ई किला
(b) मोहनगढ़ किला
(c) देवगढ़ किला
(d) असीरगढ़ किला

60. उस प्रसिद्ध किले का नाम बताइए जिसे बादल महल के नाम से भी जाना जाता है [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) राहतगढ़ किला
(b) सनोढ़ा किला
(c) रहेली किला
(d) कर्रापुर किला

राहतगढ़ का किला सागर जिले का एक ऐतिहासिक किला है। जो अपनी विशालता और भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। यह किला बीना नदी के किनारे ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। यह किला बहुत बड़े क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इस किले के अंदर आपको मोती महल, रानी महल, **बादल महल,** प्राचीन जलाशय, दरगाह, शिव मंदिर,फांसी घर देखने मिलेगा। राहतगढ़ किले में सबसे पहले चंदेलो और परमार वंश का शासन था। इनके बाद राहतगढ़ किले में गोंड राजा संग्राम सिंह का शासन हुआ। यह किला राजा संग्राम सिंह के 52 गढ़ों में से एक था। महारानी दुर्गावती एवं उनके पुत्र वीर नारायण की

मृत्यु के बाद, यह किला गोंड राजा चंद्र शाह को मिल गया। उसके बाद राजा चंद्र शाह ने यह किला मुगल सम्राट अकबर को दे दिया। 1857 की क्रांति के समय यह किला अंग्रेजों के द्वारा छीन लिया गया। 1857 की क्रांति में सारे विद्रोही आकर इस किले में जमा हुए थे।

61. पुरातत्वीय महत्व वाला स्थान मदन महल किला स्थित [MPPSC Forest service 2010]
(a) धार में
(b) रायसेन में
(c) जबलपुर में
(d) मण्डला में

62. रानी दुर्गावती की समाधि म.प्र. में कहां पर स्थित है [MPPSC Tax Assistant 2010, MP Vyapam Patwari 2017]
(a) शहडोल
(b) सिवनी
(c) दमोह
(d) जबलपुर

63. मध्यप्रदेश में रानी दुर्गावती संग्रहालय, धुआंधार फॉल्स और मदन महल किला …….. के पर्यटन स्थल है [MP Vyapam Group 2 2018]
(a) अमरकंटक
(b) ओंकारेश्वर
(c) जबलपुर
(d) महेश्वर

1.4 गोंड जनजाति

64. किस जनजाति में सेवा विवाह की प्रथा है [MPPSC State Engineering 2014]
(a) गोण्ड
(b) कोल
(c) भील
(d) कोरकू

65. गोंड जाति अपने आपको क्या मानती है। [MPPSC Paper Computer Programmer Exam 2021]
(a) कोयतोर
(b) जनजाति
(c) पिछड़ा वर्ग
(d) आदिवासी

66. …… जनजाति मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी जनजातिय समूह है और सभी जिलों में निवास करते है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
(a) भील
(b) गोंड
(c) कोल
(d) कोरकू

67. कौन-सी जनजाति लोहासुर को अपना देवता मानती है [MPPSC Pre 2016]
(a) गोण्ड
(b) कोरकू
(c) भील
(d) अगरिया

68. गोण्ड द्वारा सुअर की बलि को प्रचलित रूप से कहा जाता है [MP Vyapam ANM Tranning Selection Test 2016]
(a) लरू काज
(b) हलाली
(c) झाबुआ
(d) मरगी

69. जिस जनजाति का मूल पेशा कृषि है, वह है [MP Vyapam ANM Tranning Selection Test 2016]
(a) पनिका और कयओवा
(b) गोण्ड
(c) भील
(d) गुर्जर

70. मध्यप्रदेश में आम जनजाति जिनके लिए गोदना जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है [MP Vyapam ANM Tranning Selection Test 2016]
(a) गोंड
(b) बैगा
(c) कीकर
(d) भील

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

71. जनजातियां, जिनका नाम उन्हें प्रायद्वीपीय भारत के पुराने हिस्से से मिला है [MP Vyapam ANM Tranning Selection Test 2016]
(a) गौड़
(b) कीकर
(c) भील
(d) अंगा

72. मध्यप्रदेश के आदिवासियों में किन महिलाओं को गोधारिन कहा जाता है [MP Vyapam Combined Group 4, Grade 3 Exam 2016]
(a) चिकित्सक
(b) ओझा
(c) सफाई वाली
(d) गुदना कलाकार

73. गौंड़ जनजाति के प्रमुख देवता है [MPPSC State Engineering service pre 2016]
(a) बूढ़ा देव
(b) ठाकुर देव
(c) दूल्हा देव
(d) ये सभी

उपरोक्त प्रश्न का सही उत्तर b विकल्प है, परंतु आयोग के द्वारा इस सही उत्तर विकल्प (d) माना है।

74. निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति लौह शिल्प में निपुण मानी जाती है। [MPPSC ADPO 2021]
(a) अगरिया
(b) कोरकू
(c) बैगा
(d) सहरिया

75. गोण्ड जनजाति के पुजारी किसे कहा जाता है [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017]
(a) इनमें से कोई नहीं
(b) वेवात
(c) ओझा
(d) देवरी

76. गोण्ड जनजाति में दूध लौटावा प्रथा संबंधित है [MP Dairy Federation Exam 2016]
(a) जन्म से
(b) मृत्यु से
(c) विवाह से
(d) तांत्रिक क्रिया से

77. घोटुल प्रथा किस जनजाति में पायी जाती है [MP Dairy Federation Exam 2016]
(a) भील
(b) गोण्ड
(c) कमार
(d) बैगा

78. दादरिया नृत्य किसका नृत्य है [MPPSC Tax Assistant 2012, MP Dairy Federation 2016]
(a) गोंड
(b) भील
(c) सहारिया
(d) बैगा

79. मध्यप्रदेश की गौंड जनजाति से कौन-सा लोकनृत्य संबद्ध है [MP Vyapam Group 2 2017]
(a) कर्मा
(b) गरबा
(c) जवारा
(d) भगोरिया

80. चैत्र उत्सव नृत्य मध्यप्रदेश के किस जनजाति में होता है। [MPPSC Tax Assistant 2010]
(a) गोंड जनजाति में
(b) बंजारा जनजाति में
(c) बैगा जनजाति में
(d) कोरकू जनजाति में

1.5 भील जनजाति

81. भिलाला जनजाति का मूल स्थान निम्नांकित में से किस राज्य में माना जाता है:
(a) मध्यप्रदेश
(b) छत्तीसगढ़

(c) राजस्थान

(d) बिहार

82. भगोरिया मेला किस जाति से संबंधित है [MPPSC Tax Assistant 2012, MPPSC State Engineering 2014]

(a) भील

(b) अगरिया

(c) कोल

(d) बैगा

83. भगोरिया हाट किस जिले में होता हैं [MP Jail Prahari 2010]

(a) ग्वालियर

(b) सतना

(c) झाबुआ

(d) बालाघाट

84. 1857 के विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लेने वाली जनजाति हैं [MP Police Constable 2017, MP Vyapam ANM Tranning Selection Test 2016]

(a) भील

(b) कोरकू

(c) गोण्ड

(d) बैगा

85. भील जनजातियों का समुदाय मूल रूप से ..... है [MP Jail Prahari 2017, MP Vyapam ANM Tranning Selection Test 2016]

(a) कृषक

(b) व्यापारी

(c) शिकारी और योद्धा

(d) खानाबदोश चरवाहे

86. भगोरिया एक है [MP Vyapam ANM Tranning Selection Test 2016]

(a) बसंत त्यौहार है

(b) ग्वालियर के भीतरी भाग की एक जनजाति है।

(c) चंदेल शासकों के कला का एक प्रकार है

(d) मार्गी में स्थित गुफा मंदिर है।

87. मध्यप्रदेश के जनजातीय लोगों द्वारा मनाए जाने वाले भगोरिया हाट महोत्सव का मुख्य आकर्षण क्या है [MP B.A.-B.Ed. Exam 2016]

(a) नृत्य व संगीत का त्यौहार

(b) रंगों का त्यौहार

(c) नृत्य प्रस्तुति

(d) प्रेम का त्यौहार

88. भीलों के मकानों को क्या कहा जाता है। [MPPSC State Engineering service pre 2016]

(a) कू

(b) सू

(c) हू

(d) इनमें से कोई नहीं

89. भीलों के द्वारा की जाने वाली कृषि को क्या कहते हैं। [MPPSC State Engineering service pre 2016]

(a) चिमाता

(b) बैवार

(c) झूमिंग

(d) पढ़त

90. भीलों का निवास स्थल क्या कहलाता है [MP Dairy Federation Exam 2016]

(a) माल्या

(b) आल्या

(c) फाल्या

(d) भिल्ल

91. भगोरिया उत्सव निम्न में से किस क्षेत्र में आयोजित किया जाता है। [MP Vyapam GROUP-1 Exam 2017]

(a) इंदौर

(b) भोपाल

(c) होशंगाबाद

(d) झाबुआ

92. कितने स्थानों पर इस वर्ष भगोरिया उत्सव मनाया गया था । [MP Block Extension Exam 2017]

(a) 34

(b) 32

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

(c) 33

(d) 31

वर्तमान में म.प्र. के पांच जिलो के 176 स्थान पर भगोरिया पर्व का आयोजन किया जाता है।

93. इनमें से कौन सी अलीराजपुर की एक प्रमुख जनजाति है [MP Vyapam Patwari Exam 2017]

(a) भिलाला

(b) खासी

(c) कोरकू

(d) बिरजिया

94. मध्यप्रदेश की किस जनजाति का लोक नृत्य भगोरिया है [MP ANATST Exam 2017]

(a) गोण्ड

(b) भील

(c) बैगा

(d) सहरिया

95. भगोरिया पर्व मध्य प्रदेश के किस जिले में मनाया जाता है ? [MPPSC State Engineering Service 2022]

(a) झाबुआ

(b) भोपाल

(c) देवास

(d) उज्जैन

96. मध्यप्रदेश की निम्नलिखित जनजातियों में से किसकी सांस्कृतिक पहचान भगोरिया नृत्य शैली है। [MP Vyapam Group 4 Exam 2018]

(a) बैगा

(b) सहरिया

(c) भील

(d) गोण्ड

97. मध्य प्रदेश में सर्वाधिक पाई जाने वाली जनजाति कौन-सी है? [MPPSC Pre 2020]

(a) गोण्ड

(b) कोरकू

(c) भील

(d) कोल

98. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है। [MPPSC Animal Husbandry and Veterinary Science 2021]

(a) भगोरिया उत्सव मध्य प्रदेश के भील जनजाति द्वारा मनाया जाता है।

(b) भगोरिया उत्सव मध्य प्रदेश के गौंड जनजाति द्वारा मनाया जाता है।

(c) भगोरिया उत्सव मध्य प्रदेश के कोरकू जनजाति द्वारा मनाया जाता है।

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

99. भीलट बाबा कौन है। [MPPSC Dental Surgeo Exam 2022]

(a) भारिया के प्रमुख देवता

(b) भीलों के प्रमुख देवता

(c) बैगा के प्रमुख देवता

(d) सहरिया के प्रमुख देवता

100. भगौरिया पर्व किस त्योहार से संबंधित है। [MPPSC DSP_Radio 2020]

(a) नव वर्ष

(b) होली

(c) दीपावली

(d) दशहरा

101. भील जनजाति का प्रमुख पर्व है। [MPPSC Section Officer 2021]

(a) भगोरिया

(b) करमा

(c) बिदरी

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

102. भीलट बाबा कौन है। [MPPSC SES 2021]

(a) भारिया के प्रमुख देवता

(b) भीलों के प्रमुख देवता

(c) बैगा के प्रमुख देवता

(d) सहरिया के प्रमुख देवता

103. भैंस संस्कृति (भैंस के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव) पायी जाती है। [MPPSC SFS Main Paper 2019]

(a) भीलों में

(b) कामार में
(c) डेल्की खारिया में
(d) टोडा में

104. भील जनजाति का मुख्य व्यवसाय क्या है? [MPPSC Assistant Registrar Examination 2022]
(a) पशुपालन
(b) चित्रकारी
(c) कृषि
(d) तंत्र विधया

105. रेलो गीत मध्यप्रदेश की किस जनजाति के युवक व युवतियों का बहुत पसंदीदा गीत है [MPPSC Tax Assistant 2010]
(a) मूरिया
(b) मारिया
(c) भील
(d) गोण्ड

106. गोल गधेड़ों उत्सव किस जनजाति से संबंधित है। [MPPSC Dairy Federation 2016]
(a) गोंड
(b) भील
(c) कोरकू
(d) कोल

107. भगोरिया उत्सव किस माह में मनाया जाता है। [MPPSC SFS Main Paper 2019]
(a) दिसम्बर
(b) जून
(c) अक्टूबर
(d) मार्च

1.6 बैगा जनजाति

108. बैगा चक का अधिकांश भाग मध्यप्रदेश के किस जिले में आता है [MPPSC Tax Assistant 2012]
(a) डिण्डौरी
(b) मण्डला
(c) भोटिया
(d) बालाघाट

109. निम्नलिखित में से कौन-सी जनजाति स्वयं को द्रविड़ का वंशज मानती है [MP SI Exam 2017]
(a) भारिया
(b) गोण्ड
(c) भील
(d) बैगा

110. बैगा जनजातिया मुख्य रूप से कहां मिलती है [MP Police Constable 2010]
(a) विंध्य और सतपुड़ क्षेत्र
(b) उज्जैन और जबलपुर जिले
(c) उमरिया और मंडला जिले
(d) मंडला और बालाघाट जिले

111. बूढ़ादेव म.प्र. की किस जनजाति के प्रमुख देवता है [MPPSC Pre 2003]
(a) कोल
(b) भील
(c) भिलाला
(d) बैगा

112. निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति बैगा जनजाति का उप जनजाति नहीं है। [MPPSC Dental Surgeo Exam 2022]
(a) बिझवार
(b) नरोतिया
(c) बाडोया
(d) काठमैना

113. निम्नलिखित में से किस जिले में बैगा विकास अभिकरण नहीं है। [MPPSC SSE 2021]
(a) मण्डला
(b) शहडोल
(c) रायसेन
(d) बालाघाट

प्रदेश में तीन विशेष पिछड़ी जनजाति यथा भारिया, बैगा एवं सहरिया निवासरत हैं।

- सहरिया जनजाति विकास प्राधिकरण : ग्वालियर, (दतिया जिला सहित), श्योपुर (भिण्ड, मुरैना जिला सहित) शिवपुरी,

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

गुना (अशोकनगर जिला सहित)

- बैगा जनजाति विकास प्राधिकरण: मण्डला, बैहर जिला बालाघाट, डिण्डौरी, पुष्पराजगढ़ जिला अनुपपुर, शहडोल, उमरिया
- भारिया जनजाति विकास प्राधिकरण: तामिया जिला छिन्दवाड़ा

114. बैगा परम्परा के अनुसार सृष्टि के निर्माता कौन है। [State Engineering Service 2021]
(a) ठाकुरदेव
(b) इन्द्रदेव
(c) अग्निदेव
(d) सोमदेव

115. बैगाओं में गाँव का पुरोहित कौन होता है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) समरथ
(b) दीवान
(c) देवार
(d) कोटवार

116. बैगाओ में कितने मुख्य गोत्र है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) पाँच
(b) छह
(c) दो
(d) तीन

रसैल ने मुख्य तहः सात बैगा जनजाति बताई है। बिंझवार, भरोतिया, नरोतिया, रायमैला, कटमैना (कोडवंन), गोंडमैना । परंतु MPPSC को जो सही लगता है। वही सही है,क्योंकि लोक सेवा आयोग सुनता तो किसी की नहीं है।

117. मध्य प्रदेश की जनजातियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए [MPPSC Section Officer 2021]
(1) मध्य प्रदेश राज्य की जनसंख्या का 20% से अधिक हिस्सा जनजातियों का है।
(2) बैगा स्वयं को द्रविड़ के वंशज मानते है।
(3) कोल, जो मुख्य रूप से श्रमिक वर्ग के हैं, रीवा, सीधी, सतना और जबलपुर जिलों में पाए जाते है।
(4) संतिया मालवा की एक जनजाति है, जो स्वयं को मूल रूप से राजपूत मानती है।
उपर्युक्त कथनों में से सही का चयन कीजिए
(a) 1 और 2
(b) 1, 2 और 3
(c) 2, 3 और 4
(d) 1. 2. 3 और 4

118. परधौनी किस जनजाति का लोकनृत्य है? [MP Vyapam Jail Prahari 2017]
(a) कोल
(b) कोली
(c) हल्बा
(d) बैगा

119. परधौनी कौन से समुदाय का लोकप्रिय नृत्य रूप है? [MP SI 2017]
(a) गोंड
(b) भील
(c) सहरिया
(d) बैगा

120. बिलमा नृत्य किस जनजाति द्वारा किया जाता है [MP Dairy Federation 2016]
(a) बैगा
(b) गोंड
(c) भील
(d) कंवर

1.7 भारिया जनजाति

121. भारिया जनजाति मध्यप्रदेश के किस जिले में पायी जाती है [MP SI 1997]
(a) बस्तर
(b) रायगढ़
(c) झाबुआ
(d) छिंदवाड़ा

122. कौन-सा क्षेत्र भारिया आदिवासियों के नाम से जाना जाता है [MPPSC Tax Assistant 2012, MPPSC State Engineering 2014]

(a) अन्नकूट
(b) चित्रकूट
(c) पातालकोट
(d) इनमें से कोई नहीं

123. प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पातालकोट घाटी मध्यप्रदेश के किस जिले में स्थित है [MP Vyapam GROUP-1 Exam 2017]
(a) बैतूल
(b) सिवनी
(c) बालाघाट
(d) छिंदवाड़ा

124. अगर घाटी के ऊपर से देखा जाता है तो पातालकोट किस आकार का दिखाई देता है [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017]
(a) आयत
(b) वर्ग
(c) घोड़े की नाल
(d) इनमें से कोई नहीं

125. छिंदवाड़ा में पातालकोट …….. जनजातियों का निवास स्थान है। [MP Vyapam Patwari Exam 2017]
(a) गोण्ड और भारिया
(b) खासी और गारो
(c) सहरिया
(d) कोरकू

126. भारिया जनजाति म.प्र. के कौन से जिले में निवास करती है। [MPPSC AM 2021]
(a) छिंदवाड़ा
(b) मंडला
(c) शहडोल
(d) उमरिया

127. जिला छिन्दवाडा के पातालकोट में निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति निवास करती है। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
(a) भील
(b) कोरकू
(c) भारिया
(d) बैगा

128. छिन्दवाड़ा जिले के पातालकोट की भारिया जनजाति के कृषि देवता कौन है। [MPPSC Paper Computer Programmer Exam 2021]
(a) डोंगरदेव
(b) भीमसेन
(c) भागदेव
(d) कुडोपन

129. निम्नलिखित में से कौन सी नृत्य भारिया जनजाति से संबंधित नही है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) भड़म,सैतम
(b) कर्मा,गेड़ी-डंडार
(c) सैला,अहिराई
(d) दहरा,ददरिया

130. भडम सेतम और सैला किस जनजाति के प्रमुख नृत्य है [MP SI 2017]
(a) भील जनजाति
(b) बैगा जनजाति
(c) भारिया जनजाति
(d) गोंड जनजाति

131. अहिराई नृत्य प्रदर्शन में नर्तकियों के संगत के लिये निम्नलिखित में से कौन से दो वाद्य यंत्र का उपयोग किया जाता है [MP SI 2017]
(a) ढोल और भपंग
(b) ढोल और खोमक
(c) ढोल और झिका
(d) ढोल और टिमकी

1.8 कोरकू जनजाति

132. पंचमढ़ी क्षेत्र में रहने वाले कोरकू जनजाति के लोग कहलाते है [MPPSC State Engineering service pre 2016]
(a) मोवासी
(b) रुमा
(c) बावरिया
(d) बंदोरिया

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

133. कौन सी जनजाति स्वयं को रावण का वंशज मानती है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) भील
(b) गोंड
(c) कोरकू
(d) सहरिया

134. निम्न में से कौन सी कोरकू की उप जनजाति नही है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) नहाल
(b) बोडोय
(c) पटेलिया
(d) बावरिया

135. कोरकू जनजाति वर्ष में कितनी बार जादुई शक्तियों एवं आत्माओ को बलि देकर प्रसन्न करते है? [MPPSC Assistant Registrar Examination 2022]
(a) चार
(b) दो
(c) एक
(d) तीन

136. चटकोरा नृत्य मध्यप्रदेश की किस जनजाति का लोक नृत्य है [MPPSC Assistant Registrar 2018]
(a) भील
(b) सहरिया
(c) कोरकू
(d) गोण्ड

137. आदिम जनजाति कोरकू मध्य प्रदेश के किन जिलों में मुख्यत: पायी जाती है ? [MP PSC 1996]
(a) दक्षिण के जिले
(b) उत्तर-पश्चिम के जिले
(c) पूर्वी जिले
(d) उत्तर-पूर्वी जिले

1.9 सहरिया जनजाति

138. सहारिया जनजाति किस क्षेत्र में अधिक संख्या में निवास करती है [MPPSC Tax Assistant 2012]
(a) मण्डला शहडोल
(b) बुंदेलखण्ड
(c) मुरैना-श्योपुर शिवपुरी
(d) रीवा-सीधी

139. इनमें से मध्यप्रदेश की कौन-सी विशेष जनजाति है [MP Vyapam Block Development Officer Exam 2016]
(a) सहरिया
(b) अगरिया
(c) धनवार
(d) कोल

140. निम्नलिखित में से किस जनजाति को आदर के साथ खुटिया पटेल के रूप में संबोधित किया जाता है। [MPPSC SES 2022]
(a) सहरिया
(b) बैगा
(c) भूमिया
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

141. चम्बल क्षेत्र में रहने वाली विशेष पिछड़ी जनजाति कौन-सी है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) सहरिया
(b) मुरिया
(c) कोरकू
(d) भारिया

142. लहंगी नृत्य किस जनजाति का नृत्य है [MPPSC State Engineering 2014, MP Vyapam Group 2 2017]
(a) भील
(b) कोल
(c) बैगा
(d) सहरिया

1.10 कोल जनजाति

143. मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजाति कौन-सी नहीं [MP Dairy Federation Exam 2016]
(a) कोल
(b) सहरिया

(c) बैगा

(d) भारिया

144. रामायण में निम्नलिखित जनजातियों में से कौन-सी जनजाति का उल्लेख है [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017]

(a) कोल

(b) भील

(c) गोण्ड

(d) उपरोक्त सभी

1.11 आदिवासी सलाहकार परिषद, जनजाति शिक्षा व योजना, पुरस्कार

145. जनजातिय सलाहकार परिषद की व्यवस्था भारतीय संविधान की निम्नलिखित में से किस अनुसूची में है। [MPPSC SFM SP Exam 2019]

(a) पॉंचवी अनुसूची

(b) छठी अनुसूची

(c) सातवी अनुसूची

(d) आठवी अनुसूची

146. संविधान के किस अनुच्छेद में जनजातीय सलाहकार परिषद की स्थापना का प्रावधान किया गया है। [MPPSC SFS Main Paper 2019]

(a) 365

(b) 340

(c) 244

(d) 342

147. ..... सदस्यों की मध्यप्रदेश में जनजातीय सलाहकार परिषद (टी.ए.सी.) बनी है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]

(a) 21

(b) 20

(c) 22

(d) 19

1.12 जनजाति शिक्षा, पुरुस्कार एवं उनके लिए संचालित कल्याणकारी योजना

148. मध्य प्रदेश सरकार की संत रविदास स्वरोजगार योजना का संचालन निम्नलिखित में से किसके द्वारा किया जाता है। [MPPSC DSP_Radio 2020]

(a) अनुसूचित जनजाति कल्याण निगम

(b) अनुसूचित जाति वित्त विकास निगम

(c) पिछड़ा वर्ग विकास निगम

(d) जन कल्याण वित्त निगम

149. मध्यप्रदेश सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना की अनुशंसा 2022 में किस तिथि पर की । [MPPSC DSP_Radio 2020]

(a) 6 अगस्त

(b) 9 सितम्बर

(c) 6 सितम्बर

(d) 9 अगस्त

150. वर्ष 2022 में मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय आदिवासी गौरव दिवस किस स्थान पर मनाया गया। [MPPSC Paper Computer Programmer Exam 2021]

(a) भोपाल

(b) इंदौर

(c) झाबुआ

(d) शहडोल

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू , 15 Nov 2022 को दोपहर करीब दो बजे मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय आदिवासी गौरव दिवस के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में भाग लेने के लिए शहडोल के लालपुर आएगी। प्रदेश सरकार आदिवासी गौरव दिवस पर प्रदेश में पेसा अधिनियम लागू करने जा रही है। राष्ट्रपति पेसा अधिनियम के कार्यान्वयन की भी अध्यक्षता करेंगी।

151. निम्न में से किस राज्य में जनजातिय उपयोजना की अवधारणा लागू की गयी है। [MPPSC SFM SP Exam 2019]

(a) हरियाणा

(b) पंजाब

(c) मध्य प्रदेश

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

संविधान के अनुच्छेद 275 (1)के अंतर्गत जनजातीय उपयोजन और अनुदान का वर्णन है।

152. आकांक्षा योजना संबंधित है। [MPPSC SSE 2020]
   (a) अनुसूचित जनजातीय छात्रों को प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं हेतु कोचिंग देने से
   (b) अनुसूचित जनजातीय छात्रों को खेल हेतु कोचिंग देने से
   (c) अनुसूतिच जनजातीय छोत्रों में उद्यमिता बढ़ाने हेतु
   (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

153. देवी अहिल्या सम्मान पुरुस्कार निम्न में से किस क्षेत्र से जुड़ी महिलाओ को दिया जाता है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) लोककला,आदिवासी कला
   (b) दलित साहित्य
   (c) लिंग समानता
   (d) बलिका शिक्षा

154. मध्यप्रदेश में जनजाति कल्याण विभाग जनजातीय बच्चों को शिक्षा की सुविधा हेतु कौन सी योजनाओं को चलाता है [MPPSC Tax Assistant 2010]
   (a) पाठशालाएं
   (b) छात्रवृत्तियां
   (c) छात्रावास
   (d) ये सभी

155. आकांक्षा योजना संबंधित है [MPPSC SSE 2020]
   (a) अनुसूचित जनजातीय छात्रों को प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं हेतु कोचिंग देने से
   (b) अनुसूचित जनजातीय छात्रों को खेल हेतु कोचिंग देने से
   (c) अनुसूचित जनजातीय छात्रों में उद्यमिता बढ़ाने हेतु
   (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

156. मध्य प्रदेश सिकल सेल अभियान का उद्देश्य जनजातीय समुदायों में किसकी जागरूकता का प्रसार करना है। [MPPSC ADPO 2021]
   (a) सिकल सेल अनीमिया
   (b) थैलेसीमिया
   (c) हीमोग्लाबिनोपैथीस
   (d) उपर्युक्त सभी

157. सिकल सेल एनीमिया मिशन 2047 का शुभारंभ किस राज्य से किया गया है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
   (a) मध्यप्रदेश
   (b) छत्तीसगढ
   (c) झारखंड
   (d) राजस्थान

158. प्रोजेक्ट आकांक्षा की शुरूआत मध्यप्रदेश के किस जिले में की गई है? [MP Vyapam ITI TO 2016]
   (a) डिंडोरी
   (b) मंडला
   (c) रतलाम
   (d) झाबुआ

159. मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योनजा कब प्रारंभ की गयी [MPPSC State Engineering Pre 2016]
   (a) जनवरी 2013
   (b) अप्रैल 2008
   (c) फरवरी 2014
   (d) इनमें से कोई नहीं

160. ज्ञानदूत योजना मध्यप्रदेश सरकार ने कौन-से शहर में शुरू की थी [MP Vyapam Jail Prahari 2017]
   (a) धार
   (b) सागर
   (c) दतिया
   (d) रतलाम

161. प्रोजेक्ट आकांक्षा मध्यप्रदेश के किस जिले में आरंभ किया गया है [MP Vyapam Group 2 2017]
   (a) अनूपपुर
   (b) इंदौर
   (c) सतना
   (d) डिंडौरी

162. मध्यप्रदेश के जनजातियों में ..... यह सामान्य स्वास्थ्य समस्या है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
   (a) अस्थमा
   (b) सिकल सेल एनीमिया

(c) मलेरिया

(d) इनमें से कोई नहीं

163. राज्य द्वारा शुरू की गई आनंदम योजना की शुरूआत किसकी सहायता के लिए की गई है [MP Vyapam Patwari 2017]

(a) उद्यमियों

(b) विकलांग

(c) एथलीट

(d) गरीब

164. मध्य प्रदेश शासन का 'देवी अहिल्या बाई सम्मान' (देवी अहिल्या बाई अवार्ड) उन महिलाओं को दिया जाता है, जो के क्षेत्र में श्रेष्ठ होती है| [PEB Patwari Exam. 2018]

(a) जनजातीय, सार्वजनिक और पारंपरिक कलाओं

(b) शिक्षा.

(c) थिएटर

(d) समाज सेवा

165. मध्य प्रदेश सरकार का 'राष्ट्रीय देवी अहिल्या बाई सम्मान' उन महिलाओं को दिया जाता है जो क्षेत्र में श्रेष्ठ होती है: [PEB Patwari Exam 2018]

(a) जनजातीय और लोक कलाओ

(b) शिक्षा

(c) समाज सेवा

(d) थियेटर

166. मध्य प्रदेश का तुलसी पुरस्कार किस वर्ष में स्थापित हुआ था ? [Quality Controller and other Equivalent Posts 2018]

(a) 1982-83

(b) 1983-84

(c) 1981-82

(d) 1984-85

167. मध्य प्रदेश शासन का 'तुलसी सम्मान' निम्नलिखित में से किस क्षेत्र के लिए दिया जाता है ?[Quality Controller and other Equivalent Posts 2018]

(a) सामाजिक कार्य

(b) लोक कलाएं

(c) साहित्य

(d) संगीत

1.13 आदिवासी शोध केन्द्र एवं संग्रहालय

168. आदिवासियों की बेलियों में संवाद करने एवं सूचनाएँ प्रसारित करने वाले सामुदायिक रेडियो का नाम क्या है। [MPPSC ADPO 2021]

(a) अरूणिमा

(b) वन्या

(c) संवेदना

(d) नवजीवन

169. मध्य प्रदेश में प्रथम भील सामुदायिक रेडियो केन्द्र कहॉ प्रारंभ किया गया है। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]

(a) नरसिंहपुर

(b) भाबरा

(c) महू

(d) सैलाना

अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की 105वीं जयंती के मौके पर उनकी याद में मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शनिवार को दुनिया के पहले भीली सामुदायिक रेडियो केंद्र का लोकार्पण किया। मध्य प्रदेश में भील के लिए सामुदायिक रेडियो केंद्र नालछा में भी है. यहां भीली बोली में कार्यक्रम प्रसारित होते हैं.

सामुदायिक रेडियो स्टेशन (सीआरएस) कम शक्ति वाले रेडियो स्टेशन होते हैं। इन्हें स्थानीय समुदायों द्वारा स्थापित और संचालित किया जाता है। ये सार्वजनिक सेवा रेडियो प्रसारण और वाणिज्यिक रेडियो से अलग होते हैं।

भारत में वर्तमान में 372 सामुदायिक रेडियो स्टेशन हैं। ये किसान, आदिवासी, तटीय समुदायों, जातीय अल्पसंख्यकों और विशेष हितों की सेवा करते हैं।

170. मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय किस शहर में अवस्थित है। [MPPSC SSE 2020]

(a) छिन्दवाड़ा

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

(b) इंदौर
(c) भोपाल
(d) रतलाम

171. इन्दिरा गांधी ट्राईबल विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश के किस शहर में स्थित है। [MPPSC SSE 2021]
(a) महेश्वर
(b) अमरकंटक
(c) मुरैना
(d) दतिया

172. आई. सी. एम. आर. द्वारा स्थापित राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान …….. स्थित है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
(a) भोपाल
(b) जबलपुर
(c) इंदौर
(d) ग्वालियर

173. श्री बादल भोई राज्य आदिवासी संग्रहालय स्थित है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]
(a) रीवा
(b) बालाघाट
(c) छिन्दवाड़ा
(d) मण्डला

174. मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय किस शहर में अवस्थित है ? [MPPSC SSE 2020]
(a) छिन्दवाड़ा
(b) भोपाल
(c) इंदौर
(d) रतलाम

175. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय का मुख्यालय कहां है [MP Vyapam Labour Inspectors 2017]
(a) जबलपुर
(b) इंदौर
(c) भोपाल
(d) अमरंकटक

176. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातिय विश्वविद्यालय की स्थापना 2007 के एक अधिनियम द्वारा किस जिले में की गई थी [MP Vyapam Jail Prahari 2017]
(a) अशोक नगर
(b) दतिया
(c) भोपाल
(d) अनूपपुर

1.13 स्वतंत्रता संग्राम और जनजाति सेनानियों का योगदान

177. टंट्या भील ने किस प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से आक्रमण की गोरेल्ला युद्ध शैली सीखी थी। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
(a) तात्या टोपे
(b) नाना साहेब पेशवा
(c) कुंवर सिंह
(d) शंकर शाह

178. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पिता पुत्र की सही जोड़ी चुनिए। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
(a) शंकर शाह – भभूत सिंह
(b) शंकर शाह – रघुनाथ शाह
(c) रघुनाथ शाह – माले राव
(d) नाना साहिब – शंकर शाह

179. मध्य प्रदेश में वर्तमान डिंडौरी जिले का रामगढ़ गॉव, 1857 के विप्लव के समय विद्रोह का एक केन्द्र था। उस विद्रोह के अगुवा कौन थे। [MPPSC DSP_Radio 2020]
(a) रानी दुर्गावती
(b) रानी अवन्ती बाई
(c) गरूल सिंह
(d) विजय सिंह

180. मध्य प्रदेश में वर्तमान डिंडौरी जिले का रामगढ़ गॉव, 1857 के विप्लव के समय विद्रोह का एक केन्द्र था। उस विद्रोह के अगुवा कौन थे। [MPPSC Section Officer 2021]
(a) रानी दुर्गावती
(b) रानी अवन्ती बाई
(c) गरूल सिंह

(d) विजय सिंह

181. टंट्या भील का वास्तविक नाम क्या था। [MPPSC SSE 2020]
(a) टांटिया
(b) गणपत
(c) बिजनिया
(d) टण्ड्रा

182. निम्न में से कौन सा कथन म.प्र. में स्वतन्त्रता आन्दोलन के सम्बन्ध में असत्य है। [MPPSC SSE 2021]
(a) खजा एवं भीमा नायक भील नेता थे, जिन्होने ब्रिटिश सत्ता के विरद्व सघर्ष किया।
(b) स्वतन्त्रता सेनानी शंकरशाह गढ़ा मण्डला राज्य के थे।
(c) रामगढ़ के झूजार सिंह के पुत्र देवनाथ सिंह ने ब्रिटिश सत्ता के विरद्व सघर्ष किया था।
(d) सिपाही बहादुर सरकार की स्थापना इन्दौर में की गई थी।

183. निम्न लिखित में से कौन भारतीय आदिवासियों के रॉबिनहुड़ के नाम से प्रसिद्ध है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) दलपत शाह
(b) विरसा मुंडा
(c) टंटया भील
(d) रघुनाथ शाह

184. अंग्रेजों के विरुद्ध भीलों द्वारा क्रांति प्रारंभ की गई थी [MPPSC Pre 2010]
(a) मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र में
(b) मध्यप्रदेश एवं बिहार में
(c) बिहार एवं बंगाल में
(d) बंगाल एवं महाराष्ट्र में

185. निम्नलिखित भारतीयों में से किसे रॉबिनहुड के नाम से जाना जाता है [MP SI 2017]
(a) टंट्या भील
(b) काजर सिंह
(c) भवानी प्रसाद मिश्रा
(d) ताना भगत

186. टंट्या भील का वास्तविक नाम क्या था। [MP Vyapam Group 4 2018]
(a) टांटिया
(b) गणपत
(c) बिजनिया
(d) टुण्ड्रा

187. बुन्देला विद्रोह के नायम, हीरापुर के राजा हिरदे शाह को किस गवर्नर जनरल के कार्यकाल में गिरफ्तार किया गया था। [MPPSC ITI Assistant Principal 2023]
(a) लॉर्ड हेस्टिंग्स
(b) लॉर्ड एलेनबोरो
(c) लॉर्ड डलहौजी
(d) इनमें से कोई नहीं

188. जंगल सत्याग्रह सर्वप्रथम मध्य प्रदेश के किस जिले में हुआ था। [MPPSC ITI Assistant Principal 2023]
(a) रीवा
(b) खण्डवा
(c) सिवनी
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

189. निम्नलिखित में से कौन से स्वतंत्रता सेनानी / सेनानियों का जन्म मध्यप्रदेश में हुआ था [MP BA. – B.Ed. 2017]
(a) चंद्रशेखर आजाद
(b) टंटिया भील
(c) उपरोक्त दोनों
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

1.14 जनजाति कला एवं उनसे संबधित कलाकार

190. आनंद सिंह श्याम एवं धनइया बाई कलाकारों का संबंध निम्नलिखित में से किस कला से है। [MPPSC SSE 2022]
(a) ढोकरा कला
(b) गोण्ड चित्रकला
(c) पिथौरा चित्रकला
(d) बाघ प्रिंटिग

191. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्रसिद्ध ढोकरा कला के लिए सही नहीं है। [MPPSC SSE 2022]

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

(a) यह कला बैतूल की भारेवा आदिवासी समुदाय से संबंधित है।
(b) यह एक अलौह धातु ढलाई कला है।
(c) यह विवाह समारोह से जुड़ी एक सजावटी कपड़ा कला है।
(d) सभी कथन सही है।

192. श्रीमती दुर्गा बाई व्याम किस जनजातीय कला से संबंधित है। [MPPSC SSE 2021]
(a) गोंड शैली
(b) भील शैली
(c) बैगा शैली
(d) सहरिया शैली

193. कंघी शिल्प निम्न में से किस जनजाति से संबंधित है [MP Dairy Federation Exam 2016]
(a) भील
(b) गोण्ड
(c) बंजारा
(d) कोरकू

कंघी निर्माण का श्रेय मूलतः बंजारा जाति को दिया जाता है। परंतु कंघी निर्माण का कार्य मुरिया जनजाति के द्वारा भी किया जाता है। मुरिया जनजातियों में, लड़के लड़कियों को उनकी पसंद की लकड़ी या पीतल की कंघी उपहार में देते हैं। कंघी के ज़रिए, लड़की की स्थिति का पता चलता है। तम्बाकू रखने के केस की तरह भी काम करती है। कंघी प्रेम और आपसी संबंधों को दर्शाती है।

194. पद्मश्री भूरी बाई किस लिए प्रसिद्ध है ? [MPPSC SSE 2020]
(a) चित्रकारी
(b) नृत्य
(c) संगीत
(d) लेखन

195. तीजनबाई किसके लिए प्रसिद्ध है [MPPSC State Engineering 2014]
(a) ठुमरी
(b) दादरा
(c) पंडवानी
(d) कोलदहका

तीजनबाई (जन्म- 24 अप्रैल 1956) भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के पंडवानी लोक गीत-नाट्य की पहली महिला कलाकार हैं। देश-विदेश में अपनी कला का प्रदर्शन करने वाली तीजनबाई को बिलासपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी लिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है।

196. संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क मध्य प्रदेश में कहाँ अवस्थित है ? [MPPSC State Engineering Service 2022]
(a) भोपाल
(b) शाजापुर
(c) छिंदवाड़ा
(d) नरसिंहपुर

197. निम्न में से कौन-सा मध्यकालीन शहर 'छींट' नामक छपे हुवे सूती कपड़े के लिए प्रसिद्ध था ? [MPPSC SSE 2021]
(a) माण्डू
(b) सिरोंज
(c) धार
(d) रायसेन

मध्यकालीन शहर सिरोंज, मुद्रित सूती कपड़े के लिए प्रसिद्ध था, इसे चादर कहा जाता था। छींट, एक तरह का सूती कपड़ा होता है, जिस पर रंगबंधकों (मोर्डेंट और रेसिस्ट) का इस्तेमाल किया जाता है ताकि कपड़े का रंग पक्का रहे. छींट, हजारों साल पहले आधुनिक भारत और पाकिस्तान के इलाकों में बनाया गया था। यह लोकसंस्कृति व लोकजीवन का पर्याय रहा था। भारत में मुद्रित सूती कपड़े को चिंट्ज़ कहा जाता था। यह हिंदी शब्द छींट से लिया गया शब्द है जिसका अर्थ है छोटे और रंगीन फूलों के डिज़ाइन वाला कपड़ा चिंट्ज़ की उत्पत्ति गोलकोंडा, हैदराबाद में हुई थी. यह 16वीं शताब्दी में भारत में उभरा. इसमें आमतौर पर हल्के या सादे सफेद सूती पृष्ठभूमि पर रंगीन, वुडब्लॉक-मुद्रित, चित्रित, चमकीला या दागदार डिज़ाइन होते हैं। चिंट्ज़ का इस्तेमाल आंतरिक सज्जा में होता था। यह बिस्तर कवर, रजाई और पर्दे के लिए लोकप्रिय था। 1498 में वास्को डी गामा के सफलतापूर्वक भारत के कालीकट पहुंचने के बाद, यह कपड़ा यूरोप में जाना जाने लगा।

198. भैरवगढ़ क्यों प्रसिद्ध है ? [MPPSC State Forest Service Main 2020]
(a) काष्ठ कार्य के लिए
(b) शीशा उद्योग के लिए
(c) वस्त्र उद्योग के लिए
(d) मूर्तिकला उद्योग के लिए

भैरवगढ़ बाटिक प्रिंट की प्राचीन कला के लिए प्रसिद्ध है. इस प्रिंट की खासियत है कि इसमें कपड़ों पर मोम को पिघलाकर हाथ से प्रिंटिंग की जाती है। भैरवगढ़ प्रिंट को वाणिज्य मंत्रालय से जीआई टैग मिला है

199. 'भीली गुड़िया' का केन्द्र निम्नलिखित में से किस जिले में स्थित है ? [MPPSC SFM 2021]
(a) धार
(b) झाबुआ
(c) मंडला
(d) डिंडोरी

200. पिथौरा चित्रकला किस जनजाति से संबंधित है ? [MPPSC SFM 2021]
(a) कोल
(b) सहरिया
(c) गोंड
(d) भील

201. जोबट के भील किस प्रकार की दरी बनाते है। [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017]
(a) ऊनी दरियां
(b) प्लास्टिक दरियां
(c) धागा दरियां
(d) पुंजा दरियां

202. पिथौरा चित्रकला किस जनजाति से संबंधित है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) कोल
(b) सहरिया
(c) गोंड
(d) भील

1.15 जनजातियों से संबधित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

203. उजबन जनजातीय संस्कार संबंधित है । [MPPSC ADPO 2021]
(a) जन्म संस्कार से
(b) विवाह संस्कार से
(c) नामकरण संस्कार से
(d) दाहसंस्कार से

इस परंपरा को एंडोकैनिबेलिज्म कहा जाता है। दक्षिण अमेरिकी स्वदेशी संस्कृतियां, जैसे कि मेयोरुना लोग, अतीत में एंडोकैनिबिलिज्म का अभ्यास करते थे। इस परंपरा का पालन करने के लिए इस जनजाति के लोग अपने परिवार के मृतक शख्स का मांस खाते हैं। इस जनजाति में किसी शख्स की मौत हो जाती है, तो उसके शव को पत्तों और दूसरी चीजों से ढक कर रख दिया जाता है। इसके बाद जो शरीर बच जाता है उसे जला दिया जाता है।तथा राख का सूप बनाकर पिया जाता है।

204. कंवार जनजाति म.प्र. के किस जिले में पाई जाति है। [MPPSC AM 2021]
(a) बालाघाट
(b) मण्डला
(c) सिंगरौली
(d) शहडोल

205. मामुलिया त्योहार मुख्यत: किसके द्वारा मनाया जाता है। [MPPSC Animal Husbandry and Veterinary Science 2021]
(a) भील जनजाति
(b) कुँवारी कन्याओं
(c) विवाहित महिलाओं
(d) गोंड जनजाति

206. देशोला बेंगा आदिवासी त्योहार है। [MPPSC dental 2021]
(a) बसंत उत्सव
(b) ग्रीष्म उत्सव
(c) शिशिर उत्सव
(d) हेमन्त उत्सव

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

207. निम्न में से कौन सा सुमेलित नहीं है। [MPPSC Section Officer 2021]

जनजाति	उप जनजाति
(a) गोंड	नगारची
(b) भील	बरेला
(c) बैगा	बिझवार
(d) भारिया	रोहिया

208. निम्नलिखित में से किस विकल्प में जनजाति का नाम वहाँ प्रचलित युवा गृह के नाम से सुमेलित नहीं है। [MPPSC SFM SP Exam 2019]

जनजाति	युवा गृह
(a) माडिया	घोटुल
(b) मुण्डा	गतिओरा
(c) भुइया	रंग – भंग
(d) उरांव	धुमकोरिया

209. निम्नलिखित में से किस विकल्प में जनजाति का नाम और उसमें प्रचलित नृत्य का नाम सुमेलित नहीं है। [MPPSC SFS Main Paper 2019]

नृत्य	जनजाति
(a) भगोरिया	भील
(b) परधौनी	बेगा
(c) रीना	गोंड
(d) गोचो	भीलाला

210. जनजातीय जीवन में गोटुल प्रतिनिधित्व करता है। [MPPSC SFS Main Paper 2019]

(a) क्षेत्रीय देवता का

(b) विवाह के स्वरूप का

(c) युवा संगठन का

(d) परम्परावादी नेता का

211. देशौला बोंगा आदिवासी त्योहार है। [MPPSC Social Work 2021]

(a) बसंत उत्सव

(b) ग्रीष्म उत्सव

(c) शिशिर उत्सव

(d) हेमन्त उत्सव

सरहुल पर्व को 'देशोला बोंगा' के नाम से भी जाना जाता है।

यह आदिवासियों का सबसे बड़ा त्योहार है. इसे झारखंड के मुंडा, उरांव और संताल जनजातियों के लोग अलग-अलग नामों से मनाते हैं। मुंडा इसे सरहुल, उरांव, खद्दी और संताल बाहा पर्व कहते हैं।

सरहुल पर्व चैत्र शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है।

यह पर्व नए साल की शुरुआत का प्रतीक है। इस पर्व पर पेड़ और प्रकृति के अन्य तत्त्वों की पूजा होती है।

इस दिन से ही आदिवासी समाज कृषि का कार्य शुरू करते हैं। इस दिन से ही गेहू की नई फसलों की कटाई का काम शुरू किया जाता है।

212. ..... यह एक महत्वपूर्ण पहचानने योग्य जनजातीय ग्राम समाज का आवासीय नमूने का पारिस्थितिक इकाई है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]

(a) हैमलेट

(b) क्लस्टर

(c) डिफ्यूजड

(d) होमस्टेड

हैमलेट लोगों द्वारा कब्जा किए गए अथवा बिखरे हुए घरों से बना है जो खेती, शिकार, और मछली पकड़ने जैसी प्राथमिक गतिविधियों में कार्यरत होते है। हैमलेट बस्ती एक दूसरे से शारीरिक रूप से अलग कई इकाइयों में खड़ित होती है।

213. जनजातियॉ वनों के निश्चित पौधे और पशु की रक्षा करते है क्योंकि [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]

(a) खाते हैं

(b) पालन पोषण करते हैं

(c) साक्षरता

(d) पूजा करते हैं

214. पांडो, भूमिया और भुईहार ..... जनजाति की प्रमुख उपजातियॉ है। [MPPSC State Forest Service Main Examination 2020]

(a) गोण्ड
(b) मारिया
(c) कोल
(d) बैगा

215. अगरिया जनजाति की मुख्य आजीविका क्या है? [MPPSC State Forest Service Main Examination 2021]
(a) लोहा गलाना
(b) खेती करना
(c) मछली पकड़ना
(d) कृषि उपकरण एवं औजार बनाना

216. मध्यप्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग के अशासकीय सदस्य,कितने वर्ष की अवधि के लिए नियुक्त होते है? [MPPSC Assistant Registrar Examination 2022]
(a) 3 वर्ष
(b) 4 वर्ष
(c) 5 वर्ष
(d) 6 वर्ष

मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग के गठन को 24 मई 1995 को राज्यपाल की अनुमति प्राप्त हुई। आयोग में एक अध्यक्ष एवं दो अशासकीय सदस्य होते हैं। इनकी नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा की जाती है। आयुक्त,अनुसूचित जनजाति विकास आयोग के पदेन सदस्य हैं। आयोग का प्रत्येक अशासकीय सदस्य तीन वर्ष की अवधि के लिए पद धारण करता है।

217. कौन-सी जनजाति वन्य प्राणियों के शिकार एवं अन्य अपराधों के लिए अधिक जानी जाती है [MPPSC Tax Assistant 2012]
(a) पारधी
(b) अगरिया
(c) कोरकू
(d) इनमें से कोई नहीं

218. कोरबा जनजाति की पंचायत को कहते है [MP Dairy Federation Exam 2016]
(a) मैयारी
(b) मैक्स
(c) रोकरी
(d) रासा

219. हल्बा जनजाति का मुख्य निवास जिला है। [MP Dairy Federation Exam 2016]
(a) रीवा
(b) बालाघाट
(c) सीधी
(d) जबलपुर

220. निम्नलिखित में से कौन-सी मध्यप्रदेश की एक जनजाति नहीं है [MP Vyapam Labour Inspector Exam 2017]
(a) गोण्ड
(b) कोम
(c) भील
(d) बैगा

221. अबूझमाड़िया जनजाति मध्यप्रदेश के किस जिले में पायी जाती है [MP Vyapam Labour Inspector Exam 2017]
(a) खंडवा
(b) रीवा
(c) इंदौर
(d) छिंदवाड़ा

222. अगरिया जनजाति अपने ..... के लिये जानी जाती है। [MPPSC ITI Assistant Principal 2023]
(a) सुपारी शिल्प
(b) काष्ठ शिल्प
(c) मृत्तिका शिल्प
(d) लौह शिल्प

223. मध्य प्रदेश की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति है- [MP PSC 1990]
(a) गोंड
(b) भील
(c) कोरबा
(d) ओरांव

224. मध्य प्रदेश में निम्नलिखित में से कौन सी अनुसूचित जनजाति पाई जाती है ? [MP PSC 1993]
(a) संथाल

© Hornbill classes 07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

(b) लुशाई

(c) माडिया

(d) अनगामी

225. सुमेलित कीजिए –? [MP PSC 1994]

(A) घोटुल	1. भील जनजाति
(B) भगोरिया हाट	2. . बस्तर की मुड़िया जनजाति
(C) बेवार	3. बैगा चक के बैगाओं द्वारा की जाने वाली परम्परागत चलित खेती
(D) कर्मा	4. पूर्वी मध्य प्रदेश की जनजातियों में प्रचलित नृत्य और लोकगीत

Code

	A	B	C	D
(a)	4	1	2	3
(b)	3	4	1	2
(c)	2	3	4	1
(d)	1	2	3	4

226. निम्नलिखित जनजातियों को उनके स्थानों से सुमेलित कीजिए- [MP PSC 1995]

(A) मण्डला	1. कोरबा
(B) झाबुआ	2. भोटिया
(C) बस्तर	3. भील
(D) रायगढ़	4. बैगा

Code

	A	B	C	D
(a)	4	1	2	3
(b)	3	4	1	2
(c)	2	3	4	1
(d)	1	2	3	4

227. सुमेलित कीजिए- [MP PSC 1999]

(A) पहाड़ी कोरबा	1. मण्डला
(B) बैगा	2. जसपुर
(C) मारिया	3. ग्वालियर
(D) सहरिया	4. पातालकोट (छिन्दवाड़ा)

Code

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	1	2	3	4
(c)	4	3	2	1
(d)	3	4	1	2

228. निम्नलिखित में से कौन-सी जनजाति मध्य प्रदेश में है? [MP PSC Special 2003]

(a) जरावा

(b) हो

(c) भील

(d) सन्थाल

229. निम्नलिखित में से कौन-सी जनजातियां मध्य प्रदेश में पाई जाती है? [MP PSC Special 2003]

(a) मु.डा, उरांव, सन्थाल, हो

(b) वैगा, सहरिया, गॉड, कोल

(c) माड़िया भील, गोंड, सन्थाल

(d) खारिया, माड़िया गोंड, उरांव

230. रानी अबंतीबाई का संबंध कहां से है।

(a) रामगढ़, मण्डला

(b) जबलपुर

(c) कटनी

(d) इनमें से कोई नहीं

ANSWER KEY

1. c	2. c	3. b	4. c	5. a	6. d	7. c	8. a	9. a	10. b	11. a	12. a
13.	14. a	15. a	16. b	17. b	18. d	19. a	20. a	21. d	22. d	23. c	24. b
25. a	26. b	27. d	28. b	29. c	30. a	31. d	32. b	33. d	34. a	35. b	36. c
37. b	38. d	39. c	40. b	41. b	42. c	43. b	44. d	45. a	46. d	47. d	48. a
49. d	50. c	51. b	52. a	53. d	54. a	55. a	56. a	57. a	58. d	59. a	60. a
61. c	62. d	63. c	64. a	65. a	66. b	67. d	68. a	69. b	70. a	71. a	72. d
73. b	74. a	75. c	76. c	77. b	78. a	79. a	80. a	81. b	82. a	83. c	84. a
85. c	86. a	87. d	88. a	89. a	90. c	91. d	92. a	93. a	94. b	95. a	96. c
97. c	98. a	99. b	100. b	101. a	102. b	103. a	104. c	105. c	106. b	107. d	108. a
109. d	110. d	111. d	112. c	113. c	114. a	115. c	116.	117. d	118. d	119. d	120. a
121. d	122. c	123. d	124. c	125. a	126. a	127. c	128. b	129. d	130. c	131. d	132. d
133. c	134. c	135. b	136. c	137. a	138. c	139. a	140. a	141. a	142. d	143. a	144. d
145. a	146. c	147. b	148. b	149. c	150. d	151. c	152. a	153. a	154. d	155. a	156. a
157. a	158. a	159. b	160. a	161. d	162. b	163. d	164. a	165. a	166. c	167. b	168. b
169. b	170.a,c	171. b	172. b	173. c	174. b	175. d	176. d	177. a	178. b	179. b	180. b
181. a	182. d	183. c	184. a	185. a	186.a,d	187. b	188. c	189. c	190. b	191.c,d	192. a
93. c	194. a	195. c	196. a	197. b	198. c	199. b	200. d	201. d	202. d	203. d	204.b,d
205. b	206. a	207. d	208. c	209. d	210. c	211. a	212. a	213. d	214. b	215.a,d	216. a
217. a	218. a	219. b	220. b	221. d	222. d	223. b	224. c	225. b	226. c	227. a	228. c
229. b	230. a										

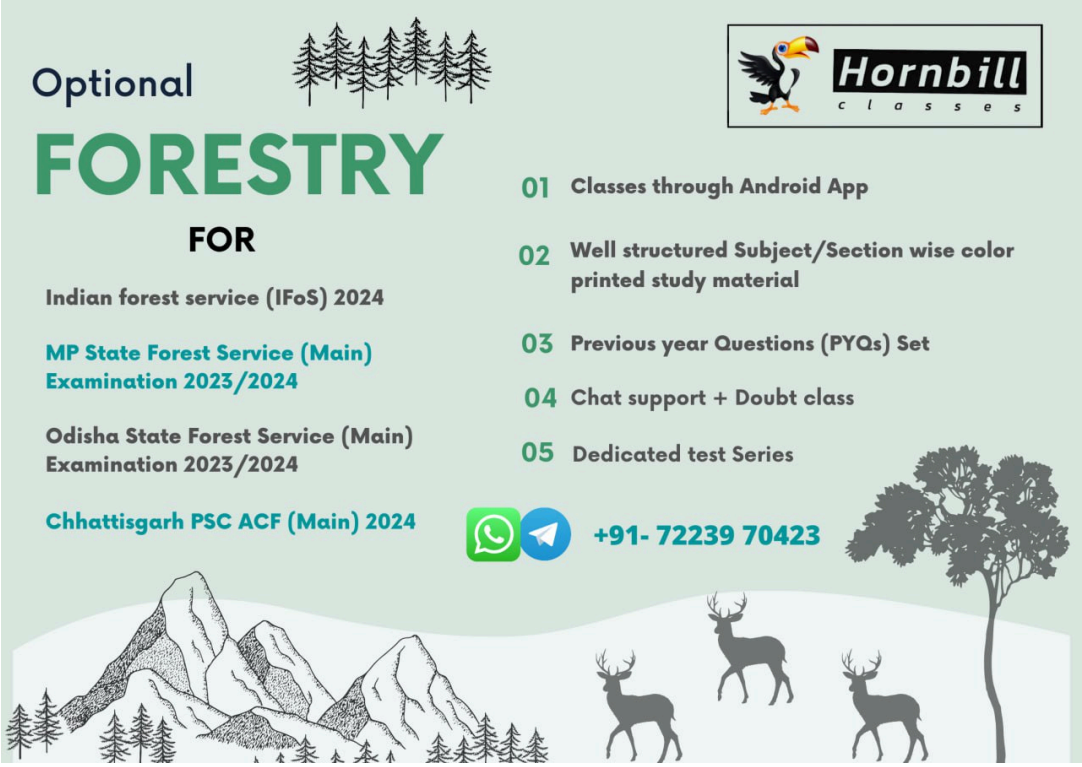

© Hornbill classes
07223970423 Hornbillclasses@gmail.com

Aman Patidar

Devesh Trivedi

Arvind Singh Thakur

Sachin Bhondele

Jaikishan Sharma

Gaurav Trivedi

Durgesh Jee Pandey

Sourabhn Kumar Chourasiya

Anita Surwayamshi

Rohit Sharma

Pooja Baghel

Ravikant SIrvaiya

Pushparaj Singh Sikarwar

Shubham Kulhade

Ashish Singh Sikarwar

Anupam Mishra

Amar Singh Bhadoriya

Somesh Sharma

Keshav Meena

Sunil Singh Jadon

Atul Kumar Patel

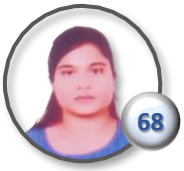

Meenakshi Suryawanshi

Neeraj Amb

Rohit Nagar

Salil Tamarkar

Deepak Bhadrasen

Kashiram Ahirwar

Jitendra Pandole

Abhijeet Sankla

Dharmendra Maida

Sachin Dodwe

61 Out of **90** Selections in MPPSC Forest Ranger (RFO) 2020

Gwalior

Adarsh Colony, Gole ka Mandir, Morar, Gwalior (M.P.) 474005

+91 **7223970423**

Congratulations

To all our successful candidates in

INDIAN FOREST SERVICE (IFOS) 2022

Anuradha Mishra

Ajay Gupta

Shobhit Joshi

Dinesh Jangid

Yash Dhoble

Udayan Subbudhi

Akarsh B.B.

Swarnadipta Rakshit

Senthilkumar V

Suchet Balkal

Vipin Verma

Tushar Shinde

Ashutosh Raj

Jeena Sri Jaswanth Chandra

Ashitosh Gupta

Basav Singh

Arpit

Kanhaiya Kumar

Upma Jain

Debasish Jina

Himanshu Babal

Yashasvi

Amrendra Singh

Akela Chaitanya Madhavudu

Ishang Lal

35 Out of **149** Selections in IFoS 2022

Recorded Online Classes

Can watch multiple time as per your convenance and available timeslot

Color Printed Study material

- Color printed Notes
- Generous use of visual Graphics
- PYQs of various states examinations

Test Series

Personalised Feed back and Suggestions to each candidates

Leader In Forest Services

A leading institutes in forest services covering IFoS, ACF, RFO, and ICFRE/ASRB/ICAR Exams